वि
९८२

श्री १०८ ईश्वर मठ
पुस्तकालय.
मुमुक्षु भवन, का. न.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

❀ श्री कृष्णाय नमः ❀

श्री पं० जयदेव कवि विरचितम्

श्री गीतगोविन्दम्

राधाविनोदकाव्यञ्च ।

पं० महाराज दीन दीक्षितेन

भाषा टीकया समलंकृतम् ।

प्रकाशक-फर्म-

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,

राजादरवाजा बनारस सिटी ।

अस्य सर्वेऽधिकाराः प्रकाशकाधीनाः ।

सन् १९५१.

पुस्तकालय

230

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

❀ श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः ❀

अथ गीतगोविन्दम्

श्री ... पुस्तकालय, ... भवन, ...

प्रथमः सर्गः १

॥ श्लोकः ॥

मेघैर्मेंदुरमंबरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमनक्त भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय ॥ इत्थं नंदनिदेशतश्चालितयोः प्रत्यध्वकुञ्जद्रुमं राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहः केलयः ॥

एक समय वृषभानुनन्दिनी राधाजी की कोई प्रिय सखी उनसे कहने लगी कि रात्रि के अन्त में महाराज श्रीकृष्णचन्द्र जी रमणियों के संग क्रीड़ा कौशल में सक्त हो रहे थे, बस इसी कारण वृन्दावन बिहारी से कुछ अपराध हो गया था इस अपराध के हेतु उनको अत्यन्त भय हो रहा है और माधवजी को आपकी ओर से यही चिन्ता व्याप्त हो रही है, राधा जो अब तुम दया करके श्यामसुन्दर जी को निज साथ में लेकर निकुञ्जवन में क्रीड़ा करो ! हे राधे ! क्या तुम कह सकती हो कि, इस चाँदनी रात्रि में समस्त जनों के सम्मुख निर्लज्जित होकर किस भाँति नन्दसुवन महाराज के निकुञ्ज में प्रवेश कर सकती हो तुमको इस बात का ख्याल करना चाहिये कि आप लोगों के मिलावट के हेतु आकाश में अभी से मेघच्छाया हो रही है चन्द्रमा दिखाई नहीं देता और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकुञ्ज भी तमालादि वृक्षों से परिपूर्ण हो रहा है। इसी कारण अत्यन्त अंधेरा है। हे राधे! अब तुमको कुछ भी सन्देह न करना चाहिये 'कुछ रुक कर' वृषभानु लाड़ली प्यारी सखी के समझाने से निकुञ्ज बन में प्राप्त होकर श्री कृष्णचन्द्र के वश में प्राप्त हो गई। यमुना नदी के तटपर राधा कृष्णजी की क्रीड़ा से समस्त बनों से यह बन अति उत्तम है ॥ १ ॥

वसन्ततिलकावृत्तम्।

वाग्देवताचरितचित्रितचित्तसद्मा पद्मावतीचरण-
चारणचक्रवर्ती ॥ श्रीवासुदेवरतिकेलिकथासमेतमेतं
करोति जयदेवकविः प्रबन्धम् ॥ २ ॥

श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द के चरित्र चित्रित हृदय और श्री वृषभानुनन्दिनी श्री राधाजी का स्मरणचिह्नित शरीर श्री जयदेव स्वामी कविराज, वृन्दावन विहारी की रासलीला वर्णन करने के कारण यह गीतगोविन्द नामक पुस्तक समस्त लोगों में प्रकाशित करते हैं ॥ २ ॥

द्रुतविलम्बितेन।

यदि हरिस्मरणे सरसं मनो यदि विलासकलासु
कुतूहलम् ॥ मधुरकोमलकान्तपदावलिं शृणु तदा
जयदेवसरस्वतीम् ॥ ३ ॥

हे भक्तजनों! यदि श्रीकृष्ण चन्द्रजी का ध्यान करके निज हृदय शीतल करना चाहो और वृन्दावन विहारी की रासलीला न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कानन—क्रीड़ा सुनने की इच्छा हो तो जयदेव कविराज विरचित गीत गोविन्द नामक पुस्तक का पाठ श्रवण करो ॥ ३ ॥

शार्दूलविक्रीडितेन ।

वाचःपल्लवयत्युमापतिधरः संदर्भशुद्धिं गिरां
जानीतेजयदेव एव शरणःश्लाघ्यो दुरूहद्रुतेः ॥
शृङ्गारोत्तरसत्प्रमेयरचनैराचार्यगोवर्द्धन
स्पर्द्धीकोऽपिनविश्रुतःश्रुतिधरो धोयीकविः क्ष्मापतिः ४

कवि उमापतिधरजी वाक्यविन्यास में श्रेष्ठ थे, शरण कवि दुरूह रचना में प्रसिद्ध थे, श्रीगोवर्धनाचार्य जी शृङ्गार रस पूर्ण कविता करने से मानको प्राप्त हुए थे, इसी भाँति धोयी कविराज को सुनने मात्र से ही याद हो जाता था किन्तु श्री जयदेव कविराज विशुद्ध रचना के लिये आदरणीय हैं ॥ ४ ॥

मालवरागे रूपकताले अष्टपदी ॥ १ ॥

प्रलयपयोधिजलेधृतवानसि वेदम् ॥
विहितवहित्रचरित्रमखेदम् ॥
केशवधृत मानशरार जय जगदीशहरे ॥ ध्रुव० ॥१॥

हे भगवन् ! प्रलय के समय आपने परिश्रम समुद्रतरण कारण नौका चेष्टित मीन रूप धारण करके वेदशास्त्र की रक्षा की थी । हे मीन रूप धारी भगवन् ! तुम्हारी जय हो, जय हो, जय हो, ॥१॥

क्षितिरति विपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे ॥
केशवधृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे ॥ २ ॥

हे भगवन् ! आपने निज पीठ पर अति विपुलतर पृथ्वी को धारण किया था, इसी कारण आपकी पृष्ठ पर व्रण (घाव) का चिह्न है, हे जगदीश ! आपकी जय हो जय हो जय हो ॥ २ ॥

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना ।
शशिनि कलंककलेव निमग्ना ॥
केशव धृतसूकर रूप जय जगदीश हरे ॥ ३ ॥

हे केशव ! आपने सूकर रूप धारण करके प्रलय के जल से पृथ्वी को निज दाँतों से उद्धार किया इसी कारण आपके दाँतों में प्राप्त पृथ्वी कलंक रेखा के सदृश शोभायमान हो रही है, हे जगदीश ! तुम्हारी जय हो जय हो जय हो ॥ ३ ॥

तव करकमलवरे नखमद्भुतशृङ्गम् ।
दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम् ॥
केशव धृत नरहरिरूप जय जगदीश हरे ॥ ४ ॥

हे केशव ! आपने नृसिंहरूप धारण कर करकमल वर श्रेष्ठ हस्तपद्म में आश्चर्य करने वाले अद्भुत शृङ्गरूप नखों को धारण किया और उन्हीं नखों से दैत्यराज हिरण्यकश्यप का विनाश किया था इस कारण हे भक्तवत्सल भगवन् ! तुम्हारी सदैव जय हो जय हो जय हो ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन ।
पदनखनीरजनितजनपावन ॥
केशव धृत वामनरूप जय जगदीश हरे ॥ ५ ॥

हे केशव ! आपने वामन रूप धारण करके बलि को छला था और आपही ने अपने चरणकमलों से निकले हुए जल से समस्त लोगों को पवित्र किया था, हे भक्तजन रक्षक ! तुम्हारी जय हो जय हो जय हो ॥ ५ ॥

क्षत्रियरुधिरमये जगतपगतपापं ।
स्नपयसि पयसि शमितभवतापम् ॥
केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे ॥ ६ ॥

हे परशुराम के रूपको धारण करने वाले भगवन् ! आपने परशुराम रूप धारण कर कठोरात्मा क्षत्रियों का विनाश करके उन्हीं के रुधिर से पृथ्वी को तृप्त किया था अतः हे भगवन् ! हे जगदीश ! आपकी जय हो जय हो जय हो ॥ ६ ॥

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीनयम् ।
दशमुखमौलिबलिं रमणीयम् ॥
केशव धृतरामशरीर जय जगदीश हरे ॥ ७ ॥

हे भगवन् ! आपने समस्त लोगों पर दया करने के हेतु रामरूप धारण करके सर्व देवताओं को प्रसन्न करने के लिये राक्षसराज रावण का संहार किया था, हे भगवन् ! तुम्हारी जय हो जय हो जय हो ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहसि वपुषि विषदे वसनं जलदाभम् ।
हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् ॥
केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे ॥ ८ ॥

हे भगवन् ! आपने हलधर रूप धारण करके मेघ सदृश नील वस्त्र धारण किया तब आपके शुभांग में वह नील वसन हलभीता यमुना स्वरूप शोभायमान हुआ था, हे जगदीश ! आपकी जय हो जय हो जय हो ॥ ८ ॥

निन्दसि यज्ञविधेरहहश्रुतिजातम् ।
सदयहृदयदर्शितपशुघातम् ॥
केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ॥ ९ ॥

हे भगवन् ! आपने ही जीवों पर दया करने के हेतु युद्धरूप धारण करके पृथ्वी में जितने पशु संहार समेत यज्ञ योजनादिक कर्म होते थे उनके निन्दाकारी आपही हुए, हे बुद्ध रूपधारी भगवन् ! आपकी जय हो जय हो जय हो ॥ ९ ॥

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम् ।
धूमकेतुमिव किमपि करालम् ॥
केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे ॥ १० ॥

हे भगवन् ! आपने दुष्ट म्लेच्छों के नाश हेतु धूमकेतु स्वरूप धारण किया था हे भगवन् ! आपकी जय हो जय हो जय हो ॥ १० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारम् ।
शृणु सुखदं शुभदं भवसारम् ॥
केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे ॥ ११ ॥

श्री जयदेव रचित यह स्तोत्र सब स्तोत्रों में श्रेष्ठ है । हे भक्तगण ! इसको भक्ति भाव युक्त प्रीति पूर्वक आनन्द से श्रवण करो । हे दश अवतारों को धारण करने वाले भक्तजन दयाल ! आपकी जय हो जय हो जय हो ॥ ११ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे प्रथमः प्रबन्धः ॥ १ ॥

वेदानुद्धरते जगन्ति वहते भूगोलमुद्बिभ्रते
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते ।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान् मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥ १

हे भगवन् ! आपने मीन रूप धारण कर प्रलय जल से वेद शास्त्र की रक्षा की, कूर्मरूप धारण कर पृथ्वी का पीठ पर वहन किया, वाराहरूप धारण कर निज दन्तों से पृथ्वी को पानी में से उठाया, नृसिंह रूप धारण करके हिरण्यकशिपु का नाश किया, वामन रूप धारण कर बलिराज का छलन किया, परशुराम रूप धारण करके क्षत्रियों का नाश किया राम रूप धारण करके रावण का हनन किया हलायुध रूप धारण करके यमुना को खींचा बुद्धरूप धारण करके अहिंसा धर्म को प्रकाशित किया और कल्कि रूप धारण करके महाभ्रष्ट म्लेक्ष लोगों का विनाश करते हैं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतः हे दश विधरूप धारण करने वाले ! आपके चरण कमलों में मेरा नित्य प्रति साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम है ॥ १ ॥

गुर्जरीरागे प्रतिमठताले अष्टपदी ॥ २ ॥

श्रितकमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए ।
कलितललितवनमाल जय जय देव हरे ध्रुव० ॥१॥

हे भगवन् ! आपने लक्ष्मी देवी के दोनों स्तन पकड़ रक्खे हैं, आप कर्णभूषण से शोभायमान हैं आपके कण्ठ में बनमाला अत्यन्त सुशोभित हो रही है, हे कमलाकान्त ! आपकी जय हो जय हो जय हो ॥ १ ॥

दिनमणिमण्डलमण्डन भवखण्डन ए ।
मुनिजनमानसहंस जय जय देव हरे ॥ २ ॥

हे नारायण ! सूर्यमण्डल के भूषणस्वरूप समस्त लोगों की गति और भक्ति मुक्ति देने वाले आपही सन्त भक्त जनों के हृदय में हंस सदृश विराजमान रहते हो । इससे हे भगवन् ! आपकी जय हो जय हो जय हो ॥ २ ॥

कालियविषधरगंजन जनरंजन ए ।
यदुकुलनलिनदिनेश जय जय देव हरे ॥ ३ ॥

हे भगवन् ! आपने कालिय नाग का दमन किया था और आप ही भक्तजनों की मनोकामना के परिपूर्ण करने वाले हैं । यदुवंशरूप कमल के प्रकाशक सूर्य स्वरूप आपही हैं । हे यदुकुल प्रकाशक ! आपकी जय हो जय हो जय हो ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मधुमुरनरकविनाशन गरुड़ासन ए ।
मुरकुलकेलिनिदान जय जय देव हरे ॥ ४ ॥

हे भगवन् ! आपने मधु दैत्य और मुर नामक असुर का विनाश किया था, नरकस्थित पापियों को आप मुक्ति पद देते हैं । गरुड़ जिनके वाहन हैं ऐ से हे गरुड़ासन भगवन् ! आपकी जय हो जय हो जय हो ॥ ४ ॥

अमलकमलदललोचन भवमोचन ए ।
त्रिभुवनभवननिधान जय जय देव हरे ॥ ५ ॥

हे भगवन् ! आपके नेत्रों से कमल निर्मित हैं, भवपाश से छुड़ाने वाले आप ही हैं, हे नारायण ! आपके असंख्य नाम हैं जिन नामों के उच्चारण मात्र से भक्ति प्रधान जीवों का हृदय शुद्ध होता है । हे भक्तिप्रद ! आपकी जय हो जय हो जय हो ॥ ५ ॥

जनकसुताकृतभूषण जितदूषण ए ।
समरसमितदशकंठ जय जय देव हरे ॥ ६ ॥

हे भगवन् ! आपने ही मिथिलेश नन्दिनी सीता का अङ्ग विभूषित किया था और आप ही ने निर्दय पापी दूषण और पाप रूप लंकापति रावण का विध्वंस किया, हे परम पुरुष ! आपकी जय हो जय हो जय हो ॥ ६ ॥

अभिनवजलधरसुन्दरधृतमन्दर ए ।
श्रीमुखचन्द्रचकोर जय जय देव हरे ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे भगवन्! आपका स्वरूप नूतन मेघ के तुल्य है और गोवर्धन पर्वत को कनिष्ठिका पर धारण करके व्रज पुरी की रक्षा आपने की। एतादृश लक्ष्मी के मुख रूप चन्द्रमा के चकोर रूप आपका नाम धन्य है, हे परमेश! आपकी जय हो जय हो जय हो ॥ ७ ॥

तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए।
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे ॥ ८ ॥

हे भगवन्! हम लोग आपके चरणकमल को साष्टाङ्ग रूप से दिन रात्रि प्रणाम करते हैं और आप ही हम लोगों का मंगल करने वाले हैं, हे दीनदयाल! आपकी जय हो जय हो जय हो ॥ ८ ॥

श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदम्।
मंगलमुज्ज्वलगीतं जय जय देव हरे ॥ ९ ॥

श्री कविवर जयदेव का यह उज्ज्वल गीत समस्त संसारी लोगों को मंगलप्रद है। अतः हे परब्रह्म! आपकी जय हो जय हो जय हो ॥ ९ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे द्वितीयः प्रबन्धः ॥ २ ॥

॥ श्लोकः ॥

पद्मापयोधरतटीपरिरम्भमग्न-
काश्मीरमुद्रितमुरो मधुसूदनस्य।
व्यक्तानुरागमिव खेलदनंगखेद-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वदाम्बुपूरमनुपूरयतु प्रियं वः ॥ १ ॥

शृङ्गार रस में लग्न राधाजी के स्तनद्वय में लगे हुए केसर से लिप्त हो गया है श्री कृष्णचन्द्र का हृदय तादृश केशर की शोभा युक्त वृन्दावन विहारी का हृदय आप लोगों का मङ्गल करे ॥१॥

वसन्ते वासन्तीकुसुमसुकुमारैरवयवै-
र्भ्रमंतीं कांतारे बहुविहितकृष्णानुसरणाम् ।
अमन्दं कंदर्पज्वरजनितचिंताकुलतया
चलद्राधां राधां सरसमिदमूचे सहचरी ॥ २ ॥

वसन्त ऋतुमें कामदेव के उग्र बाणसे पीड़ित श्रीकृष्णचन्द्रजी के मिलने के हेतु काम से पीड़ित राधा पुष्पों से परिपूर्ण खिलने वाले बन के मध्य में भ्रमण करती भई । उस समय श्रीवृषभानु-नन्दिनी राधाकी कोई प्रिय सहेली उदासीन राधा को देखकर कहने लगी ॥ २ ॥

वसन्त रागे रूपकताले अष्टपदी ।

ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे ।
मधुकरनिकरकरम्बितकोकिलकूजितकुंजकुटीरे ॥ १ ॥
विहरति हरिरिह सरसवसंते ।
नृत्यति युवतिजनेन समंसखि विरहिजनस्य दुरन्ते ॥
॥ ध्रुव० ॥

हे सखी ! यह मलयपवन लवंगपत्तों द्वारा निकुञ्जवन को आलिंगन कर रहा है, वही पवन यमुना के शीतल जल से मिलकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या ही सुन्दर वह रहा है, मधुमक्षिका और कोकिलादिक पक्षीगण अपनी अपनी मधुर ध्वनि से क्या ही वन को आनन्द दे रहे हैं और आप ही नारायण वसन्त ऋतु में नारियों के समूह युक्त निकुञ्ज वन में अति सुन्दर नृत्य कर रहे हैं। हे सखी! वसन्त ऋतु विरहीजनों को अत्यन्त दुःखदायी होता है ॥ १ ॥

उन्मदमदनमनोरथपथिकबधूजनजनितविलापे ।
अलिकुलसंकुलकुसुमसमूहनिराकुलबकुलकलापे ॥२॥

इस वसन्त ऋतु के आने से समस्त संसार में अत्यन्त आनन्द होता है जो नारायण संसार के कर्त्ता सब जीवों के हृदय कमल में सुख दुःख देनेवाले हैं और वही नारायण वसन्तसमय विरही जनों के कारण दुर्जन भी कहे गए हैं और पथिक बधू कामदेव से उन्मत्त होकर विलाप किया करती हैं और बकुल के फूलपर भ्रमर बैठता है अतः पुरुष अत्यन्त ही पीड़ित हो जाता है ॥ २ ॥

मृगमदसौरभरभसवशंवदनवदलमालतमाले ।
युवजन हृदयविदारणमनसिजनखरुचिकिंशुकजाले ३

तमाल वृक्षों की कस्तूरी तुल्य सुगन्धि से निकुञ्ज वन आनन्द को प्राप्त है जो निकुञ्ज पलास के पुष्पों से चारों ओर सुवर्ण सदृश होरहा है। यह देखने से अब यही प्रतीत होता है कि कामदेव से पीड़ित लोगों के हृदय विदीर्ण करने के लिये निज नखों को विस्तृत कर रहा है ॥ ३ ॥

मदनमहीपतिकनकदंडरुचिकेसरकुसुमविकाशे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलितशिलीमुखपाटलिपटलकृतस्मरतूणविलासे ।४॥

किसी किसी स्थानों पर नाग केसर फूल रही है उससे यह ज्ञात होता है कि कामदेव ने सिर पर सुवर्ण छत्र धारण किया है किसी २ स्थान में पाटली के फूल फूल रहे हैं और उनपर मत्त भ्रमरगण गुंजार करते हैं इससे यह प्रतीत होता है कि मदन का तूण शब्द कर रहा है ॥ ४ ॥

विगलितलज्जितजगदवलोकनतरुणारुणकृतहासे ।
विरहिनिकृन्तनकुन्तमुखाकृति केतकिदन्तुरिताशे॥ ५

हे सखी ! वसन्त ऋतु को देखकर समस्त संसार विलज्जित हो गया है इसी कारण यह समस्त पुष्प फूलने के व्याज से हँसी कर रहे हैं देखिये तो सही यह केतकी के पुष्प भल्लाकार मुख धारण किये विरहीजनों के हृदय को भली भाँति वेधित करते हैं ॥५॥

माधविकापरिमललालिते वनमालिकजातिसुगन्धौ ।
मुनिमनसामपिमोहनकारिणि तरुणाकारणबन्धौ॥ ६॥

यह वसन्त समय माधवी (चमेली) और नवमल्लिका के पुष्पों की सुगन्धि से अत्यन्त ललित है अहो ! हाय रे हाय ! जिससे जितेन्द्रिय सत्यवादी सन्त जन भी मोहित होजाते हैं यह बसन्त इस समय युवक युवतियों का अकारण बन्धु है ॥ ६ ॥

स्फुरदतिमुक्तलतापरिरम्भणमुकुलितपुलकितचूते ।
वृन्दावनविपिने परिसर परिगतयमुनाजलपूते ॥७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आम्र वृक्ष चमेली से आलिंगित होकर आनन्द और मुकुल से परिपूर्ण है। यही सब कौतुक देख करके यह मालूम होता है कि श्रीरतिनाथ यमुनाजी में स्नान करके अत्यन्त सुन्दर निकुञ्जन में प्रविष्ट हो गये हैं ॥ ७ ॥

श्रीजयदेवभणितमिदमुदयति हरिचरणस्मृतिसारम् ।
सरसवसन्तसमयवनवर्णनमनुगतमदनविकारम् ॥८॥

कविवर श्रीजयदेव स्वामी श्रीकृष्णचन्द्र के चरण कमल का अवलम्बन करके वृन्दावन के निकुञ्ज को वर्णन करता हूँ और उसीके साथ वसन्त समय में गोपीगणों के हृदय में जो विरह पीड़ा हुई थी सो वर्णन करता हूँ ॥ ८ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे तृतीयः प्रबन्धः ॥ ३ ॥

॥ श्लोकः ॥

दरविदलितमल्लीवल्लिचञ्चत्पराग
प्रकटितमदवासैर्वासयन्काननानि ।
इह हि दहतिचेतः केतकीगन्ध—
बन्धुःप्रसरदसमबाणप्राणवद्गन्धवाहः ॥१॥

हे राधे ! इस वसन्त के समय में कुञ्ज खिली हुई चमेली की लताओंमें उड़ती हुई पटवास चूर्णके समान पुरुषों की रजोंसे और केतकी के गन्ध से सुगन्धित वायु चलता हुआ कामदेव के बाणों से विरहीजनों के प्राण के समान चित्तको दग्ध करता है अर्थात् इस वसन्त समय में सुगन्धित वायु से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विरहीजनों का चित्त दग्ध हो रहा है, इस कारण हे वृषभानुनन्दिनी ! आपका गमन उचित है ॥ १ ॥

उन्मीलन्मधुगन्धलुब्धमधुपव्याधूतचूतांकुर-
क्रीडत्कोकिलकाकलीकलकलैरुद्गीर्णकर्णज्वराः
नीयन्ते पथिकैः कथं कथमपि ध्यानावधानक्षण-
प्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरमीवासराः ॥ २ ॥

हे सखी ! जितना ही आम्रमुकुल की गन्ध विस्तारित होता है उतनाही मधुगंध लुब्धा मक्षिकाएँ उनको कम्पायमान करती हैं वैसेही पवनसे झकोरको प्राप्त आम्र वृक्षों के सिरपर बैठकर कोकिलागण कहू २ शब्दसे विरही पथिकों के कानों में अति पीड़ा देती हैं । हाय ! ऐसे पथिक (मार्ग चलने वाले) आज अपनी प्राण-प्रिया स्त्री का चिंतवन करते हैं, और चिंताके कारण लव मात्र सुख को प्राप्त होकर पश्चात् अति क्लेशसे दिन व्यतीत करते हैं ।।२।।

अनेकनारीपरिरम्भसम्भ्रमस्फुरन्मनो-
हारिविलासलालसम् ।
मुरारिमारादुपदर्शयन्त्यसौ-
सखी समक्षं पुनराहराधिकाम् ॥ ३ ॥

अनेक स्त्रियोंके आलिंगनके आदरसे प्रगट है मनोहर विलास में लालसा जिनकी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रजी को दूर से प्रत्यक्ष दिखाती हुई सखी पुनः राधिकाजी के प्रति बोली ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामकलीरागेण रूपकताले अष्टपदी ।

चन्दनचर्चितनीलकलेवरपीतवसनवनमाली ।
केलिचलन्मणिकुण्डलमण्डितगण्डयुगस्मितशाली ॥
हरिरिहमुग्धवधूनिकरेविलासिनिविलसतिकेलिपरे ।
॥ ध्रुव० ॥

हे कृष्ण विलासिनि राधे ! श्रीकृष्णचन्द्रजी ने शुभ चन्दन निज नील अंगों में लेपन किया है और पीताम्बरने उन अंगों को सुशोभित किया, कृष्णजो ने अपने कंठमें सुन्दर वनमाला को धारण करके अत्यन्त ही सुशोभित कर रक्खा है, श्रीकृष्णजी के कपोल हँसी सहित कामदेव के कारण चंचलता से पूर्ण हुआ करते हैं और उनके कुण्डलों के हिलने से अत्यन्त ही शोभा हो रही है इस भाँति श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द इसी बन में व्रजबालाओं के साथ में तत्पर हैं ॥ १ ॥

पीनपयोधरभारभरेण हरिं परिरभ्य सरागम् ।
गोपवधूरनुगायति काचिदुदंचितपंचमरागम् ॥
हरिरिह ॥ २ ॥

हे राधे ! कोई २ उन्नतस्तनी गोपवधू प्रेम से उन्मत्त होकर कृष्णजो को आलिंगन करके पंचम राग में गीत गाती हैं ।

कापि विलासविलोलविलोचनखेलनजानित मनोजम् ।
ध्यायति मुग्धवधूरधिकं मधुसूदनवदनसरोजम् ॥
हरिरिह० ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीकृष्णजी के भ्रूभंग से मोहित होकर कोई २ गोपकामिनी उनके मदनविकसित मुखकमल को भ्रमर के सदृश चुम्बन करके बहुतहीं आनन्द को प्राप्त होती हैं ॥ ३ ॥

कापि कपोलतले मिलितालपितुं किमपि श्रुतिमूले ।
चारु चुचुम्ब नितम्बवती दयितं पुलकैरनुकूले ॥
हरिरिह० ॥ ४ ॥

किसी २ गोपांगनाने गुप्तवार्ताके कहने के बहाने श्री कृष्णजीके कर्ण समीप निज मुखको ले जाकर चातुरी पूर्ण कृष्ण के मुखकमल को आनन्द पूर्वक चुम्बन कर लिया ॥ ४ ॥

केलिकलाकुतुकेन च काचिदमुं यमुनाजलकूले ।
मञ्जुलबंजुलकुञ्जगतं विचकर्ष करेण दुकूले ॥
हरिरिह० ॥ ५ ॥

कोई गोपी शृंगार रसकी इच्छासे यमुनाजल के तट बेतों के कुञ्जमें टिके हुए श्रीकृष्णचन्द्रजी का हाथ से दुपट्टा पकड़ कर खींचतीं भईं अर्थात् श्रीकृष्णजी के संग शृंगार रस की क्रीड़ा के आनन्द को भोग रही हैं ॥ ५ ॥

करतलतालतरलवलयावलिकलितकलस्वनवंशे ।
रासरसे सह नृत्यपरा हरिणा युवतिःप्रशशंसे ॥
हरिरिह० ॥ ६ ॥

कोई रमणी करतल के साथ कंगन की ध्वनि भी मिलाती है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस ध्वनि को सुनकर श्रीकृष्णचन्द्रजी ने उस रमणी की अत्यन्त प्रशंसा की है ॥ ६ ॥

श्लिष्यति कामपि चुम्बति कामपि २ रमयति रामाम् ।
पश्यति सस्मितचारु परामपरामनुगच्छति वामाम् ॥
हरिरिह० ॥ ७ ॥

श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज किसी गोपीका आलिंगन करते हैं किसीके मुख का चुम्बन करते हैं किसी गोपी के संग काम क्रीड़ा करते हैं और किसी को हँसकर मनोहर दृष्टि से देखते हैं और किसी २ गोपी के सङ्ग पीछे चलते भी हैं ॥ ७ ॥

श्रीजयदेवकवेरिदमद्भुतकेशवकलितरहस्यम् ।
वृन्दावनविपिनं ललितं वितनोतुशुभानियशस्यम् ॥
हरिरिह० ॥ ८ ॥

अनेक रसों से परि पूर्ण केशव क्रीड़ा का रहस्य जो गोपियों को आनन्द प्रद, यश का कर्त्ता है, वह जयदेव कविकृत गीत भक्तों को कल्याण दाता होवे ॥ ८ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे चतुर्थः प्रबन्धः ॥ ४ ॥

॥ श्लोकः ॥

विश्वेषामनुरंजनेन जनयन्नानन्दमिन्दीवर-
श्रेणीश्यामलकोमलैरुपनयन्नंगैरनंगोत्सवम् ।
स्वच्छन्दंव्रजसुंदरीभिरभितःप्रत्यंगमालिङ्गितः शृङ्गारः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सखि मूर्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति ॥ १ ॥

हे राधे ! व्रजकामिनियों के आलिङ्गन से श्रीकृष्णचन्द्र आपही शृङ्गाररस स्वरूप होगये हैं और वसंत ऋतु में सर्वत्र व्रज नारियों की इच्छा पूर्ण करते हैं भगवान के नील वदन में काम भोग का अनुभव करके समस्त व्रज नारियाँ क्रीड़ा कौतुकमें मग्न हो गई हैं१

अद्योत्सङ्गवसद्भुजङ्गकवल क्लेशादिवेशाचलत्प्रालेय स्लवनेच्छयानुसरति श्रीखण्डशैलानिलाः ॥ किंचि-त्स्निग्धरसालमौलि मुकुलान्यालोक्यहर्षोदमादुन्मी-लन्ति कुहूःकुहूरितिकलोत्तालाः पिकानां गिरः ॥२॥

हे राधे ! आज वसन्त के समय निज स्थानस्थित सर्पों के ग्रास भयसे यह मलयाचल का पवन हिम में डुबाने की इच्छा से हिमालय की ओर गमन करता है और कोयलों का मधुर २ शब्द आम्र के कोमल पत्तों को देखकर आनन्द पूर्वक ऊँचे स्वर से निकल रहा है ॥ २ ॥

रासोल्लासभरेण विभ्रममृतामाभीरवामभ्रुवामभ्यर्णप-रिरभ्य निर्भरमुरः प्रेमांधया राधया ॥ साधुत्वद्वदनं सुधामयमिति व्याहृत्य गीतस्तुतिर्व्याजादुद्भट चुम्बितः स्मितमनोहारी हरिः पातु वः ॥ ३ ॥

यह सुनकर राधाजी के प्रेम से व्याकुल होकर समस्त गोपियों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के सन्मुखमें ही श्रीकृष्णचन्द्रसे आलिङ्गन प्रदान किया और श्री कृष्णजी से कहा कि हे भगवान ! आपका मुख कमल अमृत पूर्ण है यह कह कर राधाजी ने उनका वदन चुम्बन कर लिया है, इससे श्रीकृष्णचन्द्रजी का वही मुख कमल सर्व जीवोंका मङ्गल करे॥३॥

इति सामोददामोदरो नाम प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥

विहरति वने राधा साधारण प्रणये हरौ ।
विगलितनिजोत्कर्षादीर्ष्यावशेन गतान्यतः ॥
क्वचिदपि लताकुञ्जे गुञ्जन्मधुव्रतमण्डली ।
मुखरशिखरे लीना दीनाप्युवाच रहः सखीम् ॥ १ ॥

श्रीकृष्णचन्द्रजी के प्रेम में उन्मत्त होकर और स्त्रियों के साथ क्रीड़ाकौतुक में लग गये यह देख प्यारी राधाने अपने हृदय में हिरस करके मधुपानमत्त भ्रमर गणोंसे सेवित लता गृहके पीछे छिप कर निज सखी से अत्यन्त खेदयुक्त कहने लगी ।

गुर्जररागे रूपकताले अष्टपदी ॥ ५ ॥

संचरदधरसुधामधुरध्वनिमुखरितमोहनवंशम् ।
चलितदृगंचलचंचलमौलिकपोलविलोलवतंसम् ॥
रासे हरिमिह विहितविलासं स्मरति मनो मम कृत-
परिहासम् ॥ ध्रु० ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे सखि ! निकलती है अधरसुधा जिसमें ऐसी मधुर ध्वनिसे बजाई है मनमोहन ने वंशी और फेंकें हैं काम कटाक्ष जिन्होंके चंचल हैं मस्तक जिनका और कपोल पर चंचल हैं कुण्डल जिनके इस वृन्दावन में रास विलास किया है जिन्होंने और मेरे सङ्ग की है हँसी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रजीका मेरा मन बारम्बार स्मरण करता है॥१॥

चन्द्रकचारुमयूरशिखण्डकमण्डलवलयितकेशम् ।
प्रचुरपुरंदरधनुरनुरञ्जितमेदुरमुदिरसुवेशम् ॥
॥ रासे० ॥ २ ॥

हरिजी के सकल केश कंकण के भाँति ऐंठे होकर मयूर पुच्छ के सदृश शोभायमान हो रहे हैं और उनकी कान्ति इन्द्र धनुष से अधिक शोभित मेघों के तुल्य है ॥ २ ॥

गोपकदम्बनितम्बवतीमुखचुम्बनलम्बितलोभम् ।
बन्धुजीवमधुराधरपल्लवमुल्लसितस्मितशोभम् ॥
॥ रासे० ॥ ३ ॥

हे सखि ! जिन हरिजीने नितम्बवती गोपबालाओं के मुख कमलों का चुम्बन करने के लिये लोभ किया है और जिन हरिके बन्धुजीवके समान अधरपल्लव, मधुर हैं प्रकाश की हँसीसे जिनकी शोभा है ऐसे श्रीकृष्ण को मेरा मन स्मरण करता है ॥ ३ ॥

विपुल पुलकभुजपल्लववलयितवल्लवयुवतिसहस्रम् ।
करचरणोरसिमणिगणभूषणकिरणविभिन्नतमिस्रम् ॥
रासे० ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन हरिने नवीन पल्लव स्वरूप कोमल हाथों से हजारों गोपकामिनियों के कण्ठको लपेट लिया है जिन हरिके हाथों और पदों के रत्नों से समस्त अन्धकार नाश होता है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र जीको मेरा मन स्मरण करता है ॥ ४ ॥

जलदपटलचलदिन्दुविनिन्दकचंदनतिलकललाटम् ।
पीनपयोधरपरिसरमर्दननिर्दयहृदयकपाटम् ॥
॥ रासे० ॥ ५ ॥

हे सखि ! जिनके ललाटमें लगा चन्दन मेघों के समूह में चलायमान चन्द्रमा की निन्दा करता है और जिन गोपियों के समान भारी हृदय में पुष्ट स्तनों के प्रान्त भाग के मलनेमें जिनको दया नहीं है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रजीको मेरा मन स्मरण करता है ॥ ५ ॥

मणिमयमकरमनोहरकुण्डलमण्डितगण्डमुदारम् ।
पीतवसनमनुगतमुनिमनुजसुरासुरवरपरिवारम् ॥
॥ रासे० ॥ ६ ॥

हे सखि ! जिन हरिके गण्डदेश में अत्यन्त सुन्दर कुण्डलाभूषण शोभायमान हो रहे हैं और जिनके चरण कमल की सेवा ऋषि, मनुष्य, देवता असुरादि सभी करते हैं जिन हरिने अपने सुन्दर पीताम्बर से अद्भुत कोमल अङ्गों को शोभित किया है ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र को मेरा मन स्मरण करता है ॥ ६ ॥

विशदकदम्बतले मिलितं कलिकलुषभयं शमयंतम् ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मामपि किमपि तरंग दनंगदृशा मनसा रमयंतम् ॥
रासे० ॥ ७ ॥

अत्यन्त सुन्दर कदम्ब के तले मिले और कलिकाल में उत्पन्न हुए पाप भय के नाशक और प्रतीत होता है कि कामदेव का योग है जिसमें ऐसी दृष्टि और हृदय से मेरे संग भी किंचित रमण करनेहारे श्रीकृष्णचन्द्र को हे सखि ! मेरा मन स्मरण करता है ॥७॥

श्रीजयदेवभणितमतिसुन्दरमोहनमधुरिपुरूपम् ।
हरिचरणंस्मरणं प्रति संप्रति पुण्यवतामनुरूपम् ॥
रासे० ॥ ८ ॥

श्री जयदेव स्वामी रचित श्री कृष्णचन्द्र के रूपका वर्णन इस कलिकाल में भक्तों को हरिचरणों के स्मरण के लिये योग्य होवे ॥८॥

इति श्रीगीतगोविन्दे पंचमः प्रबन्धः ॥ ५ ॥

गणयति गुणग्रामं भ्रामं भ्रमादपि नेहते वहति च परितोषं दोषं विमुञ्चति दूरतः ॥ युवतिषु चलत् तृष्णे कृष्णे विहारिणि मां विना पुनरपि मनोवामं कामं करोति किम् ॥ १ ॥

श्रीवृषभानु नन्दिनी राधाके यह वचन सुनकर सखियाँ राधाजी से कहने लगीं, हे राधे ! श्रीकृष्णजी जब तुम्हें छोड़ अन्य वृजनारियों के साथ क्रीडा व्यवहार करते हैं तो तुम इतना उनमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्यों आसक्त हो ? यह सुन राधा ने कहा कि हे सखि जनों ! चाहे कृष्णजी मुझे छोड़ अन्य गोपी के साथ क्रीड़ा में आसक्त होवें परन्तु मेरा मन तो उनपर लग गया है । हे प्यारी सखियों ! मेरी क्या दशा होगी सो दयापूर्वक मुझसे कहो ! मैंने तो भूल करके कदापि उनके गुणों में कलंक नहीं लगाया और उनके ध्यान से मेरा मन प्रसन्न होता है इससे मैं इस विषय में क्या करूँ ॥ १ ॥

मालवरागे एकतालो ताले अष्टपदी ॥ ६ ॥

निभृतनिकुंजगृहं गतया निशि रहसि निलीय वसन्तम् ॥ चकितविलोकितसकलदिशारतिरभसभरेण हसन्तम् ॥ सखि हे केशिमथनमुदारम् ॥ रमय मया सह मदनमनोरथभावितया सविकारम् ॥ ध्रुव० ॥

हे सखि ! जिन श्रीकृष्ण ने केशी दैत्य को मारा था उन्हीं श्रीकृष्णजी से मेरा मिलाप करा दीजिये ! हम दोनोंही काम के वशीभूत होकर उन्मत्त व्याकुल हो रहे हैं । हे सखि ! मैं भी इस निकुञ्ज वनमें आगई हूँ और उन्हीं की किलोलें क्रीड़ा व्यवहार पर मेरा चित्त लगा रहता है । इसी कारण आज यह कुञ्ज कुटीर मुझे देख देख कर उपहास कर रही है ॥ १ ॥

प्रथमसमागमलज्जितया पटु चाटुशतैरनुकूलम् । मृदुमधुरस्मितभाषितया शिथिलीकृतजघनदुकूलम् ॥ सखि हे० ॥ २ ॥

सखि ! प्रथम समागम की लज्जा से युक्त कोमल मधुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हँसी सहित भाषण है जिनका ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र अनेक भाँति मेरी विनती करेंगे । उस समय मेरी लज्जा दूर हो जावेगी तब श्रीकृष्ण आपही मेरे जघनदुकूलके पटको हटावेंगे । इससे हे सखि ! उन श्रीकृष्णजी के संग मेरी क्रीड़ा करादे ॥ २ ॥

किसलयशयननिवेशितया चिरमुरसि ममैव शयानम् ।
कृतपरिरम्भयाचुम्बनया परिरभ्य कृताधरपानम् ॥
सखि हे० ॥ ३ ॥

हे सखि ! मैं तो कुञ्जकुटीर के मध्य कोमल पत्तों की शय्यापर शयन करूँगी तब श्यामसुन्दर जी मेरे साथ विराजमान होकर मेरीही छाती पर चिरकाल तक शयन करते हुए आलिङ्गन करके किया है अधरामृत पान जिन्होंने ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र के संग मेरा रमण करादे ॥ ३ ॥

असलनिमीलितलोचनया पुलकावलिललितकपोलम् ।
श्रमजलसिक्तकलेवरया वरमदनमदादतिलोलम् ॥
सखि हे० ॥ ४ ॥

हे सखि ! इस प्रकार कामभोग के समय में दोनों ही नेत्र अधखुले हो रहेंगे और उनके दोनों ही कपोल अत्यन्त सुन्दर मूर्तिको धारण करेंगे ! मेरे वदन पर पसीने की झलक रही बूँदों को देखकर और गीले शरीर का स्पर्श करते हुए वह कृष्ण मुझे ही बार २ देखेंगे ऐसे श्रीकृष्णजी से हे सखि ! मेरी क्रीड़ा करादे ॥४॥

कोकिलकलरवकूजितया जितमनसिजतन्त्र विचारम् ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्लथकुसुमाकुलकुंतलया नखलिखित घनस्तनभारम् ॥
सखि हे० ॥ ५ ॥

हे सखि ! कोकिल के समान शब्द करने वाले पुष्पों से सुशोभित हैं बाल जिनके जिन्होंने मेरे साथ कामदेवका शस्त्र जीत लिया है और स्तनों के समूह पर नखों से किया है चिह्न जिन्होंने ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र जीकी क्रीड़ा करादे ॥ ५ ॥

चरणरणितमणिनूपुरया परिपूरितसुरतवितानम् ।
मुखरविशृंखलमेखलया सकचग्रहचुम्बनदानम् ॥
सखि हे० ॥ ६ ॥

हे सखि ! मलिजटित नूपुरों के शब्द कर रही और ढीली हो गई है मेखला [कमर बन्धन नारा] जिनकी ऐसा मेरे संग परिपूर्ण किया है रति क्रीड़ा का सुख जिन्होंने और मेरे केशों को पकड़ कर किया है मुखचुम्बन जिनने ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रजी की क्रीड़ा मेरे संग करादे ॥ ६ ॥

रतिसुखसमयरसालसयादरमुकुलितनयन सरोजम् ।
निःसहनिपतिततनुलतयामधुसूदनमुदितमनोजम् ॥
सखि हे० ॥ ७ ॥

हे सखि ! मधन संग्राम में आसक्त होने से मेरे अङ्गों में अत्यन्त शिथिलता अवश्य होवेगी और श्रीकृष्णजी के कमल नेत्र भी अनंगराग से निश्चय ही मुदित हो जावेंगे तब श्यामसुन्दर जी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी यह दशा देखकर मेरे पर अत्यन्त आसक्त होवेंगे ऐसे श्रीकृष्ण चन्द्रजी के संग मेरी रति क्रीड़ा अवश्यही करादे ॥ ७ ॥

श्रीजयदेव भणितमिदमतिशयमधुरिपुनिधुवनशीलम्।
सुखमुत्कण्ठितगोपबधूकथितं वितनोतु सलीलम् ॥
सखि हे० ॥ ८ ॥

यह जयदेव कविरचित श्रीकृष्ण चन्द्रजी का क्रीड़ा चरित्र प्रीतिपूर्वक राधा जी केद्वारा कही हुई शृङ्गार रसकी लीला है सोई यह गीत पढ़ने और सुनने वालों को इसलोक और परलोक विषय सुखद होवे ॥ ८ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे षष्ठः प्रबन्धः ।

॥ श्लोकः ॥

हस्तन्यस्तविलासवंशमनृजुभ्रूवल्लिमद्भल्लवी-
वृन्दोत्साहिदृगन्तवीक्षितमतिस्वेदार्द्रगण्डस्थलम् ॥
मामुद्वीक्ष्यविलज्जितस्मितसुधामुग्धाननं कानने ।
गोविन्दंव्रजसुन्दरीगणवृतं पश्यामिहृष्यामि च ॥ १ ॥

हे सखि ! जो हरि व्रजबालाओं से घिरे हुए हैं और समस्त बालायें छिपे हुए भाव से हरिकी ओर दृष्टिपात करती हैं मुझे देखकर निज कृष्णकी हँसी आती हैं और उसी हँसी के साथ ही कृष्ण की हँसी कंदर्परागसे परिपूर्ण हो जाती है जिनके कपोल पसीने से गीले हो रहे हैं इस भाँति बनमें केलि करते हुये कन्हैया को देखकर मेरे मनमें अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुरालोकस्तोकस्तबकनवकाशोकलतिकाविकाशः
कासारोपवनपवनोऽपि व्यथयति ॥ अतिभ्राम्यद्भृङ्गी
रणितरमणीयानमुकुलप्रसूतिश्चूतानां सखि शिखरि-
णीयं मुखयति ॥ २ ॥

हे सखि ! मैं अपने दुःख की कहानी क्या कहूँ यह अशोक की लता का फूलना, यह सरोवर का शीतल वायु, मुझे बड़ाही दुःख देता है मेरी प्यारी ! यह भ्रमर का राग आम्र की सुन्दर कलियाँ भी मुझे सुख नहीं देती हैं ॥ २ ॥

साकूतस्मितमाकुलाकुलगलद्धम्मिल्लमुल्लासित
भ्रूवल्लीकमलीकदर्शितभुजामूलार्द्धहस्तस्तनम् ॥
गोपीनां निभृतं निरीक्ष्य दयितां कश्चिच्चिरचिन्तय-
न्नंतर्मुग्धमनोहरा हरतु वः क्लेशं नवः केशवः ॥ ३ ॥

समस्त गोपियों के हाव भाव कटाक्ष युक्त मुखों को और कामवश से छूटी हुई वेणी, आनन्द पूर्वक भृकुटियों का कटाक्ष एवं स्तनोंको देखकर कन्हैयाजी ने सब कामिनियों में से राधाजी को श्रेष्ठ अनुमान करके निश्चय कर लिया तब कृष्णजी राधा के लिये एकान्त चित्त युक्त के लिये धैर्यवान् होगय वही राधाजीके प्रियतम श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द तुम्हैं मंगल दाता हों ॥ ३ ॥

इति अक्लेशकेशवो नाम द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

॥ श्लोकः ॥

कंसारिरपिसंसारवासना बंधशृंखलाम् ।
राधामाधाय हृदये तत्याज व्रजसुन्दरीः ॥ १ ॥

श्रीकृष्णचन्द्रजी संसारी वासना की बाँधने की शृंखला राधाजी को मनमें स्थित करके अन्य व्रज सुन्दरियों को त्याग कर देते भये ॥ १ ॥

इतस्ततस्तामनुसृत्य राधिकामनंगबाणव्रणखिन्नमानसः ॥ कृतानुतापः सकलिन्दनन्दिनीतटान्तकुञ्जे निषसाद माधवः ॥ २ ॥

कामदेव के बाणों से लग गये हैं घाव जिनके, दीन है मन जिनका, किया है अनेक भाँति से पश्चात्ताप जिन्होंने ऐसे वह कृष्ण इधर उधर वृषभानु नन्दिनी राधिका को ढूँढ़कर यमुना के किनारे समीपही कुञ्ज में आनन्द पूर्वक स्थित हुवे ॥ २ ॥

गुर्जररागे प्रतिमंठताले अष्टपदी ॥ ७ ॥

मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन ।
सापराधतया मयापि न वारिततिभयेन ॥
हरिहरि हतादरतया गता सो कुपितेव ।
ध्रुव० ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोपियों के वृन्द से घिरा हुआ मुझे देखकर राधाजी यहाँ से चली गईं और जाते समय मैंने मना भी नहीं किया जिससे नष्ट हुआ है मान जिसका ऐसी वह राधा क्रोप करके यहाँ से चली गई हैं हाय रे हाय ! यह मैंने बड़ाही अपराध किया ॥ १ ॥

किं करिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण ।
किं जनेन धनेन किं मम जीवितेन गृहेण ॥
॥ हरि० ॥ २ ॥

और वह राधा मेरे बहुत काल के विरह से तप्त विरह शांतिके लिये क्या उपाय करेगी और क्या कहैगी । मुझे इन अन्य गोपीजनों से क्या प्रयोजन है ! जिसके वियोग में मैंने सभी को त्याग दिया है इस समय धन से, घर से, सुख से मुझे कोई प्रयोजन नहीं है यह सब निष्फल है ॥ २ ॥

चिंतयामि तदाननं कुटिलभ्रुरोषभरेण ।
शोणपद्ममिवोपरि भ्रमताकुल भ्रमरेण ॥
हरि० ॥ ३ ॥

क्रोध की अधिकता से कुटिल हैं भृकुटियाँ जिसकी भ्रमरों युक्त रक्त कमल के समान मुख है जिस राधा का ऐसे मुखारविन्द का मैं स्मरण करता हूँ ॥ ३ ॥

तामहं हृदि संगतामनिशं भृशं रमयामि ।
किंवनेऽनुसरामि तामिह किं वृथा विलपामि ॥
हरि० ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह विलाप करते हुए हरिने कहा कि हे राधे ! तेरी मनोहर मूर्ति मेरे हृदय कमल में सदैव स्थित रहती है और उसी मूर्ति का मैं निरन्तर पूजन किया करता हूँ तो इस अखण्ड बन में तुझे ढूँढने से मुझे दुःख मिल रहा है उससे मेरा क्या काम है अर्थात् विलापादि करना भी व्यर्थ हो है ॥ ४ ॥

तन्वि खिन्नमसूयया हृदयं तवाकलयामि ।
तन्न वेद्मि कुतो गतासि न तेन तेऽनुनयामि ॥
हरिहरि० ॥ ५ ॥

हे तन्वि ! कोमलाङ्गि राधे ! मैं आपके हृदय को दुःखी जानता हूँ परन्तु यह नहीं जानता कि तू यहाँ से कहाँ को गई है इसीसे तुझे प्रसन्न करने में मैं असमर्थ हूँ ॥ ५ ॥

दृश्यसे पुरतो गतागतमेव मे विदधासि ।
किंपुरेव ससंभ्रमं परिरंभणं न ददासि ॥
हरिरिह० ॥ ६ ॥

हे वृषभानुनन्दिनी ! यदि तू मुझे देखती हो तो पहिले की भाँति मेरे पास आकर वेगसे क्यों नहीं आलिङ्गन करती है। विरही पुरुष सर्वत्र निज प्रिया को ही देखा करते हैं ॥ ६ ॥

क्षम्यतामपरं कदापि तवेदृशं न करोमि ।
देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि ॥
हरिरिह० ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे सुन्दरी ! मेरे किये हुए पिछले अपराधों को क्षमा करो अब मुझसे आपका कोई अपराध न होगा मुझे दर्शन दो मैं कामसे पीड़ित हूँ ॥ ७ ॥

वर्णितं जयदेवकेन हरेरिदं प्रणतेन ।
तिन्दुबिल्वसमुद्रसंभवरोहिणीरमणेन ॥
हरिरिह० ॥ ८ ॥

समुद्ररूप तिंदुविल्वग्रामनिवासी भक्तिप्रधान जयदेव स्वामी रचित श्रीकृष्णजी के यह परितापका वर्णन सदैव भक्तजनों को तृप्ति करने वाला है ॥ ८ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे सप्तमः प्रबन्धः ॥ ७ ॥

॥ श्लोकः ॥

भ्रूपल्लवो धनुरपांगतरंगितानि
बाणागुणः श्रवणपालिरिति स्मरेण ।
तस्यामनंगजयजंगम देवताया-
मस्त्राणि निर्जितजगन्ति किमर्पितानि॥ १॥

इतने पर भी आपको ख्याल नहीं है कि अपने समस्त अस्त्र राधाजीने तुझे ही जीतकर ले लिया है तुम देखो राधाजी की भौंह तुम्हारा धनुष है उसकी चञ्चल चतुर दृष्टि तुम्हारे बाण हैं उसके कर्ण का अन्त तुम्हारे धनुष की प्रत्यञ्चा है। हे कामदेव ! अब तुम्हारे यह सब पदार्थ और आपका तेज कहाँ है ? कहाँ हैं ? हाँ,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सच है आपने विचार करके अपने समस्त शस्त्र जगत् के विजय करने के लिये राजधानी को अर्पित कर दिया ॥ २ ॥

हृदि विसलता हारो नायं भुजंगमनायकः
कुवलयदलश्रेणी कंठे न सा गरलद्युतिः ।
मलयजरजो नेदं भस्म प्रियारहिते मयि
प्रहर न हरभ्रांत्यानंग क्रुधा किमु धावसि ॥ २ ॥

श्रीकृष्णजी कामदेवको दुःखदायी देखकर फिर कहने लगे कि हे अनंगे कामदेव ! तुम मुझे प्रिया प्यारी से वियोगी जान कर क्या भस्मधारी महादेव पहिचान कर पीड़ा दे रहे हो ? परन्तु तू निश्चय जान कि मैं महादेव नहीं हूँ, मेरे गले में नीलपद्मों के हार को नागराज सर्प न जानो यह विषपान करनेवाला हार नहीं है और मेरे शरीर में जो सफेद चन्दन लगा है उसे भस्म न जान वह चन्दन ही है इससे मुझ निरपराधी पर प्रहार क्यों करते हो ॥२॥

पाणौ मा कुरु चूतसायकममुं मा चापमारोपय
क्रीडानिर्जितविश्वमूर्च्छितजनाघातेन किं पौरुषम् ॥
तस्या एव मृगीदृशो मनसिजप्रेंखत्कटाक्षानिलज्वा-
लाजर्जरितं मनागपि मनो नाद्यापि संधुक्षते ॥ ३ ॥

हे क्रीड़ा निर्जितशिव कामदेव ! इस आम्रके पुष्परूपी बाणको हाथमें लेकर धनुष पर मत चढ़ाओ क्योंकि मूर्छा को प्राप्त हुये मेरे सदृश जनकी पीड़ा से तेरा क्या पुरुषार्थ होगा कुछ भी नहीं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारण कि उसी मृगनयनी राधाजी के चलाये हुए कटाक्ष रूपी बाणों की ज्वाला से टुकड़े २ हुआ मेरा मन अब तक कुछ भी जीवन को नहीं धारण करता इसलिये असावधान पर प्रहार करना धर्म से विरुद्ध है ॥ ३ ॥

भ्रूचापे निहितः कटाक्षविशिखो निर्मातुमर्मव्यथां
श्यामात्मा कुटिलःकरोतु कबरीभारोऽपिमारोद्यमम् ॥
मोहं तावदयं च तन्वि तनुतां बिंबाधरो रागवान्
सद्वृत्तस्तनमंडलं तव कथं प्राणैर्मम क्रीडति ॥४॥

श्रीकृष्णचन्द्र निज मन में स्थित राधाजी के प्रति अपने दुःख वर्णन करते हैं । हे राधे भृकुटीरूप धनुष पर चढ़ा हुआ कटाक्षरूपी बाण मेरे मन को भेदन करै तो अच्छा । श्यामवर्ण कुटिल केशों का समूह भी कामदेव को बढ़ावै तो बढ़ावै कारण कि जो भीतर से और कुटिल हैं वे दूसरे को मारने का अवश्य ही यत्न करते हैं । यह राग पूर्ण रक्त वर्ण बिम्बाधर अधरोष्ठ मेरे राग का विस्तार करै तो करै कारण कि रागवाला मोह को उत्पन्न करता ही है परन्तु यह साधु गोल तेरे दोनों स्तनों के मंडल मेरे साथ क्यों कर क्रीड़ा करते हैं कारण कि जो साधु भाव युक्त सदाचारी होते हैं वे दूसरे के प्राणों के घातक कदापि नहीं होते ॥ ४ ॥

तानि स्पर्शसुखानि ते च तरलाः स्निग्धादृशोर्विभ्रमा
स्तद्वक्त्रांबुजसौरभं स च सुधास्यंदी गिरां वक्रिमा
सा बिंबाधरमाधुरीति विषयासंगेऽपि मन्मानसं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तस्यांलभसमाधि हंत विरहव्याधिः कथं वर्तते ॥५॥

हे राधे ! मैं तो कभी तुम्हारा स्पर्श व कभी तुम्हारे सुन्दर मुख का अनुभव और कभी तुम्हारे चंचल नेत्रों का दर्शन व कभी तुम्हारे मुखकमल की सुगंधि को सूँघना कभी तुम्हारे मधुर मुसक्यान युक्त प्रिय वचन को श्रवण करना कभी तुम्हारे बिंबाधर अधरोष्ठों की सुन्दरता का दर्शन किया ही करता हूँ इतने पर भी हे प्रिया प्यारी राधे ! किस कारण मेरी विरहरूपी पीड़ा की शान्ति नहीं होती यह बड़े आश्चर्य की बात है कि ध्यान से युक्त योगियों की तो व्याधि नाश हो जाती है और मेरी नहीं होती ॥ ५ ॥

तिर्यक्कंठविलोलमौलितरलोत्तंसस्य वंशोच्चरद्
गीतस्थानकृतावधानललनालक्ष्यैर्न संलक्षिताः ॥
संमुग्धं मधुसूदनस्य मधुरे राधामुखेंदौ मृदु स्पंदंकं-
दलिताश्रिरं दधतु वः क्षेमं कटाक्षोमयः ॥ ६ ॥

श्रीराधाजी के चन्द्रवत् मुखपर श्रीकृष्ण के कटाक्ष पात के हेतु कण्ठदेश ठंढा हुआ था । शिरके भूषण भी हिल गये थे । माधवजी की वंशीके गीतको सुनने में एकाग्रचित्त होनेके कारण गोपीने अनुभव नहीं किया था तादृश मधुसूदनकी कटाक्षरूपी तरंग श्रीजयदेवजी कहते हैं कि आप भक्तोंको बहुत कालतक कल्याणप्रद होवै ॥ ६ ॥

इति मुग्ध मधुसूदनो नाम तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ चतुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥

॥ श्लोकः ॥

यमुनातीरवानीरनिकुंज मंदमास्थितम् ।
प्राह प्रेमभरोद्भ्रान्तं माधव राधिका सखी ॥ १ ॥

श्रीयमुना नदी के तीर बेंतों के कुंज में राधाजी के प्रेमसे उन्मत्त चुपचाप बैठे हुए हरि के प्रति राधाजी की कोई प्रिय सहेली जाकर यह वचन बोली ॥ १ ॥

कर्नाटकरागे एक तालितालेन अष्टपदी ॥ ८ ॥

निन्दति चंदनमिंदुकिरणमनुविंदतिखेदमधीरम् ॥ व्यालनिलयमिलनेन गरलमिव कलयति मलयसमीरम् ॥ सा विरहे तव दीना ॥ माधव मनसिजविशिखभयादिव भावनयात्वयि लीना ध्रुव० ॥ १ ॥

हे नन्दनन्दन माधव ! आपके विरह से व्याकुल कामदेव के प्रहार से आपही के हृदय में प्रवेश किये अर्थात् आपही में लीन राधा चन्दन और चन्द्र किरण से भी हृदय शीतल न होने के कारण मलयागिरि की वायु को भी विष के समान मानती है अर्थात् उक्त पदार्थों से राधाजी के चित्त को शान्ति नहीं मिलती कारण कि वह राधा आपके वियोग जनित दुःख से दुःखित है॥१॥

अविरलनिपतितमदनशरादिव भवदवनायविशालम्।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वहृदयमर्माणि वर्म करोति सजलनलिनी दलजालम् ॥
सा विरहे० ॥ २ ॥

हे कृष्ण ! राधिका जो कामरूप बाण से अत्यन्त आतुर हो रही है उसकी रक्षार्थ आपकी मोहनी मूर्ति को हृदय में स्थित करके जलयुक्त कमल के पत्तों की भाँति राधाजीने अपने हृदय में ढाँक रक्खा है ॥ २ ॥

कुसुमविशिखशरतल्पमनल्पविलासकलाकमनीयम् ।
व्रतमिव तव परिरंभसुखाय करोति कुसुम शयनीयम् ॥
सा विरहे० ॥ ३ ॥

हे हरि ! वह राधा आपसे मिलने के हेतु कामदेव के बाणों के प्रहार से शरशय्यापर पड़ी है अर्थात् आप के लिये शरशय्या व्रत कर रही है ॥ ३ ॥

पुस्तकालय.

वहति च चलितविलोचनजलधरमाननकमलमुदारम् ।
विधुमिव विकट विधुंतुददंतदलनगलितामृतधारम् ॥
सा विरहे० ॥ ४ ॥

हे हरि ! जिस भाँति अमृत है अधर में जिसके ऐसे चन्द्रमा को पापी राहु ग्रसित करता है उसी भाँति राधाजी के मुख चन्द्र का जलरूपी राहुने ग्रसित करके भ्रष्ट कर दिया है यानी वह राधा आपके वियोगसे रोती है ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विलिखति रहसि कुरंगमदेन भवंतमसमशरभूतम् ।
प्रणमति मकरमधो विनिधाय करे च शरंनवचूतम् ॥
सा विरहे० ॥ ५ ॥

हे कृष्ण ! वह राधा एकान्त में स्थित होकर आपकी मूर्ति को कामदेवरूप लिखती है आपको मूर्ति के नीचे मकर को और आपके हाथ में आम्ररूपी कामदेव के बाण को लिखकर प्रणाम करती है ॥ ५ ॥

प्रतिपदमिदमपि निगदति माधव तव चरणे पतिताहम्
त्वयि विमुखे मयि सपदि सुधानिधिरपि तनुते तनुदाहम्
सा विरहे० ॥ ६ ॥

हे हरि ! नम्र होकर राधा यह कहती है कि हे माधव ! मैं तुम्हारे चरण कमल में पतित होकर प्रार्थना करती हूँ । तुम्हारे विमुख होने से आज सुधानिधि यह चन्द्रमा मेरे शरीर को दग्ध कर रहा है ॥ ६ ॥

ध्यानलयेन पुरः परिकल्प्य भवंतमतीवदुरापम् ।
विलपति हसति विषीदति रोदिति चंचति मुंचतितापम्॥
सा विरहे० ॥ ७ ॥

हे कुञ्जविहारी ! राधाजी किसी २ समय आपके स्वरूप का ध्यान करके और आपको मनोहर मूर्ति को प्रत्यक्ष की नाई देख-कर अत्यन्त विलाप करती है और कभी स्वप्नवत् आपको देखकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हँसी करती है किसी समय आपके वियोग जनित दुःख से अत्यन्त रोदन करती है और आपसे मिलने के लिये इस निकुञ्ज में इधर उधर बावली की भाँति घूमा करती है किसी समय आपके ध्यान में मग्न होकर स्वप्न के तुल्य आपकी नटवर मूर्ति के साथ विलाप कर आनन्द को भी प्राप्त होती है यानी इसी व्याज से चिन्तारूपी ताप को दूर करती है ॥ ७ ॥

श्रीजयदेवभणितमिदधिकं यदि मनसा नटनीयम् ।
हरिविरहाकुलवल्लवयुवतिसखीवचनं पठनीयम् ॥
सा विरहे० ॥ ८ ॥

हे प्यारे भक्तों ! यदि अपने अन्तःकरण को आनन्द से मग्न किया चाहो तो यह जयदेव रचित राधा वियोग के गीत का पाठ करो ॥ ८ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे अष्टमः प्रबन्धः ॥ ८ ॥

॥ श्लोकः ॥

आवासो विपिनायते प्रियसखी मालापिजालायते
तापोऽपि श्वासतन दावादहनज्वालाकलापायते ॥
सापि त्वद्विरहेण हंत हरिणीरूपायते हा कथं
कंदर्पोऽपि यमायते विरचयन् शार्दूलविक्रीडितम् ॥ १ ॥

हे माधव ! दुर्भाग्य वश जैसे हरिणी सिंह से डरकर जलते हुए वनमें प्रवेश कर जाल में बँध जाती है उसी भाँति राधाजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की इस समय आपके विरह से हरिणी सदृश उस राधा को निवास स्थान ज्वलित बन के तुल्य है, सब सखियाँ जल की भाँति हैं श्वांस ही शरीर को दहन कर रहा है और दुष्ट कामदेव हरिणी रूप राधा के पीछे शार्दूल रूपी यमराज होकर आपके वियोग से मारना चाहता है ॥ १ ॥

देशाख्यरागे एकतालीताले अष्टपदी ॥ १ ॥

स्तनविनिहितमपि हारमुदारम् ॥ सा मनुते कृशतनुरतिभारम् ॥ राधिका विरहे तव केशव माधव वामन विष्णो ॥ ध्रुव० ॥ १ ॥

हे केशव ! हे माधव ! हे वामन ! हे विष्णो ! आपके विरह से व्याकुल वह राधा कृश (दुर्बल) शरीर के स्तनों पर रक्खे हुए उत्तमोत्तम हार को भार के समान मानती है ॥ १ ॥

सरसमसृणमपि मलयजपंकम् ।
पश्यति विषमिव वपुषि सशंकम् ॥ राधिका० ॥ २ ॥

हे माधव ! आपके विरह से दुःखित वह राधा मलयागिरि के ओदे (गीले) चन्दन को विषवत् मानती है ॥ २ ॥

श्वसितपवनमनुपमपरिणाहम् ।
मदन दहनमिव वहति सदाहम् ॥ राधिका० ॥ ३ ॥

हे कृष्ण ! वह राधा अत्यन्त लम्बी श्वाँसों को लेती हुई वायु को कामदेव के अग्नि के समान धारण करती है अभिप्राय उसे वह श्वाँस भी जलाये देती है ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिशि दिशि किरति सजलकणजालम् ।
नयननलिनमिव विगलितनालम् ॥ राधिका० ॥४॥

हे माधव ! राधाजी के कमलनयन मृणाल-भ्रष्ट एवं नीरस्थित कमल की तरह दोनों नयन चारों ओर देख देख कर आँसुओं से पूर्ण हो रहे हैं ॥ ४ ॥

पुस्तकालय,

नयनविषयमपि किसलयतल्पम् ।
कलयति विहितहुताशंविकल्पम् ॥ राधिका० ॥५॥

हे कृष्ण ! वह राधा आपके वियोग से नेत्रों से देखती हुई भी कमल यानी पुष्पशय्या को सन्देह वश अग्नि के समान मानती है५

त्यजति न पाणितलेन कपोलम् ।
बालशशिनमिव सायमलोलम् ॥ राधिका० ॥६॥

हे कुञ्जविहारी ! वह राधा हथेली पर कपोल को रख कर बैठी है और उसका मुख सायंकाल के बाल चन्द्र की भांति मालूम होता है ६

हरिरिति हरिरिति जपति सकामम् ।
विरहविहितमरणेव निकामम् ॥ राधिका० ॥७॥

हे श्रीकृष्णचन्द्रजी ! वह राधा आपके वियोग से निज मरण ही निश्चय करके हरि हरि शब्द जपती है अभिप्राय यह कि निज अन्त समय जान भगवद् भजन करती है ॥ ७ ॥

श्रीजयदेवभणितमिति गीतम् ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुखयतु केशवप्रसादमुपनीतम् ॥ राधिका० ॥ ८ ॥

यह राधा के विरह का वर्णन जयदेव कवि द्वारा रचित भक्त-जनों को सुखद होवै ॥ ८ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे नवमः प्रबन्धः ।

॥ श्लोकः ॥

सा रोमाञ्चति सीत्करोति विलपत्युत्कंपते ताम्यति ।
ध्यायत्युद्भ्रमति प्रमीलति पतत्युद्याति मूर्च्छत्यपि ॥
एतावत्यतनुज्वरे वरतनुं जीवेन्न किन्ते रसात्स्वर्वैद्य-
प्रतिम प्रसीदसि यदि त्यक्तान्यथा हस्तकः ॥ १ ॥

हे हरि ! वह राधा कभी विरह रूप विकार से ज्ञानशून्य हो रही है, कभी शरीर में रोमाञ्च खड़े होने से काँपती है, कभी ग्लानि को प्राप्त होती है, कभी चिन्ता करती है, कभी अत्यन्त भ्रम को प्राप्त होती है, नेत्रों को मीच कर शय्यादि में पड़ रहती है, कभी कभी इधर-उधर भ्रमवश खड़ी होकर देखती है, कभी मूर्छा को भी प्राप्त होती है यह सब ज्वर के चिन्हों से युक्त राधा को है अश्विनी कुमार वैद्य के तुल्य यदि आप प्रसन्न होकर राधा को दर्शन दोगे तो क्या वह शृङ्गार रसके रससे जीवित न हो जावैगी अवश्य ही जीवित हो जावैगी । यदि वैद्यरूप आप न जावोगे तो छोड़ दिया गया है हाथ जिसका ऐसी वह राधा अवश्य मृत्यु को प्राप्त होवैगी ॥ १ ॥

स्मरातुरां दैवतवैद्यहृद्यत्वदंगसंगामृतमात्रसाध्याम् ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विमुक्तबाधां कुरुषे न राधामुपेन्द्रवज्रादपिदारुणोऽसि॥

हे अश्विनी कुमार सदृश वैद्य ! यदि आप अपने शरीर स्पर्श रूपी औषधि से, कामदेव पीड़ित राधा को अच्छा नहीं करोगे तो हम भली भांति मालूम कर लेवैंगी कि आपका हृदय इन्द्र के वज्र से भी अधिक कठोर है ॥ २ ॥

कंदर्पज्वरसंज्वराकुलतनोराश्चर्यमस्याश्चिरं
चेतश्चन्दनचन्द्रमा कमलिनीचिंतासुसंताम्यति ॥
किंतुत्तां तिवशेन शीतलतनु त्वामेकमेव प्रियं
ध्यायती रहसि स्थिता कथमपि क्षणं प्राणिति ॥ ३ ॥

हे कृष्ण ! कामदेव के ज्वर से पीड़ित है शरीर जिसका ऐसी राधा चन्दन और चन्द्रमादिक शीतल पदार्थों को एक तरफ रखकर केवल आपका ध्यान लगाये कि अब नहीं आये तो अब आवैंगे इसी आसरे पर स्वांस लेती हुई आपके स्मरणमात्र से जीवित है ३।

क्षणमपि विरह पुरा न सेहे
नयननिमीलितखिन्नया यया ते ।
श्वसिति कथमसौ रसालशाखां
चिरविरहेण विलोक्य पुष्पिताग्राम् ॥ ४ ॥

हे माधव ! जिस राधा ने आपके वियोग से क्षणमात्र भी नहीं सहन किया वह राधा नूतन आम्रकलिका को देखकर किसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाँति जीवन धारण किये है सो आप ही जानैं और इससे बढ़कर अब कौन आश्चर्य होगा ॥ ४ ॥

वृष्ट्याकुलगोकुलावनवशादुद्धृत्य गोवर्द्धनं
बिभ्रद्वल्लवसुन्दरीभिरधिकानंदाच्चिरं चुम्बितः ॥
कन्दर्पेण तदर्पिताधरतटीसिन्दूरमुद्राङ्कितो ॥
बाहुर्गोपतनोस्तनोतु भवतां श्रेयांसि कंसद्विषः ॥ ५ ॥

देवराज इन्द्र के कोपसे महावृष्टि के समय कनिष्ठिका अङ्गुली पर गोवर्धन पर्वत को धारण किया था और उसी हाथको व्रज सुन्दरियों ने बराबर चुम्बन के बहाने अपने मस्तक में लगे सिन्दूर से हाथ को सुशोभित किया था वह कंसके शत्रु गोप रूप श्रीकृष्ण-चन्द्र जी की मनोहर भुजा भक्तों का कल्याण विधान करे ॥५॥

इति स्निग्धमाधवो नाम चतुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चम सर्गः ॥ ५ ॥

॥ श्लोकः ॥

अहमिह निवसामि याहि
राधामनुनय मद्वचनेन चानयेथाः ॥
इति मधुरिपुणा सखी नियुक्ता
स्वनमिदमेत्य पुनर्जगाद राधाम् ॥ १ ॥

राधाजी की भेजी हुई सखी के प्रेमवर्द्धक वचन सुनकर श्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृष्णचन्द्रजी बोले कि मैं इस कुञ्ज में रहूँगा मेरी आज्ञा राधा से जी के कोप को शान्त करके मेरे पास लिवाला यह बचन सुनकर कृष्ण द्वारा भेजी हुई सखी राधा के प्रति यह बचन बोली ॥ १ ॥

देशवराडिरागेण रूपकतालेन अष्टपदी ॥ १० ॥

वहति मलयसमीरे मदनमुपनिधाय ॥
स्फुटति कुसुमनिकरे विरहिहृदयदलनाय ॥
तव विरहे बनमाली सखि सीदति ॥ ध्रु० ॥ १ ॥

हे राधाजी ! जिस समय कामदेव को सहायक बनाकर मलयाचल का पवन चलता है और वियोगियों के हृदय भेदन के लिये पुष्प फूलते हैं उस समय विरह में प्राप्त कामव्यथा पाकर वह श्रीकृष्ण अत्यन्त खेद को प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

दहति शिशिरमयूखे मरणमनुकरोति ।
पतति मदनविशिखे विकलतरोऽति ॥
तव विरहे० ॥ २ ॥

हे राधे ! जिस समय चन्द्रमा अपनो अग्निवत् किरणों से तपता हैं उस समय कृष्ण मृतप्राय हो जाते हैं और जिस समय कामदेव के बाणों का प्रहार होने लगता है तो बेहोश होकर रोदन करने लगते हैं । अभिप्राय चन्द्रमा पुष्प चन्दनादि तो सन्ताप कारक नहीं होते हैं परन्तु विरही को जितने पदार्थ सुखदायक हैं वह भी दुःखदायक होते हैं ॥ २ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ध्वनति मधुपसमूहे श्रवणमपिदधाति ।
मनसि वलितविरहे निशि निशि रुजमुपयाति ॥
तव विरहे० ॥ ३ ॥

हे राधे ! जिस समय भ्रमरगण मत्त होकर शब्द करते हैं उस समय श्रीकृष्णजी हाथ की अङ्गुली से कानों के छिद्र को बन्द करते हैं यानी आपके विरह से पीडित कृष्ण को भ्रमर का शब्द भी नहीं सहा जाता है ॥ ३ ॥

वसति विपिनविताने त्यजति ललितधाम ।
लुठति धरणिशयने बहु विलपति तव नाम ॥
तव विरहे० ॥ ४ ॥

हे राधे ! श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज आपके वियोग से सुन्दर गृह को त्याग निर्जन घोर वनमें पृथ्वी की शय्या पर आपका नाम जपते हुए बसते और सोते हैं ॥ ४ ॥

रणति पिकसमवाये प्रतिदिशमनुयाति ।
हसति मनुजनिचये निज विरहमपलपति नेति ॥
तव विरहे० ॥ ५ ॥

हे राधे ! जिस समय वनमें कोकिलगणों के शब्द होते हैं तेरा ही शब्द जानकर औचक से उठकर चारों दिशाओं में घूमने लगते हैं यह दशा देखकर शायद मनुष्यगण हँस देते हैं तो आपके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वियोग से दुःखी वह कृष्ण वियोग में को अत्यन्तही तिरस्कार करने लगते हैं ॥ ५ ॥

पुस्तकालय

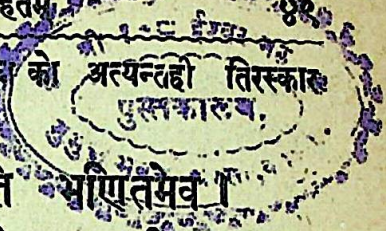

स्फुरति कलरवरावे स्मरति भणितमेव ।
तव रतिसुखविभवे बहु गणयति सुगुणमतीव ॥
तव विरहे० ॥ ६ ॥

जिस समय हे राधा ! मधुर शब्द करने वाले पक्षी गण शब्द करते हैं तो तेराही मृदुमधुर शब्द का स्मरण करते हैं और तेरी रति के सुखका अनुभव करके वाह वाह अत्यन्त श्रेष्ठ हैं यह कहकर उस सुखको बारम्बार गिनते हैं ॥ ६ ॥

त्वदभिधशुभदमासं वदति नरि शृणोति ।
तमपि जपति सरसे वरसेवरयुवतिषु न रतिमुपैति ॥
तव विरहे० ॥७॥

हे राधे ! जिस समय कोई पुरुष राधा वैशाखमास का उच्चारण करता है तो उस शब्द को बड़ेही प्रेम से सुनते हैं और उस राधा शब्द को जपते भी हैं इतने पर भी वह कृष्ण आपके वियोग दुःखसे पीड़ित होकर भी अन्य स्त्रियोंमें सुख को प्राप्त नहीं होतहैं ७

भणति कविजयदेव इति विरहिविलसितेन ।
मनसि रभसविभवे हरिरुदयतु सुकृतेन ॥
तव विरहे० ॥ ८ ॥

श्रीकृष्णचन्द्रजी के विरह वियोग का यह कथन जिसमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनन्द की ही अधिकता है वह जयदेव के मनमें पुण्य प्रभाव से हरि का उदय होवै अर्थात् श्री कृष्णचन्द्रजी प्रगट होवैं ॥ ८ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे दशमः प्रबन्धः ॥ १० ॥

॥ श्लोकः ॥

पूर्वं यत्र समं त्वया रतिपतेरासादिताः
सिद्धयस्तस्मिन्नेव निकुंजमन्मथमहातीर्थेपुनर्माधवः ॥
ध्यायंस्त्वामनिशं जपन्नति तवैवालापमंत्रावलिं
भूयस्त्वत्कुचकुंभनिर्भरपरीरंभामृतं वाञ्छति ॥ १ ॥

हे राधे ! प्रथम जिस कुञ्जमें तेरे साथ श्रीकृष्ण ने कामदेव के शृङ्गाररस की प्राप्ति की थी उसी कामदेव के महातीर्थ में ध्यान लगाये रातदिन आपका ही स्मरण कर रहे हैं तेरे ही वाक्यरूप मंत्रका जप करते हुये फिर भी तेरे स्तन कलशों का गाढ़ालिंगनरूप अमृत को बांछा कर रहे हैं जैसे कोई संसारी जन्म जरा मरणादि से दुःखी होकर मुक्ति की अभिलाषा से एकान्त निर्जन बनमें स्थित होकर ईश्वर का चिन्तवन करै इसी भाँति तेरे लिये श्रीकृष्णचन्द्रजी भी कर रहे हैं ॥ १ ॥

रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेषम् ।
न कुरु नितंबिनि गमनविलम्बनमनुसर तं हृदयेशम् ॥
श्रीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली ।
गोपीपीनपयोधरमर्दनचंचलकरयुगशाली ॥ ध्रु० ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे राधे ! सम्भोग सुख के देनेवाले संकेत स्थान में कन्दर्प-रूपी श्रीकृष्णजी गये हैं ऐसे कृष्ण के पास हे प्यारी ! तू भी चल देर मत कर । गोपियों के कठोर स्तनों के मर्दन करने में अति चपल हैं दोनों हाथ जिनके ऐसे श्रीकृष्ण शीतल मन्द सुगन्ध वायु युक्त यमुना तीर में बैठे हैं ॥ २ ॥

नामसमेतं कृतसङ्केतं वादयते मृदुवेणुम् ।
बहु मनुतेऽतनुसङ्गतपवनचलितमपि रेणुम् ॥
धीर स० ॥ २ ॥

हे राधे ! आपका नाम 'राधा' यह शब्द संकेत से मधुर स्वर-युक्त वंशी को बजाते हैं और तेरे शरीर से मिलकर चलने वाले पवन द्वारा उड़ाई हुई धूलि को भी प्यार करते हैं ॥ २ ॥

पतति पतत्रे विचलितपत्रे शंकितभवदुपयानम् ।
रचयति शयनं सचकितनयनं पश्यति तव पन्थानम् ॥
धीर स० ॥ ३ ॥

जिस समय वृक्षों से पक्षीगण उड़ते हैं और वृक्षों के पत्ते गिरते हैं उस समय तेरा आगमन जान इधर उधर देखने लगते हैं और पुष्पोंकी शय्या तैयार करते हैं ॥ ३ ॥

मुखरमधीरं त्यज मंजीरं रिपुमिव केलिषुलोलम् ।
चल सखिकुञ्जं सतिमिरपुंजं शीलय नीलनिचोलम् ॥
धीर स० ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे राधे ! वाचाल और मूर्ख क्रीड़ामें चंचल शब्द करने वाले नूपुरोंको शत्रुवत् त्याग करके नील वस्त्र धारण कर अन्धकार के समूह से युक्त कुञ्ज में चलो । नूपुरके त्याग करने से और नील वस्त्र धारण करनेसे अन्धकार में जाती हुई हे राधे ! तुझे कोई न देखेगा ॥ ४ ॥

उरसि मुरारेरुपहितहारे घन इव तरलबलाके ।
तडिदिवरीते रतिविपरीते राजसि सुकृतविपाके ॥
धीर स० ॥ ५ ॥

जैसे मेघ में बिजली शोभा पाती है उसी भाँति उस कृष्ण के साथ श्री कृष्ण की छाती के ऊपर विपरीत रीति से पुण्य के प्रभाव को भोगती हुई हे राधे ! तू शोभायमान होवैगी ॥ ५ ॥

विगलितवसनं परिहृतरशनं घटय जघनमपिधानम् ।
किसलयशयने पंकजनयने निधिमिव हर्षनिधानम् ॥
धीर स० ॥ ६ ॥

हे कमलनयन राधे ! पुष्पों की शय्यापर सुशोभित कृष्ण के साथ कांचनी खोलकर निकस गई है रसना (करधनी) जिसकी ऐसे रत्नभूत जघनको नग्न करके श्रीकृष्ण को प्रसन्न कर ॥ ६ ॥

हरिरभिमानी रजनिरिदानीं प्रियमपि याति विरामम् ।
करु मम वचनं सत्वररचनं पूरय मधुरिपुकामम् ॥
धीर स० ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे राधे ! रात थोड़ी ही रह गई है तेरे नहीं जानेसे कृष्ण अभिमानी रुष्ट होकर चले जावेंगे इस कारण मेरा कहना मान शीघ्रही चलकर श्रीकृष्णके मनोरथ को परिपूर्ण कर ॥ ७ ॥

श्रीजयदेवे कृतहरिसेवे भणति परमरमणीयम् ।
प्रमुदितहृदये हरिमतिसदये नमति सुकृतकमनीयम् ॥
धीरसमीरे यमुना० ॥ ८ ॥

हे भक्तजनों ! परम रमणीय इस उत्तर गीत को श्रीकृष्ण की सेवा में प्रसन्न होकर जिसने वर्णन किया है ऐसे श्री जयदेव कवि-वर अत्यन्त दयालु पुण्य तुल्य रमणीय और पुण्य के प्रभाव से ही देखने योग्य जो हरि उनको तुम नमस्कार करो ॥ ८ ॥

इति श्री गीतगोविन्दे एकादशः सर्ग प्रबन्धः ११ ॥

॥ श्लोकः ॥

विकिरति मुहुः श्वासान्नाशाः पुरो मुहुरीक्षते
प्रविशति मुहुः कुंजं गुंजन् मुहुर्बहु ताम्यति ।
रचयति मुहुः शय्यांपर्य्याकुलं मुहुरीक्षते मदनकदन-
क्लान्ते कान्ते प्रियस्तव वर्तते ॥ १ ॥

हे सुन्दरी ! तेरे वियोग से श्रीकृष्णजी बारम्बार लम्बी २ श्वांस छोड़ते हैं बारम्बार चारों ओर औंचक से दिशाओं को देखते हैं और बारम्बार केलिकुञ्ज में प्रवेश करते हैं । ऐ (आश्चर्य से) क्यों न आई किसीने मने किया, किसी के भयसे नहीं आई यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहकर ग्लानि को प्राप्त होते हैं, हाँ अवश्य आवेगी यह कहकर शय्या को रचते हैं शय्यापर न आई हुई तुझे देखकर व्याकुलता से कहते हैं कि मेरे अनुराग से अब आती ही होगी। इस भाँति कामदेव के बाण से पीड़ित श्रीकृष्ण को राधे! निज प्यारी जान कर अब तुझे उनके दुःखों की शान्ति करना उचित है ॥ १ ॥

त्वद्वाक्येन समंसमग्रमधुना तिग्मांशुरस्तंगतो
गोविन्दस्य मनोरथेन च समं प्राप्तं तमः सांद्रताम्।
कोकानां करुणस्वनेन सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना
तन्मुग्धे विफलं विलंबननसौ रम्योऽभिसारक्षणः ॥ २॥

हे राधे! तू महा अज्ञान है देख अब तेरे वाक्यों के साथही सूर्य अस्त हो गये और तू चुपके ही बैठी है वैसे ही श्रीकृष्णजी के मनोरथों सहित अन्धकार भी आ रहा है अभिप्राय यह कि ज्यों २ अन्धकार बढ़ता है त्यों २ कृष्ण की तेरे प्रति इच्छा बढ़ती जाती है और चक्रवाक के रोदन की भाँति मेरी प्रार्थना हो गई है इस पर भी तू चलती नहीं है। इतने पर भी मैं कहता हूँ कि हे राधे! और तुझे विलम्ब करना ठीक नहीं है तेरे चलने का सुन्दर समय हो रहा है ॥ २ ॥

आश्लेषादनु चुम्बनादनुनखोल्लेखादनुस्वांत
जात्प्रोद्बोधादनु सम्भ्रमादनुरतारम्भादनुप्रीतयोः ॥
अन्यार्थं गतयोर्भ्रमन्तिमतयोः सम्भाषणैर्जानतोर्दंपत्यो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

र्निशिको न को न तमसि व्रीडाविमिश्रो रसः ॥३॥

हे राधे ! अन्य पुरुष और अन्य नायिका के लिये गये हुए नायिका और नायकों का संकेतस्थान में एकत्र होने से स्पर्श, चुम्बन, नखच्छेद, कामदेव का उद्वेग, मैथुन का आरम्भ प्रीति भावना (एकता) यह क्रमसे होते हैं पुनः दोनों के बोलने से उस नायिका और उस नायक से एक प्रकार का लज्जा सहित रस होता है इस कारण हे राधे ! आप व्रीड़ा ही सहित शृङ्गार रस भोगने के लिये अवश्य चलो ॥ ३ ॥

सभयचकितं विन्यस्यन्ती दृशं तिमिरे पथि मुहुः स्थित्वा मंदं मदानि वितन्वतीम् । प्रीततरु कथमपि रहः प्राप्तमङ्गैरनंगतरङ्गिभिः सुमुखि सुभगः पश्यन् स त्वामुपैतु कृतार्थताम् ॥ ४ ॥

हे राधे ! अन्धकार युक्त अदृश्य मार्ग में डरती हुई चंचल दृष्टि से देखती हुई बारम्बार प्रत्येक वृक्ष के नीचे खड़ी होती हुई, मन्द २ गति से चलती हुई बड़े कष्ट से एकान्त में मिली हुई अङ्गों से कामके तरंग जैसे उठते हैं उसी भाँति तुझे देखकर श्रीकृष्णचन्द्र कृतार्थ होवें और अब विलम्ब मत कर शीघ्र ही चलकर कृष्ण को कृतार्थ करो ।

राधामुग्धमुखारविन्द मधुपस्त्रैलोक्यमौलिस्थली नेपथ्योचितनीलरत्नमवनीभारावतारक्षमः ॥ स्वच्छंदं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रजसुन्दरीजनमनस्तोषप्रदोषश्रियं कंसध्वंसनधूम्रकेतु
रवतु त्वां देवकीनन्दनः ॥ ५ ॥

श्रीजयदेवजी द्वारा कहा गया यह मंगलाचरण रूप वाक्य और रमणी राधा के मुखरूपी कमलके भ्रमर, पृथ्वी के भार रूप दैत्यों के बध करने में समर्थ, वृज सुन्दरियों के चित्त प्रसन्न करने में रात्रिरूप, कंस के नाश करने में धूमकेतु स्वरूप श्रीकृष्णचन्द्रजी आप भक्तों की रक्षा करें।

इति अभिसारिकावर्णने साकांक्ष पुण्डरीकाक्षो नाम पञ्चमः सर्गः।

अथ षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥

॥ आर्या ॥

अथ तां गन्तुमशक्तां चिरमनुरक्तां लतागृहेदृष्ट्वा
तच्चरितं गोविन्दे मनसिजमंदे सखी प्राह ॥ १ ॥

इसके अनन्तर सखी ने कृष्ण को प्रेमोन्मादिनी राधा को शक्तिहीन देखकर लतागृह में प्रविष्ट मदनसे पीड़ित कृष्ण के प्रति राधा की दशा को मधुर वचनों से कहने लगी।

गुणकरिरागे रुपकताले अष्टपदी ॥ १२ ॥

पश्यति दिशि २ रहसि भवन्तम् ।
त्वदधरमधुरमधूनि पिबन्तम् ॥
नाथ हरे जयनाथ हरे सीदति राधा वासगृहे ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे नाथ ! हे हरे ! आपकी जय हो यह राधा अभी रासकुञ्ज में अत्यन्त क्लेश में हैं और आपमें ही जगत की भावना करती हुई आपके अधरामृत का पान करके एकान्त में बैठी वह राधा चारों दिशाओं को देखती है ॥ १ ॥

त्वदभिसरणरभसेन वलंती ।
पतति पदानि कियन्ति चलन्ती ॥ नाथहरे० ॥ २ ॥

हे कृष्णचन्द्रजी ! आपके वियोग से दुःखी वह राधा आपसे मिलने के लिये दो एक पद रख २ कर चलती हुई गिर गिर पड़ती है अभिप्राय यह कि आप के वियोग से व्यथित राधा चलने मे असमर्थ हैं ॥ २ ॥

विहितविशदविसकिसलयवलया ।
जीवति परमिह तव रतिकलया ॥ नाथ हरे० ॥ ३ ॥

हे माधव ! आपके साथ काम भोग करने के लिये वह राधा मृणाल और नवीन पत्तों के कंगन हाथ में धारण करके आपके मिलने की आशा से जीवित है ॥ ३ ॥

मुहुरवलोकितमंडनलीला ।
मधुरिपुरहमिति भावनशीला ॥ नाथ हरे० ॥ ४ ॥

हे मुरारि ! अभी तो वह राधा आपके सदृश हर्ष का विन्यास करके अपने मनमें अपनेही को मुरारी की भावना से क्रीड़ाओं की चिन्ता करती हुई जीती है ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्वरितमुपैति न कथमभिसारम् ।
हरिरिति वदति सखीमनुवारम् ॥ नाथ हरे० ॥५॥

हे केशव ! वह राधा हरि आये इस बुद्धि से मेघ तुल्य अन्धकार को आलिंगन और चुम्बन करती हैं नीले अन्धकार को भी मदके मोह से श्रीकृष्णचन्द्र ही समझती हैं ॥ ५ ॥

श्लिष्यति चुम्बति जलधरकल्पम् ।
हरिरुपगत इति तिमिरमनल्पम् ॥ नाथ हरे० ॥६॥

हे नाथ ! वह राधा सखी के प्रति बारम्बार यह कहती रहती है कि मेरे मनको हरने वाले श्रीकृष्णचन्द्र जी इस संकेत स्थान में किस कारण नहीं आते ॥ ६ ॥

भवति विलम्बिन विगलितलज्जा ।
विलपति रोदिति वासकसज्जा ॥ नाथ हरे० ॥७॥

हे कृष्ण ! जब आप आने में विलम्ब करते हो तो वह राधा अपनी कुटी को सजाकर और लज्जाको त्याग करके विलाप करती हुई रोदन करती है ॥ ७ ॥

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितम् ।
रसिकजनं तनुतामतिमुदितम् ॥ नाथ हरे० ॥८॥

यह कविवर जयदेव रचित गीत रसिकजनों को अत्यन्त आनन्द का विस्तार करे ॥ ८ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे महाकाव्ये दशमः प्रबन्धः ॥ १० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुस्तकालय

॥ श्लोकः ॥

विपुलपुलकपालिःस्फीतसीत्कारमन्तर्ज-
नितजडिमकाकुव्याकुलं व्याहरन्ती ।
तव कितव विधायामन्दकन्दर्पचिन्तां
रसजलधिनिमग्नाध्यान लग्ना मृगाची ॥ १ ॥

हे कृष्ण ! दुरन्त कामदेव की पीड़ा से अत्यन्त व्याकुल चिन्ता युक्त वह राधा अभी आपके प्रेम स्वरूप समुद्र में मग्न हो रही है और आपही का सदैव ध्यान भी कर रही है एतादृश वह मृगाक्षी आपके शृंगार रसमें डूबी हुई है अभिप्राय यह कि ध्यान में स्तनों का स्पर्श, अधरपान और नीवी का मोचन करते हुए आपको देखकर छोड़ो २ नहीं २ मत २ इत्यादि निषेध के वचनों को कहती हुई आपमें ही तत्पर है ।

॥ आर्या ॥

अंगेष्वाभरणं करोति बहुशः पत्रेऽपिसंचारिणी
प्राप्तं त्वां परिशंकते वितनुते शय्यां चिरं ध्यायति ॥
इत्याकल्पविकल्पतल्परचनासंकल्प लीलाशत व्यास-
क्तापि विना त्वया वरतनुर्नैषा निशा नेष्यति ॥ २ ॥

हे माधव ! वह राधा कभी तो अपने अङ्गों से आभूषण को उतार देती है और कभी धारण करती है किसी समय किसी पक्षी का शब्द सुनकर आपके ही ख्याल से शय्या की रचना में लग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाती है और आपके ही ध्यान में मग्न आकल्प विकल्प रचन संकल्प रूपी सैकड़ों लीलायें किया करती हैं। हे नन्दनन्दन! आपके विरह के कारण अब वह राधा इस रात्रिको व्यतीत न करेगी अभिप्राय यह कि सूर्योदय के पहले ही मृत्यु को प्राप्त हो जायेगी इसी कारण अब आप को दया करके चलना चाहिये ॥ २ ॥

किं विश्राम्यसि कृष्णे भोगिभवने भांडीरभूमीरुहि भ्रातर्यासि न दृष्टिगोचरमतिः सानन्दनन्दास्पदम् ॥ राधायावचनं तदध्वगमुखान्नन्दान्तिके गोपतो गोविन्दस्य जयन्ति सायमतिथिप्राशस्त्यगर्भागिरः ॥ ३ ॥

हे पथिक! इस वट वृक्षके नीचे आप कदापि विश्राम न करो कारण उस स्थान में कृष्ण भोगी विश्राम किया करता है! यहाँ से कुछ ही दूर पर समस्त ऋद्धियों से युक्त नन्द के समीप छिपाये हुये श्रीगोविन्दजी की जो अतिथिकी उस समय में प्रशंसा है उनकी जय हो अभिप्राय यह कि जब अथिति ने कहा कि राधा ने मुझे भांडीर वट से नन्द के यहाँ टिकने को उत्तम स्थान बताया है और भांडीरवट में काले सर्प का वास बताया है उस समय उस कथन के अभिप्राय को छिपाने के लिये कृष्णने विचार किया कि पिता नन्द के सामने मेरा समस्त वृत्तान्त न खुल जावै इसलिये अतिथि की प्रशंसा करने लगे कि आइये महाराज! बड़ा अनुग्रह किया इस वाक्य रूपी कथन की जय हो जय हो जय हो।

इति वासकसज्जावर्णने सोत्कण्ठवैकुण्ठो नाम षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥

॥ श्लोकः ॥

अत्रान्तरे च कुलटा कुलवर्त्मपातसञ्जात
पावक इव स्फुटलाञ्छनश्रीः ॥
वृन्दावनांतरमदीय यदुंशुजालै
र्दिक्सुन्दरीवदनचन्दन बिन्दुरिन्दुः ॥ १ ॥

श्रीकृष्ण चन्द्रजी का अभिसारिका कुलटाओं (व्यभिचारिणी) द्वारा रोका जो संकेतमार्ग है इससे और पातक के सामने प्रगट है कलंक की श्री जिसका दिशारूपी जो सुन्दरी (नायिका) उनके मुखारविन्द तिलक तुल्य ऐसा चन्द्रमा वृन्द्रावनके मध्य प्रदेशको प्रकाशित किया। अभिप्राय यह कि चन्द्रोदय होगया॥१॥

आर्या

प्रसरति शशधरविम्बे विहितविलम्बे च माधवे विधुरा।
विरचितविविधविलापं सा परितापं चकारोच्चैः ॥२॥

जिस समय वह चन्द्रमा का विम्ब प्रकाशित होकर ऊपर चढ़ा और श्रीकृष्णचन्द्रजी को आते हुये न देखकर वह राधा अनेक प्रकार के विलाप करके अपने को अत्यन्त दुःखी मानने लगी ।२।

गोड़ मालवरागे प्रतिमण्ठताले अष्टपदी ॥ १३ ॥

कथितसमयेऽपि हरिरहह न ययौ वनम् ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मम विफलमेतदनुरूपमपि यौवनम् ॥
यामि हे कमिह शरणं सखीजनवचनवञ्चिता ॥
ध्रुव० ॥ १ ॥

हे मन सखिजनों के वचन से ठगी हुई मैं किसके शरण जाऊं क्या अब मैं जल की शरण लेलूँ अर्थात् डूब मरूँ। श्रीकृष्णजी अपने नियत किये हुये समय पर क्यों नहीं आये ? उनके समागम विना यह मेरा यौवन वृथा है श्रीकृष्ण ही के मिलने के लिये एक बन छोड़ दूसरे बनमें भ्रमण किया इतने पर भी निर्दयरूप श्रीकृष्ण ने मेरे कोमल हृदय को मदन बाणसे बींध दिया ॥ १ ॥

यदुनुगमनाय निशि गहनमपि शीलितम् ।
तेन मम हृदयमिदमसमशरकीलितम् ॥
यामि० ॥२॥

हाय ! जिनके आने की कामनाके लिये मैंने रात्रि में भयंकर बनको सेया, उन्हीं के द्वारा मेरा हृदय कामदेव से बींधा गया ॥२॥

मम मरणमेव वरमतिवितथकेतना ॥
किमिति विषहानि विरहानलमचेतना ॥
यामि० ॥३॥

हे सखी ! विरहाग्निकी अचेतन ज्वाला का मैं कहाँ तक सहन करूँगी इससे तो मरणही श्रेष्ठ है ॥ ३ ॥

मामहह विधुरयति मधुरमधुयामिनी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कापि हरिमनुभवतिकृतसुकृतकामिनी ॥
यामि० ॥४॥

अयँ ! (औचक से) अभी कौनसी कामिनी मोहन प्यारे को लेकर कामभोगादि के सुख को प्राप्त हो रही है क्योंकि इस सुन्दर चाँदनी रातमें श्रीकृष्णकी विरहाग्नि से जलती हुई क्या मैंही हत भाग्यवती हूँ ॥ ४ ॥

अहह कलयामि वलयादिमणिभूषणम् ॥
हरिविरहदवहनेन बहुदूषणम् ॥
यामि० ॥५॥

जो श्रीकृष्ण के विरह से मुझको निरन्तर जलना ही होवेगा तो मेरा वह मणिजड़ित भूषण किस काम में आवेगा अभिप्राय यह कि कृष्ण विना व्यर्थ ही है ॥ ५ ॥

कुसुमसुकुमारतनुशरलीलया ।
स्रगपि हृदि हन्ति मामतिविषमशीलया॥यामि०॥६॥

यह मेरे गले में प्राप्त फूलों का हार भी पुष्पवत् कोमलांगी मुझको मदनबाण से अधिक पीड़ा दे रहा है ॥ ६ ॥

अहमहह निवसामि न गणितवनवेतसा ।
स्मरति मधुसूदनो मामपि न चतसा ॥ यामि० ॥७॥

मैं श्रीकृष्णको वन में ढूँढ़ती हुई इस वेतस के वृक्षों को न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गिनकर घोर वनमें वास कर रही हूँ इतने पर भी वह मधुसूदन मुझे मनमें भी स्मरण नहीं करते यह अत्यन्त आश्चर्य है ॥ ७ ॥

हरिचरणशरणजयदेवकविभारती ।
वसतुहृदि युवतिरिव कोमलकलावती ॥यामि० ॥ ८ ॥

जैसे नायक अपने हृदयमें सुन्दरी कामिनी नायिका की सदैव चिन्ता करता है, इसी भाँति हरिभक्त श्री जयदेव कवि रचित यह राधा कृष्ण की रतिकथा समस्त भक्त लोगों के हृदय में सदैव विराजमान रहै ॥ ८ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे त्रयोदशः प्रबन्धः ।

॥ श्लोकः ॥

तत्किं कामपि कामिनीमभिसृतः किं वा कलाकेलिभिर्बद्धो बन्धुभिरन्धकारिणि वनोपान्ते किमु भ्राम्यति । कान्तः क्लान्तमना मनागपि पथि प्रस्थातुमेवाक्षमः संकेतीकृतमञ्जुवञ्जुललता कुञ्जेऽपि यन्नागतः ॥ १ ॥

हे मन ! क्या वे कृष्ण अन्य कामिनियों के प्रेममें मग्न होकर अपने कहे हुए समय में भी अभीतक इस निकुञ्जमें नहीं आये । क्या किसी मित्र (सखा) के साथ मिलकर मेरी हँसी कर रहे हैं ? क्या इस घोर अन्धकार युक्त वनमें भूलकर इधर उधर भ्रमण कर रहे हैं ? अथवा मेरे विरह से सन्तप्त होकर चलने में असमर्थ हुए होंगे ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथागतंमाधवमन्तरेण सखीमियंवीक्ष्य विषादमूकाम्
विशंकमाना रमितं कथापि जनार्दनं दृष्टवदेतदाह।२।

तदनन्तर कोई सखी राधाजी के विना ही कृष्णजीको अकेली देखकर मनमें विचार किया कि कृष्णऔर कामिनी के प्रेममें मग्न हैं इससे चिन्तायुक्त वचन कहने लगी ॥ २ ॥

वसन्तरागे एकतालीताले अष्टपदी ॥ ७ ॥

स्मरसमरोचितविरचितवेशा ॥ गलितकुसुमदल विलुलितकेशा ॥ कापि चपला मधुरिपुणा ॥ विलसति युवतिरधिकगुणा ॥ ध्रु० ॥ १ ॥

हे सखी ! अब मुझे यह मालूम होता है कि कामदेव से युद्ध के किये योग्य भूषणादिक को धारण किये केशचूड़ से टपक रहे हैं पुष्प जिसके एतादृश अत्यन्त चपल कोई युवती कामिनी श्रीकृष्ण के सङ्ग क्रीड़ा करती हैं ॥ १ ॥

हरिपरिरम्भणवलितविकारा ।
कुचकलशोपरि तरलितहारा ॥ कापि च० ॥ २ ॥

श्रीकृष्णके आलिंगनसे अलग अलग देख पड़ रहे हैं कामदेव के समस्त भाव और कलश तुल्य कुचों पर चञ्चल हार को धारण किये कोई युवती श्रीकृष्ण के संग क्रीड़ा करती है ॥ २ ॥

विचलदलकलिताननचन्द्रा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तदधरपानरभसकृततन्द्रा ॥ कापि च० ॥ ३ ॥

आज कोई चन्द्रमुखी युवती श्रीकृष्ण चन्द्र के अधरामृत को पान करके अत्यन्त आनन्दको प्राप्त और आनन्द सम्भोग में विचलित हो गई है अलकावली जिसकी ऐसी जंभुहाई लेती हुई कोई युवती श्रीकृष्णजी के सङ्ग क्रीड़ा करती है ॥ ३ ॥

चञ्चलकुण्डलदलितकपोला ।
मुखरितरशनजघनगतिलोला ॥ कापि च० ॥ ४ ॥

चञ्चल चपल कुण्डलों के हिलने से घिसे हैं कपोल जिसके और शब्द करती हुई रशना (करधनी) वाली जंघाओं के गमन से ऐसी कोई चञ्चल युवती श्रीकृष्णजी के संग क्रीड़ा करती है ४

दयितविलोकितलज्जितहसिता ।
बहुविधकूजितरतिरसरसिता ॥ कापि च० ॥ ५ ॥

श्रीकृष्णको हाव भाव कटाक्ष से देखकर लज्जावश हँसती हुई रतिरसरूपी समुद्रमें मग्न हुई कोई युवती श्रीकृष्ण के साथ क्रीड़ा करती है ॥ ५ ॥

विपुलपुलकपृथुवेपथुभंगा ।
श्वसितनिमीलितविकसदनंगा ॥ कापि च० ॥ ६ ॥

कामदेवकी कलासे पूर्ण है रोमांच जिसका अत्यन्त कंपायमान नेत्रों के मीचने से कामदेव का वीर्य प्राप्त हुआ है ऐसी कोई युवती श्रीकृष्णचन्द्र के संग क्रीड़ा करती है ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुस्तकालय

श्रमजलकणभरसुभगशरीरा ।
परिपतितोरसिरतिरणधीरा ॥ कापि च० ॥ ७ ॥

आनन्दरूपी सुखको लूटनेके परिश्रम से जलके कण (बूँद) की शोभा से अत्यन्त सुशोभित है शरीर जिसका और श्रीकृष्णकी छाती पर स्थित रतिरूपी संग्राममें चतुर कोई सखी श्रीकृष्णचन्द्र जीके संग क्रीड़ा करती है ॥ ७ ॥

श्रीजयदेवभणितमतिललितम् ।
कलिकलुषं शमयतु हरिरमितम् ॥ कापि चे० ॥ ८ ॥

यह कविवर जयदेवस्वामि रचित श्रीकृष्णचन्द्रजी के रमण का रहस्य इस कलियुगके श्रोता और वक्ताओं के घोर पापों को नष्टकरै ८

इति श्रीगीतगोविन्दे चतुर्दशः प्रबन्धः ।

॥ श्लोकः ॥

विरहपांडुमुरारि मुखाम्बुजद्युतिरयंतिरयन्नपि वेदनाम् ॥ विधुरतीव तनोति मनोभुवः सुहृदये हृदये मदनव्यथाम् ॥ १ ॥

हे सखि ! हायरे हाय ! कामदेव का प्रबोधनकारी यह निर्दयी चन्द्रमा समस्त जीवों के सन्ताप का नाशक होता है और मेरे लिये यह काम पीड़ा का दे रहा है कारण कि पाण्डुवर्ण चन्द्रमा को देखका पाण्डु वर्ण मुरारि मेरे हृदय देश में प्रगट होत हैं ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुर्जरागे एकतालीताले अष्टपदी ॥ १५ ॥

समुदितमदनेरमणीवदने चुम्बनवलिताधरे ॥
मृगमदतिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे ।
रमते यमुनापुलिनवने विजयी मुरारिरधुना ॥
ध्रु० ॥ १ ॥

हे सखि ! श्रीकृष्णचन्द्रजी कामोद्दीपन के लक्षणों से युक्त चुम्बनादि कामक्रीड़ा से सकुचित किसी बिम्बा (कुँदरू) के सदृश होंठोंवाली गोपी के मुख पर कस्तूरी का तिलक बनाते होंगे जैसे कोई चन्द्रमा में हरिण को लिखता होय ऐसे काम-क्रीड़ा में निपुण श्रीकृष्णचन्द्रजी यमुनाके किनारे किसी गोपीके संग रमण करते हैं१

घनचयरुचिरे रचयति चिकुरे तरलित तरुणाननें ।
कुरवककुसुमं चपलासुषमं रतिपतिमृगकानने ॥
रमते य० ॥ २ ॥

हे सखि ! श्रीकृष्णचन्द्रजी मेघों के समूह तुल्य मनोहर और चंचल किये हैं तरुण स्त्रियों के मुखको और कामदेव रूप मृग के तुल्य ऐसे केशों के समूह में चंचल है शोभा जिसकी ऐसे कुरुवक के पुष्पों को रचते हैं अभिप्राय पुष्पों से वेणी गूँथते हैं ॥ २ ॥

घटयति सुघने कुचयुगगगने मृगमदरुचिरूषिते ।
मणिसरममलंतारकपटलं नखपद शशिभूषिते ॥
रमतेय० ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे सखि ! श्रीकृष्णचन्द्रजी सुघन कठोर और कस्तूरी की कांति से युक्त चन्द्रमा के समान जो नखों के चिह्नों से सुशोभित आकाशवत् दोनों स्तनों में मोतियों के हार रूपी नक्षत्रों के समूह की रचना करते हैं । अभिप्राय यहाँ कस्तूरी से आकाश की, नखों के चिह्न से चन्द्रमा की और हाथ की मणियों से तारागणों की समानता दिखाई है अर्थात् गोपियों के स्तनों पर नख चिह्न और कस्तूरी लगाकर हीरा के हार पहिनाते हैं ॥ ३ ॥

जितविसशकले मृदुभुजयुगले करतलनलिनीदले ।
मरकतवलयं मधुकरनिचयं वितरति हिमशीतले ॥
रमते य० ॥ ४ ॥

हे सखि ! कमलनलिनी डंडी से भी अधिक शोभायमान कमल पुष्प सदृश हथेलीवाले, हिमके समान शीतल ऐसे हाथों में मानों श्रीकृष्णचन्द्रजी मरकत मणियों से जड़ित कंकण पहिनाते हैं जैसे कमल पुष्प पर भ्रमण बैठे होयँ ॥ ४ ॥

रतिगृहजघने विपुलापघने मनसिजकनकासने ।
मणिमयरशनं तोरणहसनं विकिरति कृतवासने ॥
रमते य० ॥ ५ ॥

हे सखी ! श्रीकृष्णचन्द्रजी अत्यन्त मोटा कामदेव के सुवर्ण सिंहासनरूप, वस्त्र से ढँका (आच्छादित) कामदेव के वासका स्थान जो शृङ्गार रस का घर रूप जघन उसपर मणिजड़ित कोंदनी (करधनी) को अर्पण करते हैं अर्थात् पहिनाते हैं जो तोरण (वन्दनवार) से अधिक सुन्दर है ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चरणकिसलये कमलानिलये नखमणिगणपूजिते।
बहिरपवरणं यावकभरणं जनयति हृदि योगिते॥
रमते य० ॥ ६ ॥

हे सखि! वह श्रीकृष्णचन्द्रजी लक्ष्मीके निवासस्थान और नख रूपी मणियों से सुशोभित किसी गोपी के पत्ते के समान कोमल चरणों को अपने हृदय पर स्थापना करके यावक (महावर) लगाते हैं मानो यह बाहर का आच्छादन ही है॥ ६।

रमयति सुदृशं यामपि सदृशं खल हलधरसोदरे।
किमफलमवसं चिरमिह विरसं वद सखि विटपोदरे॥
रमते य० ॥ ७ ॥

हे सखि! जब वह खल कृष्ण बलदेव का भाई यौवनादि रूपसे अपने तुल्य मृगनयनी किसी नायिका के क्रीड़ा करते हैं तो मैं इस लताकुञ्ज में शृंगाररस से शून्य और निष्प्रयोजन किस कारण चिरकालतक वास करूँ अभिप्राय यह कि मेरा यहाँ अब रहना वृथा ही है॥ ७॥

इह रसभणने कृतहरिगुणने मधुरिपुपदसेवके।
कलियुग चरितं न वसतु दुरितं कविनृपजयदेवके॥
रमते य० ॥ ८ ॥

शृङ्गाररस के कहनेवाले हरिगुणों के चिन्तवन करने वाले, श्रीकृष्णचन्द्र का सेवक जो मैं कविराज जयदेव उसके हृदय में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कलियुगके पापों का निवास न होवे अर्थात् यह श्रीकृष्ण चरित्र वणन करने से मेरे पाप नष्ट होवैं ॥ ८ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे पंचमः प्रबन्धः ।

॥ श्लोकः ॥

नायातः सखि निर्दयो यदि शठस्त्वं दूति किं दूयसे, स्वच्छन्दं बहुवल्लभः स रमते किं तत्र ते दूषणम् ॥ पश्याद्य प्रियसंगमाय दयितस्याकृष्य-माणं गुणै—रुत्कण्ठार्तिभरादिव स्फुटमिदं चेतः स्वयं यास्यति ॥ १ ॥

उक्त वार्ता को श्रीवृषभानु नन्दिनी राधा जी कह कर चित्त को खिन्न करके पुनः दूती से कहती हैं कि हे सखि ! हे दूति ! जो वह कृष्ण शठ वंचक (ठग) बहुत सी गोपियों से युक्त स्वच्छन्द (स्वाधीन) रमण करते हैं और तेरे बुलाने पर भी मेरे पास नहीं आते तो क्यों दुःखी होती है तेरा इसमें क्या दोष है ? आज तू देख श्रीकृष्ण के सुन्दरताई आदि गुणों से वशीभूत हुई प्रीति पूर्वक दुखों की अधिकता से बाहर निकलता हुआ यह मेरा चित्त स्वयं प्रिय संगम के लिये जायगा । अभिप्राय—जिसका मन मरण समय जिसके पास रहता है वह उसी के पास वहाँ ही जाता है इस कारण राधा का मन जन्म से आज तक श्रीकृष्ण में ही लगा रहा है अतः यह तो अवश्य ही श्रीकृष्ण से मिलैगी । इस कारण हे सखि ! यमलोक में श्रीकृष्ण के संगमार्थ मेरा मरण हो जायगा ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनिलतरलकुवलयनयनेन ॥ तपति न सा किसलय
शयनेन ॥ सखि या रमिता वनमालिना ॥ध्रु०॥१॥

हे प्यारी ! वायु से चंचल, कमलतुल्य नेत्रवाले श्रीवनमाली ने जिस गोपी के संग कामदेव की लीला से शृङ्गार रसका सुख भोगकर लीला की है उसको वह कोमल २ पत्तों की शय्या अवर्णनीय सुख देने वाली है वह शय्या मेरी शय्या सम उसे दुःखप्रद नहीं है जो मेरे सदृश अरमिता जिन्होंने रमण नहीं किया उन्हें तो कोमलसे अधिक कोमल पत्तों की शय्या सन्तप्त करती ही होगी ॥ १ ॥

विकसितसरसिजललितमुखेन ॥ स्फुटति न सा
मनसिजविशिखेन ॥ सखि या० ॥ २ ॥

हे सखि ! फूले हुए कमल सदृश मुखवाले श्रीकृष्ण के संग जिस व्रजाङ्गना [गोपी] ने रमण किया है वह कामदेव से पीड़ित होकर कामदेव के बाण से दो टुकड़े कभी न होती होगी और जो मेरे सदृश अरमणी हैं उनको तो वह कामदेव सहजही में व्यथित कर टुकड़े २ करता है ॥ २ ॥

अमृतमधुरमृदुतरवचनेन ।
ज्वलति न सा मलयजपवनेन ॥ सखि या० ॥३॥

हे सखि ! अमृत तुल्य मीठे बचन के बोलनेवाले श्रीकृष्णचन्द्र महाराज ने जिस गोपी का मनोरथ पूर्ण किया होगा उसके शरीर का ही यह मलयागिरिका पवन दहन न करता हो और जिसने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे सदृश रमण नहीं किया है उसको तो यह मलयानिल शीतल मंद सुगंध होने पर भी अवश्यही जलाता होगा ॥ ३ ॥

स्थलजलरुहरुचिकरचरणेन ।
लुठति न सा हिमकरकिरणेन ॥ सखि या० ॥ ४ ॥

हे सखि ! स्थल कमल की भाँति हाथ और चरणवाले श्रीकृष्णचन्द्र के साथ जिस गोपरमणी ने रमण किया है वह स्त्री चन्द्रमा के शीतल किरणों द्वारा कदापि तपायमान न होती होगी और जो स्त्री मेरे सदृश अरमणी हैं यानी जिन्होंने रमण नहीं किया उसके हृदय को हिमगर्भित होने पर भी चन्द्रमा की किरणों से वह अवश्य ही तपती होगी ॥ ४ ॥

सजलजलदसमुदयरुचिरेण ॥
दलति न सा हृदि विरहभरेण ॥ सखि या० ॥ ५ ॥

हे सखि ! जलसहित मेघ समूह के तुल्य मनोहर श्रीकृष्णचन्द्र जीके संग जिस गोपी ने रमण किया है उस गोपी का हृदय विरहादि क्लेशों से दो टुकड़े नहीं होता होगा और जिसने मेरे सदृश रमण नहीं किया उसका तो हृदय अवश्य ही दो टुकड़े हो जावेगा ५

कनकनिकषरुचिशुचिवसनेन ।
श्वसिति न सा परिजनहसनेन ॥ सखि या० ॥ ६ ॥

हे सखि ! जिस गोपीने आज पवित्र सुवर्ण वर्ण पीताम्बर धारी नारायण हरिके संग कामदेव से वशीभूत होकर रति प्रसंग किया है वह अपने मनमें अहंकार को प्राप्त होकर किसी की भी

CC-0. Mumukshu-Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओर नहीं देखती होगी और मेरे सदृश स्वजन के तिरस्कार से नहीं डरती होगी दूसरा अभिप्राय कि रमणी स्त्री सखियों के हास्य से दुःखसूचक श्वास नहीं लेती और जो मेरे सदृश हैं वह अवश्य ही दुःखरूपी श्वांस लेती हैं ॥ ६ ॥

सकलभुवनजनवरतरुणेन ।
वहति न सा रुजमतिकरुणेन ॥ सखि या० ॥ ७ ॥

हे सखि ! जिस कामिनी ने आज दिन अखिल भुवन के मोहन करनेवाले अर्थात् समस्त भुवनजनों श्रेष्ठ तरुण अत्यन्त दयाशील श्रीकृष्णचन्द्र के साथ रमण किया है वह कदापि नहीं दुःखको प्राप्त होती और जो मेरे सदृश अरमणी है वह तो अवश्य ही दुःख को पावेगी ॥ ७ ॥

श्रीजयदेवभणितवचनेन ।
प्रविशतु हरिरपि हृदयमनेन ॥ सखि या० ॥ ८ ॥

श्री जयदेवके कहे हुए इस वचन से भक्तोंके हृदय में हे हरि! प्रवेश करो । कि जिस हरिके कमलचरणों के प्रवेश से हृदयगत पाप नष्ट होवैं ॥ ८ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे षोडशः प्रबन्धः ।

श्लोकः-

मनोभवानंदनचंदनानिल, प्रसीद रे दक्षिण मुच वामताम् ॥ क्षणं जगत्प्राण विधाय माधवं पुरो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मम प्राणहरो भविष्यसि ॥ १ ॥

हे मदनसखा चंदनवायु ! आप दक्षिण देश से आ रहे हो, मेरे ऊपर प्रसन्न होवो ! यदि कामदेव के सहायक बनकर चंदन के वृक्षों में लिपटे हुये सर्पों के विषसे मेरे प्राण नाश करने की इच्छा करो तो एकवार माधव से मुझे मिलाकर पीछे मेरे प्राणों को नष्ट करो ॥ १ ॥

रिपुरिवसखी संवासोऽयं शिखीव हिमानिलो विषमिव सुधारश्मिर्यस्मिन् दुनोति मनोगमम् ॥ हृदयमदये तस्मिन्नेवं पुनर्वलते बलात् कुवलयदृशां वाम कामो निकामानिरंकुशः ॥ २ ॥

हे सखी ! यह सखियों के साथ का मेरा वास, शत्रुके तुल्य है और शीतल वायु अग्निके समान व चन्द्रमा विषके समान मेरे मनको पीड़ा देते हैं और इस भाँति दुःखी हुआ भी मेरा मन उस निर्दयी श्रीकृष्णजी के प्रति बलपूर्वक जाताही है, इससे प्रतीत होता है कि स्त्रियों के लिये कामदेव अति कुटिल निरंकुश है । अभिप्राय यह कि जैसे मस्त हाथी अंकुशके न रहने से मनमानो चाल चलता है उसी भाँति नवीन युवती स्त्रियों को कामदेव की मस्तता शिरपर चढ़ जाती है, तब वह अपनी मनमानी चाल चलती है, यहाँपर राधिकाके मनमाने श्रीकृष्णचन्द्रजी हैं अतः श्रीकृष्ण का अपराध होने पर ही श्रीकृष्णही की ओर राधिका का मन जाता है ॥२॥

बाधां विधेहि मलयानिल पंचबाण प्राणान्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गृहाण न गृहं पुनराश्रयिष्ये ॥ किं ते कृतान्तभगिनि क्षमया तरंगै रंगानि सिंच मम शाम्यतु देहदाहः ॥३॥

श्रीकृष्ण के वियोग से पीड़ित राधाजी विलाप करती हुई क्या कहती हैं कि हे मलयपवन ! मलयागिरि सम्बन्धी चन्दन वृक्षोंकी वायु ! तू हमको जितनी चाहै उतनी पीड़ा दे और हे कामदेव ! तू भी अपने पाँच बाणों से मेरे पाँचों प्राणोंके नाशके लिये समर्थ है, जो चाहो सो तुम भी करो । हे कृतान्त भगिनि ! यमराजकी बहिन यमुने ! तू मेरे पर क्यों क्षमा धारण किये है कारण कि तू यमराज की बहिन है । अपनी तरंगोंसे मेरे शरीर का सिञ्चनकर यानी अब तुझे मेरे लिये अपने भाई यमराज के बुलाने का कोई प्रयोजन नहीं है । तेरे सिञ्चन से ही सदैव के लिये मेरे संताप दूर हो जावेंगे । अभिप्राय यह कि हे यमुने ! अपने जलमें मुझे डुबाले परन्तु अब मैं प्राणों के रहते गृह नहीं जाऊँगी, कारण कि श्रीकृष्ण बिना मेरा मरण ही श्रेष्ठ है ॥ ३ ॥

सांद्रानंदपुरंदरादि दिविषद्वृंदैर मंदादरादानम्रैर्मुकुटेंद्र नीलमणिभिः शंदर्शत्तेंदीवरम् ॥ स्वच्छंद मकरंद सुन्दर गलमंदाकिनीमेदुरं ॥ श्रीगोविन्दपदारविन्दमशुभस्कंदाय वंदामहे ॥ ४ ॥

श्रीकविवर जयदेव जी कहते हैं कि अत्यन्त हर्षको प्राप्त होते हुए इन्द्रादि देवगणों ने नीलमणिजड़ित मुकुटों को श्री कृष्णचन्दके चरणकमलों में सादर नवाया इसी कारण श्रीकृष्ण के चरण-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रविन्द काले कमल की भाँति दीखते हैं । अभिप्राय यह कि रक्तवर्ण कमलके सदृश श्रीकृष्णके चरण नीलमणि जड़ित मुकुटों के साष्टांग प्रणाम से नील कमल सदृश चरणारविन्द होगये हैं, उनको इन्द्रादि देवतागण प्रणाम करते हैं और पुष्परसके तुल्य निकलने वाली श्रीगंगा के समान स्निग्ध इसभाँतिश्रीकृष्णचन्द्र भगवानके चरणारविन्दों को हम सब लोग अशुभ [पाप] के विनाशार्थ प्रणाम करते हैं ॥ ४ ॥

इति श्रीनागर नारायणो नाम सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥

अथ अष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

॥ श्लोकः ॥

अथ कथमपि यामिनीं निनीय
स्मरशरजर्जरितापि सा प्रभात ।
अनुनयवचनं वदंतमग्रे प्रणतमपि
प्रियमाह साभ्यसूयम् ॥ १ ॥

इस भाँति कामाग्नि के प्रभाव से अत्यन्त क्षीण होगई है देह जिसकी ऐसी वह वृषभानुनन्दिनी राधा विरह की वेदना से पृथ्वी पर शयन करती हुई उस रात्रि को व्यतीत करती हुई तदनन्तर प्रातःकाल श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज राधाजी के कुञ्ज वनमें स्वयं उपस्थित होकर अत्यन्त नम्र भाव को धारण किये राधा के चरणों में अनेक प्रकार की विनती करने लगे, परन्तु श्रीकृष्ण के शरीर में कामभोग के अनेक चिह्न देखकर श्रीराधा जी ईर्ष्या सहित बचन बोलीं ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भैरवीरागे रूपकताले अष्टपदी ॥ १७ ॥

रजनिजनितगुरु जागररागकषायित मलसनिमेषम् ।
वहति नयनमनुरागमिव स्फुटमुदितरसाभिनिवेशम् ॥
हरि हरि याहि माधव याहि केशव मा वद कैतववादम् ।
तामनुसर सरसीरुहलोचन या तव हरति विषादम् ॥
ध्रु० ॥ १ ॥

श्रीराधाजी ने कहा कि हे माधव ! मैं आप से विनती करके कहती हूँ कि यह बड़ी लज्जा की बात है तुम हमसे छल युक्त यह धूर्त्तताकी बातें करते हो कि सिवा मेरे अन्य कोई गोपी प्रिय ही नहीं हैं तो यह आज प्रत्यक्ष हो रहा है कि रात्रिके जागरण से तुम्हारे दोनों नयन लोहित रागको धारण कर रहे हैं और यह नयन आलस्यके लिये मुद्रित भी हो गया है तुम्हारे इस विकार से नवीन प्यारी की ओर अनुराग के प्रमाण भी लक्षित होते हैं इससे [छी छी, बड़े अफसोस की वार्ता है कि अच्छा यह मनमें कहकर] जिस कामनी के प्रेम सरोवर में मग्न होकर रात्रिको पवित्र किया है उसीसे तुम्हारा यह विषाद दूर हो जावेगा ॥ १ ॥

कज्जलमलिनविलोचन चुंबनविरचित नीलिमरूपम् ।
दशनवसनमरुणं तव कृष्ण तनोति तनोरनुरूपम् ॥
हरि ह० ॥ २ ॥

हे माधव ! आज आपके द्वारा रमणी के कज्जलरंजित नयनों के चुम्बन करने से आप के यह लाल वर्णवाले अधरोष्ठ नील

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ण के होकर सर्वशरीर के सदृश काले हो रहे हैं और आपके रूपकी छवि में कामदेव के बाण सदृश नखोंके प्रहार भी प्रतीत हो रहे हैं ॥ २ ॥

वपुरनुहरति तव स्मरसङ्गरखरनख रक्षतरेखम् ।
मरकतशकलकलित कलधौतलिपेरिव रति जयलेखम् ॥
हरि ह० ॥ ३ ॥

हे कृष्ण ! यह जो आपका शरीर कामदेवके युद्धमें तीव्र नखोंके क्षतसे रेखायुक्त हो गया है अभिप्राय उस रमणी नायिका ने आप से प्रसन्न होकर जैसे मरकत (काला सङ्गमरमर) के शिलाके टुकड़े पर सुवर्ण अक्षरों से लिखकर रति रस रंगका विजयपत्र दिया है इस करण आप उसीके पास जाइये कि जिससे आपने यह प्रशंसा पत्र पाया है ॥ ३ ॥

चरणकमलगल दक्तकसिक्तमिदन्तव हृदयमुदारम् ।
दर्शयतीव बहिर्मदनद्रुमनवकिसलय परिवारम् ॥
हरि ह० ॥ ४ ॥

हे कृष्णचन्द्रजी ! चरणकमलसे गिरता जो महावर उससे सींचा आपका मनोहर हृदय मानों कामदेव रूप वृक्षके नवीन २ पत्तों के परिवार को बाहर दिखाता है अभिप्राय–जिसके महावर का चिह्न आपके हृदय पर है उसीके समीप आप जाइये ॥४॥

दशनपदं भवदधरगतं मम जनयति चेतसि खेदम् ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कथयति कथमधुनापि मया सह तव वपुरेतदभेदम् ॥
हरि ह० ॥ ५ ॥

हे माधव ! आपके ओष्ठोंके ऊपर जो अन्य कामिनीके, दाँतों के क्षत हैं वह मेरे चित्त में खेद करते हैं इस कारण आपके और मेरे शरीर में कितना अभेद [एकता] है सो यह रदनक्षत आप ही कहे देते हैं अतः आपने जिस रमणी से दन्तक्षत करवाये हैं उसीके पास जाइये ॥ ५ ॥

बहिरव मलिनंतः तव कृष्ण मनोऽपि भविष्यतिनूनम् ।
कथमथ वंचयसे जनमनुगतवसम शरज्वरदूनम् ॥
हरि ह० ॥ ६ ॥

हे श्रीकृष्णचन्द्रजी ! अब मुझे यह मालूम होता है कि जिस भाँति आपका यह शरीर बाहर से काला है उसी भाँति आपका हृदय भी काला है यदि आप कहैं कि यह बात असत्य है तो मेरे सरीखी अनुयायिनि और कामाग्नि से पीड़ित दुःखी जनोंको क्यों ठगते हो ॥ ६ ॥

भ्रमति भवानबलाकवलाय वनेषु किमत्रविचित्रम् ।
प्रथयति पूतनिकैव वधूवधनिर्दय बालचरित्रम् ॥
हरि ह० ॥ ७ ॥

हे माधव ! आप इस घोर वनमें केवल स्त्रियोंके ही वध करने के हेतु भ्रमण करते हैं मैं जानता हूँ कि आप इस कर्म में अति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निपुण हैं क्योंकि आपने बालकपन ही में पूतना नाम राक्षसी को विनाश करके अपने चरित्र को भली भाँति प्रकट किया है ॥ ७॥

श्रीजयदेव भणितरति वंचितखंडित युवतिविलापम् ।
शृणुत सुधामधुरं विबुधा विबुधालयतोऽपिदुरापम् ॥
हरि ह० ॥ ८ ॥

हे सकल गुण निधान पण्डितगण ! श्री जयदेव कवि निर्मित संभोग शृङ्गार रससे वंचित खण्डिता नायिका के विलाप को श्रवण करो कारण कि यह श्रीकृष्ण चरित्र मृत स्वर्ग में भी दुर्लभ है ।८

इति श्रीगीतगोविन्दे सप्तदशः प्रबन्धः ॥ १७ ॥

॥ श्लोकः ॥

तदेवं पश्यंत्याः प्रसरदनुरागं बहिरिव
प्रियापादालक्तच्छुरित मरुणच्छायहृदयम्॥
ममाद्य प्रख्यातप्रणयभरभङ्गेन कितव
त्वदालोकः शोकादपि किमपि
लज्जां जनयति ॥ १ ॥

श्रीराधाने पुनः कहा कि हे माधव ! आज आप की मूर्ति को देखकर मेरे हृदय में बहुत काल बाद प्रेम भंग भय उपस्थित हुआ हैं "सदैव से मैं यह सुनती आई हूँ कि परस्पर प्रेम भाव बढ़ाने-वालों का प्रेम कदापि नहीं टूटता सो आपने वह लोक तोड़ दी अर्थात् प्रेमका विनाश कर दिया" और उसी कारण लज्जा और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुःख ने मेरे को आश्रय किया है कारण कि आपका हृदय आपकी नूतन प्रेमिका के चरणगलित महावर के रससे चिह्नित हुआ है अभिप्राय यह कि—इतनी प्रीति नायिका ने आपकी की परन्तु उसे भी छोड़ मेरे पास आये हो ॥ १ ॥

प्रातर्नीलनिचोलमच्युतमुरः संवीतपातांशुकं
राधायाश्चकितं विलोक्य हसतिस्वैरं सखीमंडले ॥
व्रीडाचंचलमंचलं नयनयोराधाय राधानने स्मेरं
स्मेर मुखोयमस्तु जगदानंदाय नंदात्मजः ॥ २ ॥

किसी दिन प्रभात, समय में सब सखियाँ श्रीकृष्ण के पीताम्बर को धारण किए श्रीकृष्णचन्द्रजी को देखकर अनेक भाँतिकी हँसी करती थीं इसीलिये राधा जीके मुख कमल पर दृष्टिपात किया यह वृजकुमार की लीला समस्त जगत् को मंगल करै ॥ २ ॥

इति खंडितानायिकावर्णने विलक्षणलक्ष्मी
पतिर्नामाष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

अथ नवमः सर्गः ॥ ९ ॥

॥ आर्या ॥

अथ तां मन्मथखिन्नां रतिरसभिन्नां विषाद संपन्नाम् ॥ अनुचिंतितहरिचरितां कलहांतरितामुवाच रहः सखी ॥ १ ॥

इसके अनन्तर कामदेव से पीड़ित रतिरङ्गरस से वंचित, अति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुःखी कृष्ण के चरित्रों को स्मरण करने वाली स्वामी का तिरस्कार करके पश्चात्ताप करने वाली [कलहान्तरिता] राधिका से कोई सखी एकान्त में बोली ।

गुर्जरीरागे रूपकताले अष्टपदी ॥ १८ ॥

हरिरभिसरति वहति मधुपवने ।
किमपरमधिकसुखं सखि भवने ॥
माधव मा कुरु मानिनि मानस ये ।
॥ ध्रु० ॥ १ ॥

हे राधिका ! इस वसन्त ऋतु के वायु चलने के समय श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज जब तुम्हारी संकेत भूमि में स्वयं चले आये तो अब इससे बढ़कर गृहमें क्या आनंद होवेगा इस कारण हे मानिनी ! श्री माधव जी की ओर अब तुम्हें अभिमान न करना चाहिये १

तालफलादपि गुरुमतिसरसम् ।
किं विफलीकुरुषे कुचकलशम् ॥
माध० ॥ २ ॥

हे राधिके ! तालफलसे भी बढ़कर भारी और सरस इन कुचरूपी कलशोंको क्यों निष्फल करती हो अभिप्राय यह कि श्रीकृष्ण चन्द्रमे आलिंगन करके इन स्तनों का जन्म सफल करो । इस वाक्य में जो जयदेवजी ने स्तनोंको तालफल से अधिक कहा उसका यह कारण है कि तालफलों के भक्षण से कुछ मादकता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होती है और इनमें अधिकता यहहै कि इनके दर्शनमात्र [देखने ही से) अत्यन्त मादकता हो जाती है ॥ २ ॥

कति न कथितमिदमनु पदमचिरम् ।
मा परिहर हरिमतिशय रुचिरम् ॥
माध० ॥ ३ ॥

हे प्यारी ! प्यारे माधव जबतक तुझे स्पष्ट कुछ कटु वचन न कहैं तबतक तू अप्रसन्न न हो और उनका त्याग मत कर ॥ ३ ॥

किमिति विषीदसि रोदिषि विकला ।
विहसति युवतिसभा तव सकला ॥
माध० ॥ ४ ॥

हे प्यारी ! तुम इतना दुःखी होकर क्यों रुदन करती हो ? तुम्हारी इस अवस्था को देखकर यह सभी गोपकामिनियाँ तुझे देख २ कर हँसती हैं कि देखो गृह में आये हुए श्रीकृष्णका निरादर करके अब रोदन कर रही है इस दशा में तेरी हँसी ही है ॥४॥

मृदुनलिनीदल शीतलशयने ।
हरिमवलोकय सफलय नयने ॥
माधव ॥ ५ ॥

यदि तू मुझसे कहै कि मैं क्या करूँ ? तो हे प्यारी ! कमल पत्र की सुन्दर शय्या पर माधवजी को शयन करवा कर अपने दोनों नेत्रों को तृप्त करो ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जनयसि मनसि किमिति गुरुखेदम् ।
शृणु मम वचन मनीहितभेदम् ॥
माध० ॥ ६ ॥

सखीने विचारकर राधा से कहा कि हे प्यारी । तू इतना विचार क्यों करती है मेरे वाक्य को मानकर तू मेरे कहे हुये वचनों को कर, तेरे लिये हितही का वाक्य कहती हूँ ॥ ६ ॥

हरिरुपयातु वदतु बहु मधुरम् ।
किमिति करोषि हृदयमति विधुरम् ॥
माध० ॥ ७ ॥

हे प्यारी । तुम अपने मनको क्यों इतना दुःख देती हो तुम श्रीकृष्णचन्द्रके पास जाकर अपने नम्र वचनोंसे उनको प्रसन्नकरो ।

श्रीजयदेव भणित मतिललितम् ।
सुखयतु रसिकजनं हरिचरितम् ॥
माध० ॥ ८ ॥

श्रीमान् कविवर जयदेव स्वामी रचित यह श्रीकृष्ण चरित समस्त भक्तलोगों को प्रसन्न करै ॥ ८ ॥

॥ श्लोकः ॥

स्निग्धं यत् परुषासि यत् प्रणमसि स्तब्धासि
यद्रागिणि द्वेषस्थासि यदुन्मुखं विमुखतां यातासि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तस्मिन् प्रिया ॥ तद्युक्तं विपरीतकारिणि तव श्रीखंडचर्चाविषं शीतांशुस्तपने हिमं हुतवतः क्रीडा-मुदो यातनाः ॥ १ ॥

हे प्रिये राधे ! जिस समय तुझसे श्रीकृष्णचन्द्रजी मीठे मीठे वाक्य कहते हैं उस समय तू उनसे कठोर वाक्य कहती है। जब वह नम्रतायुक्त तेरी विनय करते हैं तब तू जडवत् होकर उनके वाक्य का कुछ उत्तर ही नहीं देती है। जब वह तुमसे प्रेमभाव प्रगट करते हैं तब तू उनसे शत्रुवत् आचरण करती है। जिस समय श्रीकृष्ण तेरे सन्मुख आते हैं तो तू मुख फेरकर बैठती है। श्रीकृष्ण के प्रति इस भाँति आचरणसे ही तेरी यह गति है कि चंदन विषके तुल्य, चन्द्रमा की चन्द्रिका सूर्य की किरणों के तुल्य, हिम अग्नि के समान और क्रीड़ारूपी आनन्द दुःखके भाँति लगता है, इससे स्वेच्छाचारी होना ठीक नहीं है ॥ १ ॥

अंतर्मोहनमौलिघूर्णनचलन्मंदारविस्रंसनः
स्तब्धाकर्षणदृष्टिहर्षणमहामन्त्रः कुरंगीदृशाम् ।
दृप्यद्दानवदूयमानदिविषद्दुर्वारदुःखापदांभ्रंशः
कंसरिपोर्व्यपोहयतु वः श्रेयांसि वंशीरवः ॥२॥

मृगनयनी स्त्रियोंके मनको मोहना और वाह २ यह कहकर शिरका काँपना, शिरमें गुथे हुये पुष्पों का नीचे गिराना और जड़ पदार्थों को भी अपनी ओर खींचने में मुरली बजाते हुए कृष्णके देखने सुननेवालों के नेत्रोंको आनन्द देने में महामन्त्र रूप और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभिमानी दानवों से पीड़ित देवता गणों के दुःख को हरनेवाले श्रीकृष्णजी की वंशीध्वनि आप लोगों (भक्तजनों) को कल्याण प्रदानकारिणी होवै ॥ २ ॥

इति कलहांतरितावर्णने मुग्धमुकुन्दो नाम नवमः सर्गः ॥ ९ ॥

अथ दशमः सर्गः ॥ १० ॥

॥ श्लोकः ॥

अत्रांतरे मसृण रोषवशामसीमनिः
श्वासनिःसहमुखीं समुपेत्य राधाम् ॥
सव्रीडमीक्षितसखी वदनां दिनांते
सानंदगद्गदमिदं हरिरित्युवाच ॥ १ ॥

दिन के अन्त समय (सायंकाल) श्रीराधारानी का क्रोध शान्त हुआ परन्तु मनकी वेदना के कारण क्रोधयुक्त श्वास लेती हुई राधा सखी के प्रति उत्तर देते ही देते ग्लानितमुख को उठाकर सखी की तरफ देखा और उसी समय सुन्दर मुखवाली राधिका से श्रीकृष्णचन्द्रजी गद्गद वचन बोले ॥ १ ॥

इति देशवराडिरागे आडवताले अष्टपदी ॥ १३ ॥

वदसि यदि किंचिदपि दंतरुचिकौमुदी हरति
दरतिमिरघोरम् ॥ स्फुरदधरसीधवे तव वदनचन्द्रमा
रोचयति लोचनचकोरम् ॥ प्रिये चारुशीले प्रिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चारुशीले मुंचमयि मानमनिदानम् ॥ सपदि मदनानलो दहति मम मानसे देहि मुखकमलमधुपानम् ॥ ध्रु० ॥ १ ॥

श्रीकृष्णजी कहते हैं कि हे प्यारी ! जिस समय तू कुछ कहने लगती है उस समय तेरे दाँतों की ज्योति से मेरे हृदय का भयरूपी अन्धकार दूर हो जाता है । हे चन्द्रानने । तेरा यह अमृतरूपी मुख चन्द्रमा मेरे नेत्र चकोरों को अमृत पान कराने के लिये ललचाता है । हे चारुशीले ! मेरी ओर कृपा करके अभिमान को छोड़ दो । तुझे देखकर मेरा हृदय कामरूपी अग्नि से जलता है । हे प्यारी तुम अपने मुख कमल के मधुको पान कराओ कि जिसके पान करने से मेरे हृदय का क्लेश दूर होगा ॥ १ ॥

सत्यमेवासि यदि सुदति मयि कोपिनी देहि खरनखरशर घातम् ॥ घटय भुजबंधनं जनय रदखंडनं येन वा भवति सुख जातम् ।
प्रिये चारुशीले० ॥ २ ॥

हे प्यारी । यदि तुम हमारे ऊपर सत्य ही क्रोधित हो तो तुम हमारे शरीर में तीव्र तर स्वरूप बाण से मेरे को प्रहार करो । अपनी भुजलतारूपी बन्धन से मुझे बाँध लो और अपने दन्तों से मुझे दंशन करो अथवा हमारे दण्ड देने के विषय में जिससे तुमको सुख उपजै वैसा ही हमको दण्ड देवो ॥ २ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्वमसि मम भूषणं त्वमसि ममजीवनं त्वमसि मम भवजलाधिरत्नम् । भवतु भवतीह मयि सततमनुरोधिनीतत्र मम हृदयमतियत्नम् ॥

प्रिये चारुशीले० ॥ ३ ॥

हे प्रिये ! तू ही मेरा भूषण है तूही मेरा जीवन हो और तुम्हीं मुझको संसाररूपी समुद्र में रत्न स्वरूप हो इसी कारण तुम मेरे ऊपर कृपादृष्टि करो मेरा प्राण तेरे लिये हे प्यारी ! अनेक प्रकार से प्रसन्न करने का यत्न कर रहा है ॥ ३ ॥

नीलनलिनाभमयि तन्वि तव लोचनं धारयति कोकनदरूपम् । कुसुमशरबाणभवेन यदि रंजयसि कृष्णमिदमेतदनुरूपम् ॥

प्रिये चारुशीले० ॥ ४ ॥

हे प्रिये ! तेरे काले कमल तुल्य यह नेत्र होने पर भी रक्तकमल के भाँति नेत्रों को कामदेव रूपी बाणों के (पुष्प) से इनको अरुण करो तब इनमें उचित लालिमा आवैगी अभिप्राय यह कि हे प्यारी। क्रोध से इनको लाल मत करो किन्तु पुष्परसके पानसे अरुण करो४

स्फुरतु कुचकुम्भयोरुपरि मणिमंजरी रंजयतु तव हृदयदेशम् । रसतु रशनापि तव जघनघनमंडले घोषयतु मन्मथनिदेशम् ॥

प्रिये चारुशीले० ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे प्यारीजी ! आपके कण्ठदेश के मणिमय हार स्तनों के ऊपर चंचल होकर तुम्हारे हृदयको शोभायमान करैं और जघनों पर करधनी का मनोहर शब्द होय और वही करधनी कामदेव की आज्ञा की घोषणा दे अभिप्राय यह कि हे प्रिये ! तूने मानके कारण समस्त आभूषणों को उतार दिया है उनको पुनः धारण करके कामक्रीड़ा करो।

स्थलकमलगंजनं मम हृदयरंजनं जनितरतिरंगपर भागम् । भणमसृणवाणि करवाणि चरणद्वयं सरसलसदक्तकलमुरागम् ॥

प्रिये चारुशीले० ॥ ६ ॥

हे राधे ! स्थलकमलों से भी अधिक शोभायमान मेरे हृदय को प्रीति के दाता और उत्पन्न की है कामक्रीड़ा में परस्पर संभोग की शोभा जिन्होंने ऐसे आपके दोनों चरणों को मैं महावरसे अत्यन्त रंगीले करूँ अभिप्राय यह कि तेरे चरण में सरस महावर को मैं लगाऊँ।

स्मरगरलखण्डनं मम शिरसि मंडनं देहि पद पल्लवमुदारम् । ज्वलति मयि दारुणो मदनकदनानलो हरतु तदुपहितविकारम् ॥

प्रिये चारुशीले० ॥ ७ ॥

हे राधे ! तुम कामदेव के विष के नाशक हो मेरे शिर के भूषण और अत्यन्त मनोहर अपने कमलरूपी चरण को मेरे शिरपर रक्खो कारण कि हमको कामाग्नि अत्यन्त दुःख देरही तुम्हारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमल चरण जिस समय मेरे शिर पर स्थित होंगे तो वह मेरी अग्नि स्वयं शान्त हो जावैगी ।

इतिचटुकचाटुपटुचारुमुरवैरिणो राधिकामधि वचन-जातम् । जयति पद्मावतीरमणजयदेव कवि भारती भणितमिति गीतम् ॥ ८ ॥

इस भाँति अत्यन्त चातुरीयुक्त प्रेम रस भींगे जयदेव कवि की वाणी से सुशोभित और मानवती नायिकाओं को हर्षप्रद यह राधा के प्रति कृष्ण जीसे कहे हुये वचन सब वाक्यों से श्रेष्ठ हैं ८

इति श्रीगीतगोविन्दे एकोनविंशतितमः प्रबन्धः ॥ १९ ॥

॥ श्लोकः ॥

परिहर कृतातंके शंकां त्वया सततं
घनस्तनजघनयाक्रांतेस्वांतवरानवकाशिनि ।
विशति वितनोरन्यो धन्यो न कोऽमतांतरं
स्तनभर परीरंभारंभे विधेहि विधेयताम् ॥ १॥

हे प्रिये । जो तू मेरे विषय में शंका रखती है उसे तू छोड़ दे जिस समय कठोर स्तन और कठोर जंघा वाली मेरे हृदय को आक्रमण करती है उस समय मेरे हृदय में सिवाय कामदेव के दूसरे के प्रवेश का स्थान ही नहीं रहता अतः हे प्यारी राधे ! स्तनों के भार से स्पर्श कर मेरा आलिंगन करो ॥ १ ॥

मुग्धे विधेहि मयि निर्दयदंतदंश दोर्वल्लिबंधनिवि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डस्तनपीडनानि । चंडित्वमेव मुदमंचय पञ्चबाण-
चण्डालकाण्डदलनादसवः प्रयाति ॥ २ ॥

अय मूढ़े प्यारी राधे ! तुम अपने उग्र दन्तों से मेरे को दंशन करो, तुम अपने हस्तस्वरूप बलसे मेरेको बन्धन करो, और तुम अपने उठे हुये कुचकलशों से मेरे को प्रहार करो । हे चण्डी ! मेरे पर तुम संतुष्ट होवो इस समय चाण्डाल कामदेव अपने बाणों से मेरे प्राण लेने को उद्यत है यदि तुम मेरे पर प्रसन्न न होवोगी तो वह मेरे प्राणों को अवश्य ले लेगा इसलिये मुझे जीवनदान देवो ॥२॥

शशिमुखि तव भाति भंगुरभ्रूर्युवजनमोहकरालका-
लसर्पी । तदुदितभयभंजनाय यूनां त्वदधरसीधु
सुधैव सिद्धमंत्रः ॥ ३ ॥

हे शशिमुखि ! चन्द्रवत् मुखवाली राधे ! तुम्हारी यह कुटिल भौं हैं युवा पुरुषों को मूर्च्छा प्राप्त कराने में काली नागिन हैं और इन भौंहां के द्वारा मूर्च्छा में प्राप्त पुरुषों को तेरा अधरामृत ही सिद्ध मंत्र है (यथा किसी काली नागिनसे डसे हुये पुरुषको सिद्ध मंत्रही विषहीन करता है, वैसेही इन भौंहरूपी कृष्णसर्पिणी से डसे युवकों को तेरा अधरामृत ही सिद्ध मंत्र है) इस कारण हे प्रिये ! मैं तेरी प्रार्थना करता हूँ कि तेरी इस भौंहरूपी सर्पिण ने मुझे डस लिया है और जो तुम मेरे प्राणोंको बचाना उचित समझती हो तो अपने अधरामृत को पान कराके मेरे प्राणों को बचालो नहीं तो उक्त औषधि के विना मेरे प्राण नहीं बच सकतेहैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यथयति वृथा मौनं तन्वि प्रपंचय पंचमं तरुणि मधुरालापैस्तापं विनोदय दृष्टिभिः ॥ सुमुखि विमुखीभावं तावद्विमुंच न वंचय स्वयमतिशय स्निग्धो प्रियेऽहमुपस्थितः ॥ ४ ॥

हे तन्वि ! सूक्ष्म शरीरवाली राधे ! इस समय तुमजो चुपचाप बैठी हो अत्यन्त दुःख हो रहा है । हे तरुणी ! पञ्चमस्वर युक्त मीठी २ वाणी से मेरे प्रति सम्भाषण करो । अपनी शीतल दृष्टिस मेरे हृदयके सन्ताप को दूर करो । हे सुमुखि ! जो तुम मुझसे विमुख हो रही हो सो अब तुम इस विमुखता को छोड़दो और तुम मुझे अब मत ठगो कारण कि मैं तेरा प्यारा तेरे निकट स्वयं आकर उपस्थित हुआ हूँ इससे मेरे वचन का उल्लंघन मत करो अभिप्राय यह कि प्यारी को त्यागना उचित नहीं है ॥ ४ ॥

बंधूकद्युतिबांधवोऽयमधरः स्निग्धो मधूकच्छ विर्गण्डश्रंडिचकास्तिनीलनलिन श्रीमोचनंलोचनम् ॥ नासाभ्येति तिलप्रसूनपदवीं कुन्दाभदन्ति प्रिये, प्राय-स्त्वन्मुखसेवया विजयते विश्वं स पुष्पायुधः ॥ ५ ॥

हे कोपवती राधे ! तुम्हारा यह अधर ओष्ठ बंधक (दुपहरिया) पुष्प के समान रक्तवर्ण तथाचिकने हैं, और महुवेके पुष्पके समान कान्तिवाले कपोल, काले कमलकी शोभा को नष्ट करने वाले यह तेरे नयन, तिलके पुष्प समान तेरी नासिका, कुन्द पुष्प के सदृश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेरे दन्त हैं हे प्यारी ! पुष्पायुध कामदेव केवल तेरे ही मुखकी सेवा से संसार को पराजित करता है ॥ ५ ॥

दृशौ तव मदालसे वदनमिन्दुमत्यान्वितं गति-र्जनमनोरमा विधुतरंभमूरुद्वयम् ॥ रतिस्तव कला-वती रुचिरचित्रलेखे भ्रुवावहो विबुधयौवयं वहसि तन्वि पृथ्वी गता ॥ ६ ॥

हे प्यारी राधे ! तुम्हारे नेत्र यौवन के मद से आलस्य युक्त हैं, मुख चन्द्रमा की वृद्धि से युक्त है अभिप्राय यह कि देखन वालों को यह प्रतीत होता है कि यह चन्द्रमा ही है, तेरा गमन (चलना) लोगों को आनन्द देनेवाला है तुम्हारी दोनों जंघायें रंभा (कदली केला) के वृक्षको अपनी शोभासे तिरस्कार करने वाली हैं, तुम्हारी रति क्रीड़ा कामकलाओं से युक्त हैं, तुम्हारी भौंहें चित्र (तस्वीर) की भाँति अथवा चित्रलेख के तुल्य हैं उक्त विशेषणों से यह प्रतीत होता है कि मदालसा, इन्दुमती, मनोरमा, रंभा और कलावती देवांगनायें सूचित हुई । श्रीकृष्ण ने इसी अभिप्राय से कहा कि यह उपरोक्त गुण प्रत्येक में एकही एक हैं और हे राधे ! तेरे में तो यह सभी प्राप्त हैं दूसरे इस पृथ्वी पर तेरा निवास दोनों भी बड़े आश्चर्य की बात है ॥ ६ ॥

प्रीतिं वस्तनुतां हरिः कुम्पलयापीडेनसार्धंरणे राधा पीनपयोधरस्मरण कृत्कुम्भेनसंभेदवान् ॥ पत्रे बिभ्यति मीलति क्षणमपि क्षिप्रं त्वदालोकनाद्व्यामो-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हेन जितं जितं जितमिति व्यालोलकोलाहलः ॥७॥

श्रीजयदेवजी सर्ग के अन्त में आशीर्वाद देते हैं कि कंस के कुवलयापीड़ हस्तीसे युद्ध करने में लगे हुए श्रीकृष्णचन्द्रजी में जिस समय उस हस्ती के मस्तक को स्पर्श किया तो उसी समय राधिका के मोटे २ कड़े स्तनों का स्मरण आ गया और जब हस्ती भयभीत (मर गया) हुआ तो उसको देखकर लोगों ने कहा कि जीत लिया यह चित्तको चंचल करने वाला घोर शब्द हुआ और बालकोंने यह कहा कि श्रीकृष्णने कंसको जीत लिया ऐसे श्रीकृष्ण चन्द्रजी भक्त लोगों की प्रीति बढ़ावें ॥ ७ ॥

इति मानिनीवर्णनं चतुरचतुर्भुजो नाम दशमः सर्गः ॥ १० ॥

अथ एकादशः सर्गः ।

॥ श्लोकः ॥

रुचिरमनुनयेन प्रीणयित्वा मृगाक्षीं
गतवति कृतवेशे केशवे कुंजशय्याम् ॥
रचितरुचिरभूषां दृष्टिमोषे प्रदोषे स्फुरति
निरवसादां कापि राधां जगाद ॥ १ ॥

श्रीवनमाली कृष्णचन्द्र बहुत कालतक प्रेमपूरित वचनों द्वारा मृगनयनी राधिका को प्रसन्न करके अन्धकार युक्त सन्ध्या के समय अपना शृंगार करके श्रीकुञ्ज विहारी माधवी कुञ्जभवन की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शय्यापर चले गये इधर कोई सखी राधिका का सुन्दर शृंगार करके हास्यमुखी [प्रसन्न चित्तवाली] राधिका से बोली ॥ १ ॥

बसंतरागे रूपकताले अष्टपदी ॥ २० ॥

विरचितचाटुवचन रचनेन चरणरचित प्रणिपातम् ।
संप्रति मंजुलवंजुलसीमनि केलिशयनमनुयातम् ।
मुग्धे मधुमथमनुगतमनुसर राधिके ॥ ध्रु० ॥ १ ॥

हे राधा प्यारी ! देखो माधवजी ने तुम्हारी मनो वेदना को दूर करने के लिये अत्यन्त नम्र वचन कहे हैं और तेरे चरणों को प्रणाम भी किया वह श्रीकृष्णचन्द्र जो अब तेरे अनुकूल हैं वही मधुदैत्य के मारने वाले श्रीव्रजविहारी कृष्णजी ने वेतस की लताओं के पास क्रीड़ा की शय्यापर हैं उनके पास तुम्हें शीघ्र ही चलना चाहिये ॥ १ ॥

घनजघनस्तनभारभरे दरमंथरचरणविहारम् ।
मुखरितमणिमंजीरमुपेहि विधेहि मरालविकारम् ॥
मुग्धे मधु० ॥ २ ॥

हे कठोर तथा मोटे जंघोंवाली राधे ! स्थूल कुचों के भार से मन्द गति का आश्रय लेकर कुञ्ज गमन करो कि तुम्हारे वह मणि रचित नूपुरों के झुन २ शब्दों से राजहंस का विलास पराजित होवै ॥ २ ॥

शृणु रमणीयतरं तरुणीजनमोहनमधुरिपुरावम् ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुसुमशरासनशासनवंदिनिपिकनिकरेभजभावम् ॥
मुग्धे मधु० ॥ ३ ॥

हे राधे ! अत्यन्त रमणीय तरुणी स्त्रियों के मोहन करने वाले श्रीकृष्णचन्द्रजी वंशीकी ध्वनि कर रहे हैं उसको सुना कोकिलागण भी अपने पंचमस्वर से आलाप कर रहे हैं कोकिला यह शब्द करती हैं कि हे मानवाली स्त्रियों ! तुम मानको छोड़कर अपने २ पतियों की सेवा करो । इस कारण यह कामोद्दीपन का समय है अब तुम विलम्ब मत करो ॥ ३ ॥

अनिलतरलकुवलयनिकरेण करेण लतानिकुरंबम् ।
प्रेरणमिव करभोरु करोति गतिं प्रति मुंच विलंबम् ॥
मुग्धे मधु० ॥ ४ ॥

हे करभोरु ! बालों से रहित कनिष्ठिका से मणिबंध तक हाथ के अग्रभाग की भाँति हैं जंघा या छोटे हाथी के बच्चे के सदृश है जंघा एतादृश तुझे यह लताओं के समूह पवन से चञ्चल अपने पत्तों के समूह रूप हाथी से गमन के लिये प्रेरणा कर रहे हैं अभिप्राय यह कि जब अचेतन लता गमन करने के लिये प्रेरणा करती है तो सचेतन को कौन कहै इस कारण हे राधे ! अब विलम्ब न करके शीघ्रही गमन करो ॥ ४ ॥

स्फुरितमनंगतरंगवशादिव सूचितहरिपरिरंभम् ।
पृच्छ मनोहरहारविमलजलधारममुं कुचकुंभम् ॥
मुग्धे मधु० ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे राधे ! यदि तुझे मेरे कहने पर विश्वास न हो तो यह तेरे दोनों स्तन (कुच) कामदेव के बाण से कंपित क्यों हो रहे हैं और यह तुम्हारे पयोधर स्तन श्रीकृष्ण के साथ क्रीड़ा करने के लिये अति निर्मल जलधर सदृश हार से शोभायमान हुआ है इस कारण अब तुम विलम्ब मत करो श्रीभगवान् के पास कुंज को शीघ्र चलो ॥ ५ ॥

अधिगतमखिलसखीभिरिदंतव वपुरपिरतिरणसज्जम् ।
चडि रणितरशनारवडिंडिममभिसर सरसमलज्जम् ॥
मुग्ध मधु० ॥ ६ ॥

हे अत्यन्त कोप करनेवाली राधे ! यह शरीर आपका काम-क्रीड़ा के संग्राम ' युद्ध ' के लिये शोभायमान हुआ है और नितम्ब (कटिके पीछे स्थान) में यह मेखला ! (करधनी) विराजमान है उसके डिम २ शब्द से तेरा स्तन प्रदेश रतिक्रीड़ा संग्राम के लिये उन्माद को प्राप्त हुआ है इस कारण तुम लज्जा को त्यागकर निकुंज में प्रवेश करो ॥ ६ ॥

स्मरशरसुभगनखेन सखीमवलंब्य करेण सलीलम् ।
चलवलयक्वणितैरवबोधयहरिमपिनिजगतिशीलम् ॥
मुग्धे मधु० ॥ ७ ॥

हे सखि राधे ! तुम अभी कन्दर्प ' कामदेव ' के बाण सदृश नखों से सुशोभित ऐसे हाथ से सखी का हाथ पकड़ कर क्रीड़ा के लिये निकुंज में चलते हुए मार्ग में कंकणों को हिला कर शब्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करो कि जिससे तुम्हारी कुंज में प्रवेशता प्रसिद्ध होवै ॥ ७ ॥

श्रीजयदेवभणितमधुरीकृतहारमुदासितवामम् ।
हरिविनिहितमनसामधितिष्ठतु कंठतटीमविरामम् ॥
मुग्धे मधु० ॥ ८ ॥

श्री जयदेव स्वामी कथित, रत्नों के हार को भी तिरस्कार करनेवाली और युवतिगणों का भी तिरस्कार कारी यह श्रीकृष्णका गीत हरिभक्तों के कण्ठ में निरन्तर वास करै यानी इस हरिगुण को भक्तलोग सदैव पढ़ैं ॥ ८ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे विंशतितमः प्रबन्धः ॥ २० ॥

सा मां द्रक्ष्यति वक्ष्यति प्रियकथां प्रत्यंगमालिंगनैः
प्रीतिं यास्यति रंस्यते सखि समागत्येति चिन्ताकुलः ।
स त्वां पश्यति वेपते पुलकयत्यानन्दति स्विद्यति
प्रत्युद्गच्छति मूर्छति स्थिरतमः पुंजे निकुंज प्रियः ॥ १ ॥

हे प्यारी राधे ! इस घोर अन्धकार रात्रि में तमाल वृक्षोंसे सुशोभित अन्धकार में श्रीकृष्णचन्द्रजी तेरे लिये शय्या पर बैठे ध्यान में व्याकुल होकर यह विचार करते हैं कि वह राधिका यहाँ आकर मुझे देखकर मीठे २ वचनों से मनोहर कथायें कहेगी और कथा कहने के बाद अंग २ का आलिंगन करैगी और आप भी आलिंगन से प्रसन्न होवैगी फिर मेरे साथ क्रीड़ा करैगी इस प्रकार अपने मनोरथ को कहते हुये हे वृषभानदुलारी ! तुझे श्रीकृष्णचन्द्र ध्यान से देखते हैं और भयभीत होकर यह कहते भी हैं कि न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाने राधिका मुझसे अब क्या २ कहैगी यह कहकर काँपते भी हैं अंगोंमें रोमांच हो उठते हैं अर्थात् ध्यानके ही आलिंगन से उनके रोमांच हो जाता है और आनन्द को प्राप्त होते हैं और ध्यान के ही आलिंगन रंगरंगके परिश्रम के पसीने से युक्त होते हैं ध्यानही में तेरे लिये उठ खड़े होते हैं और तुझे अपने सन्मुख न पाय मूर्च्छाको प्राप्त होते हैं अभिप्राय यह कि--आपके ही ध्यान में लगे श्रीकृष्ण चन्द्रजी के पास चलना उचित है ॥ १ ॥

अदणोर्निक्षिपदञ्जन श्रवणयोस्तापिच्छगुच्छावलिं
मूर्ध्नि श्यामसरोजदामकुचयोः कस्तूरिकापत्रकम् ।
धूर्तानामभिसारसत्वरहृदां विष्वङ् निकुंजे सखि ध्वांतं
नीलनिचोलचारुसुदृशां प्रत्यंगमालिंगति ॥ २ ॥

हे सखि ! इस संकेतस्थल में शीघ्रता युक्त चित्त वाली धूर्त नायिकाओं के नेत्रों में कज्जल, कानों में तमाल के गुच्छे, शिरमें काले कमलों की माला और स्तनों पर कस्तूरी की रचना विशेष स्थानपर निकुञ्ज के चारों ओर से काली कंचुकी के समान अन्धकार उनके समस्त अगों को आलिंगन करता है इस कारण एक तो अन्धकार है दूसरे उस अन्धकार को ज्यादा करने के लिये कज्जलादिक हैं ! यदि तू कोई भूषणादि धारण भी न करे तो कोई चिन्ता नहीं है अन्धकार में तो कज्जलादिक ही सहायक होते हैं अभिप्राय यह कि इस वर्णन से कृष्णाभिसारिका सूचित हुई ॥२॥

काश्मीरगौरवपुषामभिसारिकाणा--

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मावद्धरेखमभितो मरिमंजरीभिः ।
एतत्तमालदलनीलतमं तमिस्रं तत्प्रे-
महेमनिकषोपलतां तनोति ॥ ३ ॥

हे राधे ! केसर के समान गौरवर्ण का है शरीर जिनका ऐसी जो अभिसारिका (प्यारे के लिये संकेत स्थान में जाने वाली) है रेखा जिसमें ऐसे यह तमाल पत्रके समान अत्यन्त काले अन्धकार में अभिसारिका स्त्रियों के सुवर्णरूप प्रेमकी निकषोपल 'कसौटी, भरका विस्तार करता है अभिप्राय यह कि अभिसारिकाओं के प्रेमकी परीक्षा अन्धकार के गमन से ही होती है ॥ ३ ॥

हारावलीतरलकांचनकांचिदाम-
केयूरकंकणमणिद्युतिदीपितस्य ।
द्वारे निकुञ्ज निलयस्य हरिंनिरीक्ष्य
व्रीडावतीमथसखीं निजगाद राधाम् ॥४॥

इसके अनन्तर हीरे और मोतियों के हार से चञ्चल वर्ण की सुवर्ण करधनी बाजूबन्द, कंगन मणियों की कान्ति से प्रकाशित कुञ्जभवन के द्वार पर श्रीकृष्णचन्द्रजी को देखकर लज्जायुक्त ,मैंने कितने २ कठोर शब्द श्रीकृष्णचन्द्रजी को कहे हैं इससे लज्जित, श्रीराधाजी के प्रति सखी यह वचन बोली ॥ ४ ॥

वराडिरागे आडवताले अष्टपदी ॥ २१ ॥

मंजुतरकुञ्जतलकेलिसदने ॥ प्रविश राधे माधवस-
मीपामिह विलस रतिरभसहसितवदने ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रतिके उत्साह से हँसी युक्त मुखारविन्द वाली हे राधे ! इस मनोहर कुञ्जभवन के भीतर के घर में प्रवेश करो और श्रीमाधव जी के समीप जाकर उनके साथ विलास करो ॥ १ ॥

नवभवदशोकदलशयनसारे ॥ प्रविश राधे माधव समीपमिह विलास कुचकलश तरलहारे ॥ २ ॥

हे कलश सदृश कुचाओंपर चञ्चल हार वाली राधे ! नवीन अशोक के पत्तों से रचित है शय्या ऐसे क्रीड़ाभवन में प्रवेश कर विलास करो ॥ २ ॥

कुसुमचयरचितशुचिवासगेहे ॥ प्रविश राधे माधव समीपमिह विलस कुसुममुकुमारदेहे ॥ ३ ॥

हे फूलों के सदृश कोमल देहवाली राधे ! पुष्पों के समूह से रचा गया जो शुद्ध वासस्थान जिसमें, ऐसे क्रीड़ागृह में तुम प्रवेश कर विलास करो ॥ ३ ॥

मृदुचलमलयपवनसुरभिशीते ॥ प्रविश राधे माधव समीपमिह विलस रसबलिततललितगीते ॥ ४ ॥

हे शृङ्गार रसपूर्ण मनोहर गीतवाली राधे ! यह कोमल और चंचल मलयागिरिकी वायु से सुगन्धित और शीतल ऐसे क्रीड़ा भवन में प्रवेश कर विलास करो ॥ ४ ॥

विततबहुवल्लिनवपल्लवघने ॥ प्रविश राधे माधव-समीपमिह विलसचिरमिलितपीनजघने ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत समय से मिली (जुरी) है माटी जंघा जिसकी ऐसी तू हे राधे ! अनेक प्रकार की नूतन लताओं के पत्तों से गञ्जित जो विस्तारित है कुंजभवन ऐसे क्रीड़ा गृह में प्रवेश कर श्रीकृष्ण के साथ विलास करो ॥ ५ ॥

मधुमुदितमधुपकुलकलितरावे ॥ प्रविश राधे माधव समीपमिह विलस मदन रभसरसभावे ॥ ६ ॥

हे शृङ्गारस के अभिप्रायवाली (रतिरङ्गविमूढ़े) श्रीराधि के ! इस सुहावन बसन्त ऋतु में मधुपान से मत्त भ्रमर गण जिसमें श्रीकृष्ण का यश गा रहे हैं ऐसे अनेक क्रीड़ाचित कुंज में तुम प्रवेश करके विलास करो ॥ ६ ॥

मधुतरलपिकनिकरनिनदमुखरे ॥ प्रविश राधे माधव समीपमिह विलस दशनरुचिरुचिरशिखरे ॥ ७ ॥

हे दाँतों की दीप्ति से शोभायमान हैं शिखरमणि जिनकी (दाड़िम बीज सदृश दशनवाली) श्रीराधे ! ऐसे बसन्त ऋतु में चंचल कोकिलाओं के समूह का है शब्द जिसमें ऐसे क्रीड़ा गृह में प्रवेश करो और हरि के संग विलास करो ॥ ७ ॥

विहितपद्मावती सुखसमाजे ॥ कुरु मुरारे मंगल शतानि भणिति जयदेव कविराजराजे ॥ ८ ॥

हे मुरारे ! श्रीकृष्ण चन्द्र जी महाराज ! किया है अपनी पद्मावती स्त्री को सुख का समूह जिसने और वर्णन किये हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके गुण जिसने ऐसे श्रीजयदेव कविराज के लिये आप सैकड़ों मंगल विधान करो ॥ ८ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे एकविंशतिमः प्रबन्धः ॥ २१ ॥

॥ श्लोकः ॥

त्वां चित्तेन चिरं वहन्नयमतिश्रान्तो
भृशं तापितः कंदर्पेण ॥
पातुमिच्छति सुधा संबाधबिंबाधरम्
अस्यांकं तदलंकुरु क्षणमिह ॥
भ्रूक्षेपलब्धमीनवक्रीता दास इवोपसे-
वितपदांभोजे कुतः सम्भ्रमः ॥ १ ॥

हे राधे ! वह श्रीकृष्णजी तुझे बहुत कालसे चित्तमें धारण करने से श्रमित हो गये हैं, और कामाग्नि से अत्यन्त सन्तापित भी हैं इसी कारण अमृत से पूर्ण आपके बिम्बा (कुंदुरू) समान अधरोष्ठों का पान करना चाहते हैं । हे प्यारी राधा ? अब तू मानको छोड़कर श्रीकृष्णचन्द्रजी की गोदी में बैठ और नयन कटाक्ष की शोभा से मोल लिये नूतन दास के समान कि जिन्होंने तेरे चरण कमलों की सेवा की है ऐसे श्रीकृष्णजी के पास में तुझे अब क्या भ्रम है और तू क्या भ्रम कर रही है ॥ १ ॥

सा ससाध्वससानंदं गोविंद लोललोचना ।
सिंजाना मणिमंजीर प्रविवेश निवेशनम् ॥ २ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री राधा जी सखी के यह वचन सुनकर श्रीकृष्ण जी के विषे चंचल हैं नेत्र जिसके ऐसे आनन्द चित्त होकर अपनी पायजेबों को बजाती हुई वृषभानु दुलारी क्रीड़ा गृह में प्रवेश कीं२॥

वराडिरागे रूपकताले अष्टपदी ॥ २२ ॥

राधावदन विलोकनविकसितविविध विकारविभंगम् ।
जलनिधिमिव विधुमंडलदशनतरलिततुङ्गसरङ्गम् ॥
हरिमेकरसं चिरमभिलषितविलासं ।
सा ददर्श गुरुहर्षव शंवदवदनंमनग विकाशम् ॥
ध्रु० ॥ १ ॥

जैसे चन्द्रमण्डल को देखकर जलनिधि (समुद्र) तरंग युक्त होकर पूर्ण आनन्द को प्राप्त होकर प्रसन्न होता है वैसे ही श्रीकृष्णजी राधाजी के मुखचन्द्र को देख कर प्रकाश को प्राप्त हुये अनेक प्रकार के कटाक्ष आदि और नाना प्रकार के शृङ्गार रसके लक्षणों से युक्त एक राधा ही में प्रीति रखनेवाले बहुत समय बिलास रूपो तृष्णा की इच्छा रखनेवाले तक अतिप्रफुल्लित मुखवाले श्रीकृष्णचन्द्रजी को राधा ने देखा ॥ १ ॥

हारममलतरतारमुरसि दधतं परिरभ्य विदूरम् ।
स्फुटतरफेनकदंबकरंबितमिव यमुनाजलपूरम् ॥
हरिमेकरसं० ॥ २ ॥

श्रीकृष्णचन्द्र की छाती पर मोतियों की माला (हार)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जांघपर्यंत लम्बी अत्यन्त सुफेद यमुनाजल के प्रवाह के सदृश धारण किये हरि जी को राधा ने देखा वह शोभा "जैसे—जल फेन के सदृश हरि और यमुना जल के भाँति श्रीकृष्णकी श्याम शरीर" राधाजी देखकर वृषभान दुलारी को अनंग राग प्रतीयमान हुआ २

श्यामलमृदुलकलेवरमंडलमधिगतगौरदुकूलम् ।
नीलनलिनमिव पीतपरागपटलभर वलयितमूलम् ॥
हरिमेकरसं० ॥ ३ ॥

सुन्दर श्याम कलेवर (शरीर) में पीताम्बर को धारण किये "जैसे पीतवर्ण पराग से युक्त नील कमल हो" श्रीकृष्णचन्द्र को वृषभानु नन्दिनी राधा ने देखा ॥ ३ ॥

तरलदृगंचलचलनमनोहरवदनजनितरतिरागम् ।
स्फुटकमलोदरखेलितखंजनयुगमिवशरदि तडागम् ॥
हरिमेकरसं० ॥ ४ ॥

जैसे शरद समय में खिले हुए कमल के बीच दो खंजन पक्षी खेल रहे हों ऐसे तड़ागकी भाँति चञ्चल कटाक्ष के चाल द्वारा सुन्दर मुख से स्त्रियों में अनुराग उत्पन्न करने वाले श्रीकृष्ण को राधिका ने देखा ॥ ४ ॥

वदनकमलपरिशीलनमिलितमिहिरसमकुंडलशोभम् ।
स्मितरुचिरुचिरसमुल्लासिताधरपल्लवकृतिरतिलोभम् ॥
हरिमेकरसं० ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुखारविन्द के दर्शन के लिये आपस में मिले हुये जो सूर्य तुल्य कुंडल उनकी शोभा है जिनकी और हास्यरस की दीप्ति 'प्रकाश' से प्रकाशित जो अधर पल्लव उसके द्वारा उत्पन्न किया है नारिजनों को रति का लोभ जिन्होंने इस भाँति के श्रीकृष्णजी को राधा देखीं ॥ ५ ॥

शशिकिरणोच्छुरितोदरजलधरसुंदरकुसुमसुकेशम् ।
तिमिरोदितविधुमंडलनिर्मलमलयजतिलकनिवेशम् ॥
हरिमेकरसं० ॥ ६ ॥

जिनका मध्यभाग चन्द्रमा की किरणों से सुशोभित है मेघ तुल्य सुन्दर पुष्पसहित केश हैं जिनके और अंधकार में चन्द्रमण्डल के समान निर्मल है मलयागिरि चंदन का मस्तक पर तिलक जिनके ऐसे श्रीकृष्णचन्द्रजी को वह राधा देखीं ॥ ६ ॥

विपुलपुलकभरदंतुरितं रतिकेलिकलाभिरधीरम् ।
मणिगणकिरणसमूहसमुज्ज्वलभूषणसुभगशरीरम् ॥
हरिमेकरसं० ॥ ७ ॥

अत्यन्त रोमांचों के समूह से व्याप्त सुरति की क्रीड़ाओं से चञ्चल और मणि किरणोंके समूहसे अधिक प्रकाशित आभूषणों को धारण किये श्रीकृष्णचन्द्रजी को राधिका ने देखा ॥ ७ ॥

श्रीजयदेवभणितविभव द्विगुणीकृतभूषणभारम् ।
प्रणमति हृदि विनिधाय हरिं भवजलसुकृतोदयसारम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हरिमेकरसं चिरमभिलषितविलासम् ।
सा ददर्श गुरुहर्षवशंवदवदनमनंगविकाशम् ॥ ८ ॥

श्रीजयदेव स्वामी वर्णित परस्पर दोनों अलंकारों से युक्त संसार रूपी समुद्र में पुण्योदयके सार रूप हरिको निज हृदय में स्थापन करो जिनके साथ विलास करने की बहुत दिनों से लालसा थी ऐसे एक समय श्रीकृष्ण को राधा ने देखा। उस समय भगवान् अतिशय हर्ष से भरे थे और उनके मुख पर अनंग रसका विकाश हो रहा था।

इति श्री गीतगोविन्दे द्वाविंशतितमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

॥ श्लोकः ॥

अतिक्राम्यापांगं श्रवणपर्यंतगमने
प्रयासे वा अक्ष्णोस्तरलतरतारं पतितयोः ॥
इदानीं राधायाः प्रियतमसमालोकसमये
पपात स्वेदांबु प्रसर इव हर्षाश्रु निकरः ॥ १ ॥

प्रियतम श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन के समय अत्यन्त चञ्चल पुतली वाले नयनों के अन्त भाग को लांघ करके कर्ण तक जाने के परिश्रम से राधाजी के नेत्रों से पसीना जल के समान आनन्दाश्रु जल बरसने लगा ॥ १ ॥

भजंत्यास्तल्पांतः कृतकपटकंडूतिपिहितं
स्मितायाते गेहाद्बहिरवहितालीपरिजने ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रियास्यं पश्यत्याः स्मरशरवशाकूतसुभगं
सलज्जाया लज्जाव्यपगमदिव दूरं मृगदृशः ॥२॥

जिस समय राधा और कृष्ण को चार आँखें हुईं तो उसी क्षण वहाँ की समस्त सखियाँ कान खजुराने के बहाने निज २ हँसीको छपाकर (यानी इस कौतुक को देखकर सब सखियों को हँसी आई) उक्त व्याज से सब सखियाँ क्रीड़ा भवन से बाहर चली गइं सब सखियों के जाते ही राधाजी की लज्जा भी बाहर को चली गई अभिप्राय यह कि समस्त सखियों को बाहर जाते देख लज्जा भी लज्जित होकर बाहर चली गई ॥ २ ॥

जयश्रीविन्यस्तमहित इव मंदास्कुसुमैः
स्वयं सिंदूरेण द्विपरणमुदा मुद्रित इव ॥
भुजापीडक्रीड़ाहतकुवलयापीडकरिणः
प्रकीर्णासृग्बिंदुर्जयति भुजदंडोऽमुरजितः ॥३॥

दोनों भुजाओं की क्रीड़ा से कुवलयापीड़ हाथीको मारने वाले श्रीकृष्णचन्द्रका भुजदण्ड रुधिरकी बिन्दुओं से संयुक्त और जयलक्ष्मी से मानों पारिजातके पुष्पोंसे पूजित मुरारि (श्रीकृष्णचंद्र का भुजदंड भक्तों की रक्षाके लिये सबसे श्रेष्ठ भुजदंडको जयहो ३

इति अभिसारिका वर्णने सानन्दगोविन्दो
नाम एकादशः सर्गः ॥११॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ द्वादशः सर्गः ॥ १२ ॥

॥ श्लोकः ॥

गतवति सखीवृन्दे मन्दत्रपाभरनिर्भर-
स्मरवशाकूतस्फीतस्मितस्नपिताधराम् ।
सरसमनसं दृष्ट्वा राधां मुहुर्नवपल्लव-
प्रसवशयने विन्यस्ताक्षीमुवाच हरिः प्रियाम्॥ १॥

जिस समय कामक्रीड़ा स्थान से सब सखियाँ बाहर चलीगईं तब कुछ लज्जा युक्त कामदेव के बाणों के वश में मनोरथ हो जाने से बढ़े हुए कुछ हँसीवाली अनुराग भावयुक्त नवीन पत्तों से और पुष्पों से रची हुई शय्यापर निहारने वाली राधिका को देखकर श्रीकृष्णचन्द्रजी महराज बोले ॥ १ ॥

विभासरागे एकतालीताले अष्टपदी ॥ २३ ॥

किसलयशयनतले कुरु कामिनि
चरणनलिनविनिवेशम् ।
तव पदपल्लववैरिपराभवमिद-
मनुभवतु सुवेशम् ॥
क्षणमधुना नारायणमनुग-
तमनुसर भो राधिके ॥ ध्रु० ॥१॥

हे कामिनि राधे ! इन कमल के पत्तों को शय्यापर अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चरणारविन्दों को स्थापन करो यह नवीन कोमल पत्तों की शय्या तुम्हारे चरणरूपी पल्लवों के शत्रु हैं इस कारण यह पल्लव तिरस्कार को प्राप्त होवे । अभिप्राय यह कि जब तुम इस शय्या के पल्लवों के मस्तक पर निज चरण पल्लव स्थित करोगी तो यह शय्या के पल्लव आपही तिरस्कार को प्राप्त हो जावेंगे । हे प्रिये ! तेरे क्षण-मात्र के लिये अधीन जो मैं नारायण हूँ उसके तुम क्षणमात्र के लिये अनुकूल हो जावो ॥ १ ॥

करकमलेन करोमि चरणमहमागमितासि विदूरम् ।
क्षणमुपकुरु शयनोपरि मामिव नूपुरमनुगतिशूरम् ॥
क्षणम० ॥ २ ॥

हे सुन्दरी ! अनेक प्रकार की विनती से मैंने तुझे बुलाया है इस कारण मैं थोड़े समय के लिये तुम्हारे चरणों की सेवा करूँगा (दबाऊँगा) तुम मेरे सदृश किंकर की ओर कृपा दृष्टि करो और मुझे नूपुर के तुल्य शैय्या पर ग्रहण करो कारण कि मैं नूपुर (बिछिया) सदृश होकर तेरे पीछे गमन करता हूँ ॥ २ ॥

वदनसुधानिधिगलितममृतमिव रचय वचनमनुकूलम् ।
विरहमिवापनयामि पयोधररोधकमुरसिदुकूलम् ॥
क्षणम० ॥ ३ ॥

हे सुन्दरी ! अपने मुखचन्द्र से अमृत तुल्य वचनों को कह कर मेरे कानों को तृप्त करो और मैं भी विरह समान स्थित आपके स्तनों के ऊपर से वस्त्र को हटाऊँगा ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रियपरिरंभणरभसवलितमिव पुलकितमन्यदुरापम् ।
मदुरसि कुचकलशं विनिवेशय शोषय मनसिचतापम् ॥
क्षणम० ॥ ४ ॥

हे सुन्दरी राधे ! मेरे सङ्ग काम भोग में आसक्त होकर मेरी छाती पर यह स्थूल कड़े स्तनों को रखकर मेरे कामदेव के दुःख को शान्त करो कारण कि जल सहित घड़े को हृदय पर रखने से दुःख की शान्ति अवश्य होती है ॥ ४ ॥

अधरसुधारसमुपनय भामिनि जीवय मृतमिव दासम् ।
त्वयि विनिहितमनसं विरहानलदग्धवपुषमविलासम् ॥
क्षणम्० ॥ ५ ॥

हे भामिनि राधे ! अपने अधररूपी रस [अधरामृत] के पान से आप में लगा है मन, विरह की अग्नि से जला हुआ निश्चल [जड़] की भाँति मृतक समान मुझे देखकर जिलाओ कारण यह कि अमृत के देने से मृतक भी जीवित हो जाते हैं ॥ ५ ॥

शशिमुखिमुखरयमणिरशनागुणमनुगुणकंठनिनादम्
मम श्रुतियुगले पिकरुतविकले शमय चिरादवसादम्
क्षणम० ॥ ६ ॥

हे चन्द्रमुखी राधे ! बहुत समय के विरह से व्यथित और कोकिला के शब्द सुनकर अत्यन्त व्याकुल मेरे दोनों कानों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कंठ गीत की भाँति मणि जड़ित सुवर्ण की करधनी को शब्द करा, उस शब्द से मेरा दुःख दूर होवैगा ॥ ६ ॥

मामतिविफलरुषा विकलीकृतमवलोकितमधुनेदम् ।
मीलितलज्जितमिव नयनं तव विरम विसृज रतिखेदम् ॥
क्षणम० ॥ ७ ॥

हे राधे ! तेरा यह नेत्र निष्प्रयोजन क्रोध से व्याकुल मुझे देखने को लज्जित की भाँति मीचता है इस कारण तुम अपने क्रोध को छोड़कर रतिखेद को त्याग दो अभिप्राय क्रोध को त्याग करके मेरे सङ्ग रमण करो ॥ ७ ॥

श्रीजयदेवभणितमिदमनुपदनिगदितमधुरिपुमोदम् ।
जनयतु रसिकजनेषु मनोरम रतिरसभावविनोदम् ॥
क्षणमधुना नारायणमनुगत मनुसर भो राधिके०॥८॥

श्री जयदेवस्वामी का कहा यह गीत कि जिसमें पद पद पर श्रीकृष्णचन्द्र के आनन्द का वर्णन है सो यह गीत शृङ्गार के रसिकजनों को मनोरम हो रतिका रस और भाव (सात्विकादि) के विनोद को प्राप्त करे ॥ ८ ॥

॥ श्लोकः ॥

प्रत्यूहः पुलकांकुरेण निबिडाश्लेषे निमेषेण च
क्रीडाकूतविलोकितेऽधरसुधायाने कथाकेलिभिः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनन्दाधिगमेनमन्मथकलायुद्धोऽपि यस्मिन्नभूदुद्भूतः
स तयोर्बभूव सुरतारंभः प्रियं भावुकः ॥ १ ॥

अब राधाकृष्णजी के सुरत भोगक्रीड़ा का आरम्भ हुआ। जिस क्रीड़ा के प्रारम्भ में अत्यन्त गाढ़ालिंगन करने में रोमाञ्चों के खड़े होने से और क्रीड़ा के समय हाव भाव कटाक्ष युक्त देखने में, पलकों के चलने से और अधरामृत के पान करने में, कथाओं की क्रीड़ा से कामदेव की कला से युक्त रति संग्राम करने में जो आनन्द की प्राप्ति में विघ्न हुए थे वह सब जब समाप्ति को प्राप्त होने लगे तब अवर्णनीय आनन्द प्राप्त होने लगा ॥ १ ॥

दोर्भ्यां संयमितः पयोधरभरेणापीडितः पाणि-
जैराविद्धो दशनैः क्षताधरपुटः श्रोणीतटे नाहतः ॥
हस्तेनानमितःकचेऽधरमधुस्यंदेन संमोहितः ।
कांतःकामपि तृप्तिमाप तदहो कामस्य वामागतिः॥२॥

भुजारूपी लता से बँधे हुये और कुम्भ सदृश स्तनों के भारसे पीड़ित, नखोंसे खंडित और दाँतों से अधरोष्ठ क्षत और कटिपश्चात् भाग से ताड़ित और हाथों से केश पकड़ कर नमाकर अधरामृत से मोहित हुये श्रीकृष्णचन्द्र जो महाराज अवर्णनीय तृप्ति को प्राप्त हुए। अहो ! कामदेव की अत्यन्त उलटी गति है कि जिसमें अप्रिय वस्तु भी प्रिय लगती है ॥ २ ॥

मारांके रतिकेलि संकुलरणारम्भे तया सा हतप्रायः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कांतजयाय किंचिदुपरि प्रारंभि यत्संभ्रमात् ॥ निस्पंदा जघनस्थली शिथिलिता दोर्वल्लिरुत्कम्पिता वक्षोमीलितमक्षि पौरुषरसः स्त्रीणां कुतः सिध्यति ॥ ३ ॥

श्री वृषभानु नन्दिनी राधाने सुरत क्रीड़ा के अत्यन्त घोर संग्राम के समय श्रीकृष्णचन्द्रजी को जीतने के लिये उपरोक्त विपरीत रति की गति से साहस किया, परन्तु राधाजी की जंघा जड़ समान, भुजऊता शिथिल वक्षस्थल (छाती) कम्पित नेत्र बन्द होगये, इस कारण स्त्रियों का पुरुष रस कहाँ से हो सकता है अर्थात् नहीं हो सकता ॥ ३ ॥

तस्याः पाटलपाणिजांकितमुरो निद्राकषाये दृशौ निर्धूताऽधरशोणिमा विलुलितस्रस्तस्रजा मूर्द्धजः । कांचीदामदरश्लथां चलमिति प्रातर्निखातैर्दृशोरोभिः कामशरै स्तदद्भुतमहो पत्युर्मनः कीलितम् ॥ ४ ॥

उस राधा महारानी को श्वेत छाती और रक्त नखों से चिह्नित, निद्रा से रक्त हुये दोनों नेत्र, छिपी हुई लालिमा से युक्त अधरोष्ठ, शिथिल हुई केशों की माला, रतिरङ्ग के आनन्द से गिरी भई करधनी और वस्त्र इस भाँति राधा के नेत्रों में लोग कामदेव के बाणों से श्रीकृष्णचन्द्र जी का मन विंध गया यह अद्भुत आश्चर्य हुआ वह क्या ? नखक्षत १ जागरण २ चुम्बन ३ केशों का खींचना ४ वस्त्राग्रन्थिविमोचन ५ यह कामदेव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के पाँचों बाँण हैं सो तो राधाजी के लगे और मन विधा श्रीकृष्णजी का यही आश्चर्य है ॥ ४ ॥

त्वामप्राप्य मयि स्वयंवरपरां क्षीरोदतीरोदरे
शंके सुन्दरि कालकूटमपिवन्मूढो मृडानीपतिः ।
इत्यर्थं पूर्वकथाभिरन्यमनसो विक्षिप्य वासांचलं
राधायाः स्तनकोरकोपरि जलन्नेत्रो हरिः पातु वः ॥ ५ ॥

श्रीकृष्णने श्रीराधाजी को सम्बोधन करके कहाकि हे सुन्दरि ! जिस समय तू समुद्र से उठकर मेरेको स्वयम्बर में प्राप्त हुई थी और मृडानीपति महादेवजी को नहीं मिली तो क्रोध करके शङ्कर ने हलाहल विष पान कर लिया यह कृष्णकथित वाक्य को सुनकर श्रीवृषभानु नन्दिनी राधाजी कुछ अन्यमना (दूसरी ओर मन करना) होगई तो कृष्णचन्द्रजी ने झट राधा की छाती के कपड़ों को हटाकर कुचयुगलों पर दृष्टिपात किया ऐसे भावयुक्त श्रीकृष्ण चन्द्रजी सकल जीवों को मंगलप्रद होवें ॥ ५ ॥

व्यालोलः केशपाशस्तरलितमलकैः स्वेदलोलौ कपोलौ
क्लिष्टा दष्टाधरश्रीः कुचकलशरुचा हारिता हारयष्टिः ॥
कांचीकांचिद्गताशां स्तन जघनपदं पाणिनाच्छाद्यसद्यः
पश्यंती चात्मरूपं तदपि विलुलितं स्रग्धरेयंधुनोति ॥ ६ ॥

कामक्रीड़ा में आनन्द सुख भोग रही राधाजी के केशपाश (जूड़) शिथिल होनेसे (अलकोंके लटकजाने से) ललाट का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिन्दूर तिलक भी छिप गया है उनके गालों से परिश्रम का जल (पसीना) अनिवारित बहा आ रहा है और दन्ताघात से उनका अधरोष्ठ राग भी क्षीणता को प्राप्त हुआ, स्तनों का हार और नितम्ब भागकी मेखला (करधनी) भी शिथित हो गई है और फूलों का आभरण (गहनादि) भी विदलित हो गया है यह कामकौतूहल के होने से यह दशा देख रानीजी ने लज्जित होकर अपने दोनों हाथों से स्तनों और जघन को ढाँक लिया ऐसी राधाकी व्यवस्थाको देखकर श्रीकृष्णचन्द्रने अपने मनमें यह कहा कि राधा जी मुझे काम भोग की ओर खींच रही हैं ॥ ६ ॥

ईषन्मीलितदृष्टिमुग्धहसितं सीत्कारधारावशाद-
व्यक्ताकुलकेलिकाकुविकसद्दंतांशुधौताधरम् ॥
श्वासोत्कंपिपयोधरोपरिपरिष्वंगात्कुरंगीदृशा
हर्षोत्कर्षविमुक्तनिःसहतनोर्धन्याधयत्याननम् ॥ ७ ॥

कामदेव के प्रबल वेगसे रति रसरंग के समय श्वासके तीव्र वायु से काँपते हुए स्तनों के ऊपर स्पर्श (आलिंगन) से हुई जो अत्यानन्द की अधिकता उससे आलस्ययुक्त और कार्य करने में असमर्थ है शरीर जिसका ऐसी मृगनयनी स्त्रीके मुखार-विन्द का जो चुम्बन करता है वह मनुष्य भाग्य वान है ॥ ७ ॥

॥ आर्या ॥

इति सहसा सुप्रीतं सुरतांते मानितातिखिन्नांगी ।
राधा जगाद सादरमिदमदमानंदेन गोविन्दम् ॥८॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीवृषभानुनन्दिनी राधाजी श्रीकृष्णजी से सम्मानित और रतिक्रीड़ा से अत्यन्त थकी हुई सुरत के अन्त में गोविन्द भगवान् के प्रति सादर आनन्दयुक्त बोलीं ॥ ८ ॥

अथ सा निर्गताबाधा राधा स्वाधीनभर्तृका ।
निजगाद रतिक्लान्तं कांतं मंडनवांछया ॥ ९ ॥

रतिरसरंग की क्रीड़ा के अन्त में कामदेवकी व्यथा जिसकी दूर हो गई है ऐसी राधा निज वशमें किये श्रीकृष्णचन्द्रके प्रति अपना शृँगार कराने की इच्छा से बोलीं ॥ ९ ॥

रामकलीरागे रूपकताले अष्टपदी ॥ २४ ॥

कुरु यदुनन्दन चंदनशिशिरतरेण करेण पयोधरे ।
मृगमदपत्रकमत्र मनोभव मंगलकलशसहोदरे ॥
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडता हृदयनन्दने ।
ध्रु० ॥ १ ॥

जिस समय हृदय के आनन्ददाता श्रीकृष्णचन्द्रजी क्रीड़ा कर रहे थे उसी समय श्रीराधाजी ने कहा कि हे यदुनन्दन प्यारे ! चन्दनसमशीतल हाथ से कामदेव के मंगलस्वरूप कलशो के तुल्य स्तनो पर कस्तूरी के पत्रादिक चित्र विचित्र वेल बूटा लिखिये ॥ १ ॥

अलिकुलगंजनसंजनकं रतिनायक सायकमोचने ।
त्वदधरचुम्बनलंबितकज्जलमुज्वलय प्रियलोचने ॥
निजगाद सा यदुनंदने० ॥ २ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे प्यारे ! श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज ! कामदेव के बाणों को छोड़नेवाले मेरे नेत्र जो भ्रमरों को तिरस्कार करते हैं उनमें लगा कज्जल आपके अधरोष्ठ पान करने से धोगया है इस कारण उस कज्जल को दुबारा लगाइये ॥ २ ॥

नयनकुरंगतरंगविलासनिरोधकरे श्रुतिमंडले ।
मनसिजपाशविलासधरे शुभवेशनिवेशय कुण्डले ॥
निजगाद सा यदुनंदने० ॥ ३ ॥

हे सुन्दर वेषधारी ! श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज ! मृगरूप नेत्रों के तरङ्गों के विलास को रोकनेवाले कामदेव के पाश तुल्य यह जो मेरे कर्ण हैं उनमें कुण्डलों का निवेश करो अभिप्राय यह कि मेरे कानों में कुण्डल पहिनाओ ॥ ३ ॥

भ्रमरचयं रचयन्तमुपरि रुचिरं सुचिरं मम सम्मुखे ।
जितकमले विमले परिकर्मय नर्मजनकमलकं मुखे ॥
निजगाद सा यदुनन्दने० ॥ ४ ॥

हे प्यारे ! श्रीकृष्णचन्द्रजी ! कमलसमूह को जीतने वाले निर्मल [स्वच्छ] मेरे सुन्दर मुखपर बहुत कालतक शोभा वाली और ऊपर भ्रमरों के समूह को गिरानेवाले भ्रमरगण निज जाति का बोध करके स्वय आकर उपस्थित हैं कामकेलि को उत्पन्न करनेवाली अलकावलियों को सुधारो अभिप्राय यह कि भ्रमरों के सदृश मेरे काले केशों को गूँथ [बाँध] दो ॥ ४ ॥

मृगमदरसवलितं ललितं कुरु तिलकमलिकरजनीकरे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विहितकलंककलंकमलाननविश्रमितश्रमसीकरे ॥
निजगाद सा यदुनंदने० ॥ ५ ॥

हे कमल सदृश मुखवाले श्रीकृष्णचन्द्रजी ! आप शुष्क (सूखे) हो गये हैं इस कारण मेरे ही पसीने से मेरे ही चन्द्र रूप मस्तक पर कस्तूरी से कलंक रेखा सदृश "जैसे चन्द्रमा में कलंक रेखा होती है उसी भाँति मेरे मुख चन्द्र पर" कस्तूरी का तिलक लगाओ ॥ ५ ॥

मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानद मनसिजध्वजचामरे ।
रतिगलिते ललिते कुसुमानि शिखंडिशिखंडकडामरे ॥
निजगाद सा यदुनंदने० ॥ ६ ॥

हे मानद ! मान के दाता या मान के खण्डन करनेवाले श्रीकृष्णचन्द्रजी मेरे शोभायमान कामदेव की ध्वजा और चँवर तुल्य रतिक्रीड़ा से जिसका बन्ध छूट गया है और मनोहर मयूर पुच्छ के समान वेषधारी कृष्ण ! मेरे केशों में पुष्पों को करो अभिप्राय यहकि मेरे बाल में फूलों को गूँथो ॥ ६ ॥

सरसघने जघने मम शंवरदारणवारणकंदरे ।
मणिरशनावसनाभरणानि शुभाशय वासय सुन्दरे ॥
निजगाद सा यदुनंदने० ॥ ७ ॥

हे शुभाशय ! उदारचित्त श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज ! आप मेरे सघन (भारी) और शंबरासुर को विदारण करनेवाले हाथी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के समान जो कामदेव के वास करने की कन्दरा (गुहा) के तुल्य सुन्दर जघन के ऊपर मणि जटित रसना (करधनी) और अनमोल वस्त्र व आभूषणों को पहिनाइये ॥ ७ ॥

श्रीजयदेववचसि शुभदे हृदयं सदयं कुरु मंडने ।
हरिचरणस्मरणामृतनिर्मितकलिकलुषज्वरखण्डने ॥
निजगाद सा यदुनंदने० ॥ ८ ॥

हे प्यारे भक्तजनो ! श्रीकृष्णचन्द्रजी के ध्यान रूपी अमृत से कलियुग के किये हुए पाप पहाड़ विनाशक और भूषण स्वरूप कल्याणप्रद श्रीजयदेव कविराज रचित गीत स्वरूप वाक्य में अपने हृदय को दया युक्त करो अर्थात् दया सहित इस गीत को पढ़ो ॥ ८ ॥

इति श्रीगीतगोविन्दे चतुर्विंशतितमः प्रबन्धः ॥ २४ ॥

॥ श्लोकः ॥

रचय कुचयोः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोलयोर्घटय जघने कांचीमुग्धस्रजा कबरीभरम् ॥ कलय वलयश्रेणीं पाणौ पदे कुरु नूपुराविति निगदितः प्रीतः पीतांबरोऽपि तथाऽकरोत् ॥ १ ॥

जब राधा ने उपरोक्त वाक्य यानी कुचों पर चित्र बनाने को, कपोलों [गाल] पर पत्रावली बनाने को, जंघाओं पर क्षुद्र घण्टिका [करधनी] पहिनाने को, कबरी को पुष्प माला से पूजन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने को, केशों में पुष्पों के गूँथने को, हाथों में कंकण को, चरणों में नूपुरों [बिछुओं] को धारण कराने के यह वाक्य कहे तो श्रीकृष्णचन्द्रजी ने भी राधा के ही कथनानुसार अपने हाथों से राधिका जी का यथोचित शृङ्गार किया ॥ १ ॥

पर्यंकीकृतनागनायकफणाश्रेणी मणीनां गणे
संक्रांतप्रतिबिम्बसंकलनया बिभ्रद्वपुर्विक्रियाम् ॥
पादांभोरुहधारिवारिधिसुतामदृणां दिदृक्षुः शतैः
कायव्यूहमिवाचरन्नुपचिताकृतो हरिः पातु वः ॥ २ ॥

शेषजी की क्रिया है शय्यास्थान कल्पना जिन्हों ने जिनकी हजारों फणों के मणियों के समूह से सुशोभित चरणकमल को धारण किये लक्ष्मीजी को देखने वाले अपनी इच्छा से अनेक शरीरों के धारण करने वाले श्रीकृष्णचन्द्रजी तथा शेषशायी भगवान् भक्तजनों ! आप लोगों की रक्षा करें ॥ २ ॥

यद्गांधर्वकलासु कौशलमनुध्यानं च यद्वैष्णवं
यच्छृंगारविवेकतत्त्वरचनाकाव्येषुलीलायितम् ॥
तत्सर्वं जयदेवपण्डितकवेः कृष्णैकतानात्मनः
सानन्दाः परिशोधयंतु सुधियः श्रीगीतगोविन्दतः ।३।

श्रीकृष्ण भगवान् में एकरस की वृत्ति जिनको ऐसे श्रीजयदेव कवि का जो गान विद्या में कुशलता है और जो विष्णु का ध्यान है और जो शृङ्गार रसका विवेक अर्थज्ञान रचना सहित काव्यों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लीला से शृङ्गार रस का विचार है यह सभी चीज पण्डितजन आनन्द पूर्वक इस श्री गीतगोविन्द नामक ग्रन्थ में भली भाँति संशोधन करके विचार करें ॥ ३ ॥

साध्वी माध्वीकचिंता न भवति भवतः शर्करे कर्कराशिद्राक्षे द्रक्ष्यंति के त्वामसृत मृतमसि क्षीर नीरं रसस्ते ॥ माकन्द क्रंद कांताधर धरणितलं गच्छ यच्छन्ति भावं यावच्छृंगार सारस्वतमिह जयदेवस्य विष्वग्वचांसि ॥ ४ ॥

श्री कविवर जयदेव महाकवि की यह हरिगुण गायन रूप गीतगोविन्द नामक पुस्तक जबतक जगत् में रहेगी तब तक मधुर शहद अमधुर, शक्कर मिश्री कंकर, दाख छुहारा रसहीन, अमृत मरण, सुधा मृतप्राय, क्षीर [दूध] स्वादहीन जलवत्, माकन्द [आम्र] तू भी अपनी मधुरता को रोदन कर, हे कान्ताधर ! स्त्रियों के अधरामृत अधरोष्ठ तू भी पाताल को चला जा अभिप्राय यह कि उक्त उत्तम समस्त पदार्थ अपने अपने अभिमान को त्याग देवैं इस गीतगोविन्द उक्त कवि का बनाया शृङ्गारादि रस पूर्ण जयदेव कवि के वचनों के सामने मधु आदि पदार्थों की मधुरता कुछ भी वस्तु नहीं है ॥ ४ ॥

श्रीभोजदेवप्रभवस्य राधादेवीसुतश्रीजयदेवकस्य ।
पराशरादिप्रियवर्गकण्ठे श्रीगीतगोविन्दकवित्वमस्तु ५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री भोजदेव से उत्पन्न राधादेवी के पुत्र श्री जयदेवजी की जो गीतगोविन्द नामक पुस्तक की कविता है वह प्रिय बन्धुवर्ग पराशरादि महात्मा जनों के कंठदेश में सदैव स्थित रहे ॥ ५ ॥

इति श्रीकविराज जयदेवकवि रचित गीतगोविन्दे महाकाव्ये उन्नावप्रदेशांतर्गतबरौड़ा ग्रामनिवासी पण्डित आनन्द-माधव दीक्षितात्मज पण्डित महाराज दीनदीक्षित कृत भाषाव्याख्यायां सुप्रीत पीताम्बरो नाम द्वादशः सर्गः समाप्तः ॥ १२ ॥

❀ श्री कृष्णार्पणमस्तु ❀

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

❀ श्रीः ❀

❀ श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ❀

श्री १०८ ... पुस्तकालय, ... भवन, ...

अथ राधाविनोदकाव्यम्

॥ श्लोकः ॥

माली नो घनमाली मालीनो वनमाली ।
मालीनो बलमाली मालीनोऽवतु माली ॥ १ ॥

जिन श्रीकृष्णचन्द्र के हृदयरूप दर्पण में मा [लक्ष्मी] लीन (लगी) हैं तथापि लोकपरम्परा की रीति से अथवा कामदेव के उत्पन्न करने से काम की उत्पत्ति के द्वारा लक्ष्मी में लीन है, और जो मा [माया] में निरञ्जन निराकार होने से आसक्त नहीं है, और जो मा [लक्ष्मी] में आसक्त नहीं है तो भी जिनमें मा (लक्ष्मी) स्वयं आसक्त हैं, अति शोभायमान यदुवंशादि गोपों के स्वामी व सुशोभित इन्द्रादि देवताओं के स्वामी हैं अथवा मा (शिव) में आलीन [भेदशून्य] हैं अथवा मा [ब्रह्मा] रूपी भ्रमर के स्वामी हैं, जिनके अंग मेघ तुल्य हैं, जिनके बलभद्रजी सहायक हैं, और जिन्होंने लम्बी जंघा पर्यन्त उत्तम बन माला को धारण किया है, ऐसे बनमाली [श्री कृष्णचन्द्रजी] हमारी और श्रोतागणों व वक्ताओं की रक्षा करें [अन्त के 'माली इस शब्द के पदच्छेद करने से मा आली ऐसे दो पद होते हैं,] सो अली (सर्वान्तर्यामी) श्री कृष्णजी मेरी रक्षा करें,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[शेषपदों का अर्थ पूर्ववत् जानना] इस श्लोक में कवि वे भगवान् के दश अवतार वर्णन किये हैं यथा वन [जल] में शोभा को प्राप्त शंखासुर के मारने वाले बल से युक्त वाराहरूपी भगवान् हमारी रक्षा करैं, ॥ १ ॥ वा समस्त पृथ्वी के भार को अपने फणों पर धारण करने वाले वन (जल) में शोभायमान कूर्म रूपी भगवान् हमारी रक्षा करैं, ॥ २ ॥ वा वन में सुशोभित और समुद्र में डूबी हुई सम्पूर्ण पृथ्वी के उद्धार करने वाले और उस बल से युक्त वाराह रूपी भगवान् हमारी रक्षा करैं, ॥ ३ ॥ वा हिरण्य कशिपु के नष्ट करने में जो बल उस बल से युक्त शोभा है जिनकी ऐसे नृसिंह रूपी भगवान् हमारी रक्षा करैं ॥ ४ ॥ अथवा अ (रुद्र) के समान जिनकी घन [अत्यन्त] बड़ी शोभा है वो अनघ (अत्यन्त लघु) जिनकी शोभा है और बलि को छलन रूप बल से शोभित वामनरूपी भगवान् हमारी रक्षा करैं, ॥ ५ ॥ वा स्वर्ग के मार्ग को रोककर तीर्थाटन करने के लिये बन में भ्रमण करने वाले और सम्पूर्ण क्षत्रियों के नाशकारी बल से सुशोभित परशुराम रूप भगवान् हमारी रक्षा करैं, ॥ ६ ॥ वा दण्डकारण्य में है शोभा जिनकी ऐसे रावण के नाश करने वाले बल से सुशोभित दाशरथी रामचन्द्रजी मेरी रक्षा करैं, ॥ ७ ॥ वा बलराम इस राम सहित पद से है शोभा जिनकी अर्थात् बलभद्र जिनका नाम है और श्रीहनुमान्जी के खींचने में जो बल उससे है शोभा जिनकी ऐसे बलदेवजी भगवान् हमारी रक्षा करैं, ॥ ८ ॥ वा जो घनमाली शरद ऋतु के मेघ समान गौर वर्ण वाले और जो अवन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(रक्षा करने) से शोभा युक्त अहिंसा कारक बल से सुशोभित ऐसे बुद्धरूपी भगवान हमारी रक्षा करैं ॥ ९ ॥ अथवा म्लेच्छों के नाश करने वाले बल से युक्त कल्किरूपी भगवान् हमारी रक्षा करैं, ॥ १० ॥ अन्य समस्त पदों का अर्थ दशों अवतारों में समान है अथवा इस श्लोक के वर्णन से कवि ने मोहनमन्त्र का उद्धार किया है । सामान्य स्वरूप मा (शक्ति) के विषय में आलीन (मिला) है क्योंकि ईश्वर के बिना जिसका उच्चारण नहीं हो सकता इस भाँति समस्त व्यञ्जनों में प्रथम जो ककार वह है रूप जिसका और घन से है मा (शोभा) जिनकी ऐसा जो धनुष (इन्द्र) उसके बीच (ल) को जो प्राप्त हुआ है अर्थात् लकाररूप और भी (लक्ष्मी) का बीज जो (ई) उसमें अर्थात् विन्दु से युक्त ऐसा कामदेव का मोहन मन्त्र रूप (क्लीम्) हमारी रक्षा करैं यहाँ सारदा तिलक में भी कहा है कि जो ईकार और विन्दु से युक्त ककार और लकार है तीनों जगत् का मोहनकारी बीज मंत्र है ॥ १ ॥

विधुमुहद्विरहानलपीडिता
विधुमुहत्तरलाऽनिल पीडिता ॥
विधुमुहद्वदनानिलपीड़िता
विधुमुहत्सुागरोऽकिरदीडिता ॥ २ ॥

श्रीकृष्ण प्यारे के विरहरूपी अग्नि से पीड़ित और कामदेव से चञ्चल या क्रूर की भाँति जिसके हार की मध्य मणि है अर्थात् कामाग्नि से पीड़ित हरिके मोती भी तेज हीन हो रहे हैं और जो मलयागिरि के पवन से पीड़ित है और जिसका मुख चन्द्रमा के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुल्य है व जिसका मुख कपूर के समान सफेद है और श्रीकृष्ण चन्द्रजी से है पीड़ा जिसको वा स्तुति भी की है जिसकी चन्द्रवदनी (श्रीकृष्णचन्द्र जी की प्यारी) श्री वृषभानुदुलारी श्रीराधाजी अपनी सखीसे पूजा प्रशंसा के योग्य इन सुन्दर बचनों को कहने लगीं॥२॥

उदयते दयते दयते शशी
सखि करैरकरैस्तिमिराकरैः ॥
दिशमिमां चरमां च रमारमं
कमलकोमल लोलविलोचनम् ॥ ३ ॥

हे सखि ! यह चन्द्रमा उदय होकर इस आगेवाली दिशा पर दया करके अपनी स्वच्छ किरणों द्वारा व्याप्त हो रहा है और अन्धकार का नाश करने वाली दुःखदायी अपनी उष्ण गरम किरणों से मुझे पीड़ित करता है। इस कारण हे सखि ! रमारमण (लक्ष्मी के स्वामी) और कमल की भाँति कोमल और चञ्चल हैं हैं नेत्र जिनके ऐसे कमल नयन श्रीकृष्ण चन्द्रजी के निकट तू चल अथवा अङ्क (चिह्न) रूप से युक्त है मस्तक जिसका ऐसा यह चन्द्रमा उदय होता है इससे तू रमा रमण श्रीलक्ष्मा के सङ्ग क्रीड़ा करनेवाले श्रीकृष्ण के प्रति चल अथवा यह चन्द्रमा उदय होकर मुझे अन्तिम (मरण) दशा को प्राप्त कर रहा है, इस हेतु तू रमारमण (लक्ष्मीरमण) श्रीकृष्ण के प्रति चल अथवा (सुख) में मल (मलरूप) यह दुःखदायी चन्द्रमा उदय होता है इस प्रयोजन से अमल (निर्मल] और चंचल नेत्रवाले श्रीकृष्णजी महाराज के निकट चल ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुमुदबन्धुरबन्धुरबन्धुरः स
तनुतेऽतनुते तनुते ततः ॥
हिमकरोऽहिमतां हिमतां मतां किमनु
मां सदृशं सदृशं विधोः ॥ ४ ॥

हे सखि ! कुमुद (कोकावेलि) का प्यारा बन्धु और शीतल व बड़ाई युक्त पूज्यता (पूजने योग्य) और विस्तार को प्राप्त हुआ वह चन्द्रमा पूजन के योग्य और ज्ञानयुक्त मेरे लिये स्वीकृत उष्णताकी जो विस्तारता है यह क्या उस चन्द्रमा को उचित है ? अर्थात् विरहीजनों को दुःख देना क्या चन्द्रमा के कुल में परम्परा से ही चला आया है ? अथवा शीतल है हाथ जिनका ऐसे दुष्टों के नाश करनेवाले (श्रीकृष्णचन्द्र) मेरे लिये चन्द्रमा के समान उष्णता करते हैं यह क्या उन श्रीकृष्ण को उचित है ? अनुचित है ४

कमलिनीमलिनी मलिनालिनाऽविचलता
च लता सुलता शुभाम् ॥
विधुतभां विधुतां विधुभानु
भिर्नयनयोरनयोर्नयसीनयोः ॥ ५ ॥

हे आलि (सखि) मलीन (श्याम) लताओं में घूमते हुये भ्रमर की त्यागी हुई लताओं में श्रेष्ठ और चन्द्रमा की किरणों से नष्ट हो गई है कांति जिनकी ऐसी कमलिनी को इन मेरे बड़े २ नेत्रों के आगे से तू दूर क्यों नहीं करती । अथवा मलिन (काले) श्री कृष्णचन्द्रजी की त्यागी हुई और गोपियों में श्रेष्ठ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चन्द्रमा की किरणों से दुःखित मुझे हे सखि ! क्या तू नहीं देखती ? इस कारण श्रीकृष्णचन्द्रजी के लिवाने के लिये तू शीघ्र ही गमन कर ॥ ५ ॥

सखि विभाति विभाऽतिविभाऽविभा
न सरसी सरसीसरसारसैः ।
अलिकुलैर्विधुता विधुतधुता
विनमदब्जमुखी विमुखी स्थिता ॥ ६ ॥

हे सखि ! नष्ट है कान्ति जिसकी और पक्षिगणों की शोभा से रहित और श्रीकृष्ण के तुल्य काँनि को और विलास सहित शब्द करने वाले सारस भ्रमर गणों का समूह और चन्द्रमा इनकी त्यागी हुई और नीचे को मुख हो गये हैं जिसको ऐसी पराङ्मुख टिकी हुई यह सरसी (छोटा सा सरोवर) शोभायमान नहीं दिखाती अभिप्राय यह कि ऐसी सरसी को देखकर अत्यन्त दुःख होता है इस कारण अब तू शीघ्र जाकर श्रीकृष्ण को लिवाला ॥६॥

कुमुदिनीदयितो दयितोनतां
निजकरैरकरैर्दहतिस्फुटम् ।
यदयमेकपदे विपदेऽभवद्वि-
कचपुष्करिणीहरिणीदृशः ॥ ७ ॥

हे सखि ! जिससे यह प्रकाशित चन्द्रमा कमलिनी रूप कान्ता की विपत्ति के लिये क्षण में उदय को प्राप्त हुआ इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारण कुमुदिनी का दयित (प्यारा) है और अपनी दुःख दायिनी किरणों से पति से रहित स्त्री को दग्ध करता है ॥ ७ ॥

विधुरिता धुरिता धुरिता दहन्
विधुरयं जनितो जनितोऽङ्कभृत् ।
इह तदाचिगतेाचिगतेऽब्जिनी
रवि मतिर्विमतिर्निमिमिल सा ॥ ८ ॥

मुख्यता को प्राप्त हुई उन प्रसिद्ध विरहिणी को दग्ध करता हुआ यह चन्द्रमा जन्म से ही कलंकी उत्पन्न हुआ है इसीसे क्षीणता को प्राप्त हुये इस चन्द्रमा को देखते ही अत्यन्त शुद्धिमति और सूर्य में ही बुद्धि रखने वाली ऐसी वह कमलिनी मुकुलित भई, यह तो योग्य ही है कि कलङ्कों को देख कर नेत्रों को मोच (बन्द) कर लेने के उपरान्त सूर्य का दर्शन ही प्रायश्चित है ॥ ८ ॥

मलयपन्नग पन्नग मंडलीकवलितो
वलितोनुवनानिलः ।
अदयमंगमदंगमदंगकं
दहति यद्भ्रमयद्भ्रमयन्नयम् ॥ ९ ॥

हे सखि ! जिसके अङ्ग के मथने वाला और भ्रम को उत्पन्न करने वाला यह वन का पवन भ्रम सहित मेरे इस छोटे से अङ्ग को निर्दय होकर दग्ध करता है इस कारण यह निश्चय ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतीत होता है कि चला हुआ यह बनका वायु मलयागिरि पर्वत के समीप अन्य पर्वतों में वास करते हुए सर्पों ने पी लिया अर्थात् उनका विष इस पवन में मिल रहा है इसीसे मेरे शरीर में दाह और भ्रम है अन्यथा न होता ॥ ९ ॥

अयि रसालवनी नवनीरनीर-
नवनी नवनीपवनावती ।
अलिकुलालिकुलाऽलिकुलाकुला
प्रति हिमामहिमामहिमा हिमा० ॥ १० ॥

अयि कोमलालापे सखि ! जो नवीन है और जिसमें नये कदम्ब वृक्ष हैं और मेरे पीड़न में तत्पर और भ्रमरों के स्थान जो मेघ उनके निवासी कोकिलों का समूह जिसमें बसता है और भ्रमरों के समूह से युक्त है और जो सर्प के समान भयानक दुःखदायी है और शीतल ऐसा भी यह रसाल (आम्र) का बन श्रीकृष्णचन्द्र के विरह से उष्ण (तपता) हुआ मेरे लिये अग्नि के समान सन्ताप को देने वाला है अभिप्राय यह कि वियोग में शीतल वस्तु भी दुःख देती है ॥ १० ॥

वकुलसाकुलमालिपरागितं
मधुपरागपराग परालिभिः ।
विशदशारदशारदशारदं
शशकलंङ्क कलङ्ककलङ्कितम् ॥ ११ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे आलि! खिला हुआ और मधुके कणकों को पीते और प्रीति से गानेवाले जो भ्रमर उससे व्याकुल दुःख और सुख से रहित है दशा जिनकी ऐसे विरहिजनों को दुखदायी और दश प्रकार कामदेव की अवस्थाओं से स्त्रियों के सुखको जो भोग रहे हैं उनके सन्ताप का नाशक अर्थात् वियोगियों को दुखदायी और दुखियों के ताप का नाशक और चन्द्रमा के समान है कान्ति जिसकी और वायु से कम्पायमान होता वह बकुल (मौलसरी) का वृक्ष दीखता है अभिप्राय इसके देखने से श्रीकृष्णचन्द्र जी के वियोग में मुझे दुःख होता है ॥ ११ ॥

नवमशोकमशोकदं
सुरभितारभितालिरतारतम् ।
सखि समाश्रय माश्रयमाश्रयः
कमलिनीमालिनीप इवाऽऽगतः ॥१२॥

हे शोक के नाश करनेवाली सखि! तू नवीन और शोक के नाशक और सुगन्ध से पुष्पों में रमते हुए भ्रमरों को रति के सुख का दाता और शोभा से युक्त जो अशोक का वृक्ष है उसका आश्रय ले अर्थात् वहाँ चल ऐसा करने स तू यह समझ कि वह लक्ष्मी का पति [श्रीकृष्णचन्द्र] इस प्रकार आये कि जैसे भ्रमरों का पति [भ्रमर] कमलिनो के समीप चला जाता है अभिप्राय यह कि लक्ष्मी को भोग करके श्रीकृष्ण चन्द्रजी तेरे ही पास आजायँगे ॥ १२ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सखि हिताऽमतासि मतात्थ मां
नवमशोकमशोकमशोकदाम् ।
तदिह मामव मामव माम मां
व्रज हरिं नवनीरदनीरदम् ॥ १३ ॥

हे सखि ! जिस हेतु से श्रीकृष्णचन्द्र को शोक का दायक मेरे प्रति, नवीन और श्रीकृष्णचन्द्र को, शोकदायी अशोक का वर्णन किया [नाम लिया] इससे प्रथम तू हित [प्यारी] भी थी तो भी अब मैंने असि [खड्गतलवार] के समान मनोरथ वाली मानी [जानो] जिससे लक्ष्मी और ब्रह्मासे सेवित और कामी तथा नवीन मेघकी जो निरन्तर शोभा उसको प्राप्त घनश्याम श्रीकृष्णचन्द्रजी के समीप जा और श्रीकृष्णचन्द्र से है शोभा जिसको ऐसी मेरी रक्षाकर । अभिप्राय यह कि श्रीकृष्णचन्द्र जी के वियोग से दुर्बल श्रीकृष्णजी को मेरे निकट लाकर रक्षाकर और अशोक का नाम ले ॥ १३ ॥

इति सखीगदिताऽगदिताऽदिता
नव नराय वराय वराय वा ।
इति गिरं कलया कलया कला
पटुगिरा मृदुताऽमृदुता दुता ॥ १४ ॥

श्रीवृषभानुनन्दिनी राधाजी द्वारा जब वह सखी बाधित की गई तो वह कला नामकी सखी अपनी चतुराई से कि जिसमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीकृष्णचन्द्र को यह न मालूम हो कि राधाने सिखाकर भेजा है और श्रीकृष्ण का आगमन भी हो जाय इस चतुरता बद्ध वह सखी पुराण पुरुष श्रीकृष्णचन्द्रजी के पास जाकर सुखका दाता और गंभीर तथा नम्रता और कठोरता से दुःख के दाता ऐसे अर्थ से गर्भित बचन कहने लगी ॥ १४ ॥

मलयजं तनुतेऽतनुते तनौ
सहचरी नलिनी नलिनीदलम् ।
सुनयनाऽनलदं नलदं च सा तदपि
सीदति सीदति बन्धुता ॥ १५ ॥

हे श्रीकृष्णचन्द्रजो महाराज ! आपकी यह सहचरी राधा अपने शरीर में यद्यपि बहुतसा मलयागिरि चन्दन लगाती है, और कमलिनी के समान वह आपकी प्यारी राधा बहुत से कमल के पत्ते शरीर पर रखती है और सुन्दर नयन (नेत्र) वाली वह आपकी प्यारी तापके नाशक उशीर (खश) का देहपर लगाती है, इतने पर भी वह आपकी प्राण प्यारी श्री राधाजी और उनका समस्त सखि मंडल आपके बिना दुःखी है, अभिप्राय यह कि उपाय करने पर भी उसके दुःख की शान्ति नहीं है, इस कारण आपको चलना उचित है ॥ १५ ॥

समुदितेऽमुदिते क्षणे हिमकर
मकरे नकरे श्रुती ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिकरवेऽबरवेवर वेति सा।
हरिणलांछनलांछनलांछना ॥ १६ ॥

हे लक्ष्मी के स्वामी श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज! यह आपकी सहचरी (सखी) श्रीराधाजी समुद्र को सुख देने वाले चन्द्रमा के उदय होने से उदासीन होकर नेत्रों को बन्द कर लेती है और जिस समय कोकिल गण का शब्द होता है तब अव रक्षा करो २ और शिव शब्द के स्थान में वे "शि" इस आधेही शब्द का उच्चारण करके शिव २ मन्त्र यो जपती हैं, अभिप्राय यह कि राधाजो को आपका वियोग असह्य है, इससे आप चलो और अपनी प्राण प्यारी की रक्षा करो ॥ १६ ॥

न सहते सहते सहते सखी
तव वियोग वियोग मयोगहृत् ।
सपदि तां तरुणीं सरणिं मणिं
किरतु नाम नवं नवनीविजम् ॥१७॥

हे शान्तस्वरूप! हे गरुड़वाहन! हे कठोरचित्त श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज! वह आपकी सखो (राधा) आपके वियोग को नहीं सहती, नहीं सहती (सखो ने दो बार नहीं सहती, शब्द कहा यह अत्यन्य दुःख का सूचक हुआ) इस कारण आपके मन से बसी हुई उस तरुणी (युवावस्था युक्त या जवान) गोपी को आप शीघ्रही त्याग दो और राधा के कुञ्ज मार्ग में शीघ्रही चलकर राधाजी के वस्त्र में स्थित जो नवीन मणि उसका क्षेपण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(फेंकना) करो अभिप्राय यह कि मनमें स्थित गोपी का त्याग और राधा के कुञ्ज में चल कर राधाजी के वस्त्र में बँधी हुई नवीन मणि को फेंक राधाजी के संग क्रीड़ा करो ॥ १७ ॥

अथ तया कलया कलया शुभां
बनजदामजदाम जदीप्तिमान् ।
हरिरगात्तमगात्तमगाच्च सा
मुदमतीव मतीचदृशोः स्थितम् ॥१८॥

इसके बाद अनेक कमलोंके मालासमूह की भाँति है कान्ति जिनकी ऐसे वह श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज प्रसन्न चित्त होकर कला सखो के संग राधाजी के समीप गये । वह वृषभानु नन्दिनी राधा भी श्रीकृष्ण के पास गई । वायु, मधु, कामदेव इनका है वर्णन जिसमें और राधाजी के हृदय के शोक का नाशक यह काव्य [राधा विनोद नामक] रचकर समाप्त किया ॥ १८ ॥

इति श्री उन्नावदेशान्तर्गते बरौढ़ाग्रामनिवासी पं० आनन्दमाधव दीक्षितात्मज पं० महाराज दीन दीक्षित कृत भाषा व्याख्यायां रामचन्द्रकविचित राधाविनोद काव्यं समाप्तम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

❀ श्रीः ❀

अथ श्रीराधाकृष्णसम्बाद ।

भाषाटीकायुतः ।

का सुन्दरी वल्लभवल्लभासु
त्वच्चित्तभित्तौ वद शालभञ्जी ।
त्वं मालतीमण्डितकेशपाशे
मच्चित्तभित्तौ किल शालभञ्जी ॥ १ ॥

किसी समय राधाने श्रीकृष्ण से पूछा कि हे श्रीकृष्णजी ! आप यह तो बतलाइये कि आपकी चित्त रूपी भीत पर चित्र की भाँति कौन सी गोप सुन्दरी लिखी है ? श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया कि हे राधे ! चमेली के पुष्पों से अपने केशों को सुशोभित करने वाले तुम ही मेरे चित्त रूपी पट पर पुतली के समान लिख हुई हो ॥ १ ॥

पुरातनस्यापि च निर्जरत्वे
को नाम हेतुर्वद सत्यमेव ।
लावण्यधन्ये वृषभानुकन्ये
तवाऽधरोत्थाऽमृतपानमेव ॥ २ ॥

राधा—हे कृष्ण ! आप पुरातन होकर युवाही बने हो वृद्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्यों नहीं हुये ? उत्तर कृष्णका—हे सुन्दरी ! हे वृषभानुदुलारी तुम्हारे अधरामृत के पान करने से मैं वृद्ध नहीं हुआ ॥ २ ॥

पयोधरे विद्युदुद्भ्रम्मुरारे पयोधरो
विद्युति नैव दृष्टः ।
राधे स्थिता मां त्वयि विद्युतीह
पयोधरे द्वन्द्वमिदं व्यलोकि ॥ ३ ॥

राधा हे मुरारे ! मेघ में तो बिजली आपने देखा ही होगा परन्तु बिजली में मेघ नहीं देखा । उत्तर कृष्णका—हे राधे ! तुम बिजली रूप खड़ी हो, उसमें मेघ कुचरूपी मेघों का जोड़ मैंने देखा कि नहीं ॥ ३ ॥

दातुं शरीरं परपूरुषाय
नैवोत्सहेऽहं नरकाब्दिभेमि ।
दत्ते शरीरे नरकस्य हंत्रेका
नाम भीतिर्नरकाद्भवत्यः ॥ ४ ॥

राधा—मैं नरक से भयानक परपुरुष को अपना शरीर देते डरती हूँ ! उत्तर कृष्ण का—हे प्रिये ! यदि तुम अपने शरीर को नरक के नाश करने वाले को ही दे दो तब नरक से क्या भय है ? अर्थात् कुछ भी नहीं ॥ ४ ॥

त्वं वल्लवीजारमहर्निशं या
सीमन्तिनी गायति किं फलं सा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्नोति राधे व्यभिचारदोषान्सु-
च्येत्तथाऽसौ भवनागपाशात् ॥ ५ ॥

राधा—हे कृष्ण! आप गोपियों के जार हो, इस भाँति आपको जो स्त्री गाती है उसको क्या फल मिलता है? उत्तर कृष्ण का—हे राधे! वह स्त्री व्यभिचार के दोषसे और संसार रूपी नाग फाँस से छूट जाती है ॥ ५ ॥

निशाऽवसाने तव विप्रयोगात्
प्राणा मदीया विकलीभवन्ति ।
राधे वद प्राणपतेर्वियोगे
प्राणाः कथं नो विकलीभवेयुः ॥६॥

राधा हे कृष्ण! रात्रि के अन्त में तुम्हारे वियोग के कारण मेरे प्राण विकल हो जाते हैं। उत्तर कृष्णका। हे राधे यह तो ठीक ही है प्राणपति के वियोग से प्राण क्यों न विकल हो जायँ? ॥६॥

निर्मासि चित्ते व्रजसुन्दरीणां
कामं विभो लोचन गोचरस्त्वम् ।
किमत्र चित्रं तव भाति चित्ते
कामस्य राधे जनकोहमस्मि ॥ ७ ॥

राधा—हे हरे! आपके दर्शनसे व्रजांगनाओं के चित्त में काम क्यों उत्पन्न होता है? उत्तर कृष्ण का—हे राधे! तुमको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसमें क्या आश्चर्य मालूम होता है ? कारण कि मैं तो कामदेव का (प्रद्युम्न का) पिता ही हूँ ॥ ७ ॥

जना जगत्यां जगदीश शश्वत्
त्वां राधिकाजारमुदाहरन्ति ।
निन्दन्तु लोका यदि वा स्तुवन्तु
प्राणेश्वरि त्वां न परित्यजामि ॥ ८ ॥

राधे—हे जगदीश ! संसार में लोग आपको राधिका के जार (यार) कहते हैं । उत्तर कृष्ण का—हे प्रिये ! संसार में लोग मेरी निन्दा या स्तुति भलेही करें परन्तु मैं तुझे प्राणेश्वरी को कभी न छोड़ूँगा ॥ ८ ॥

कलानिधि गोकुलराजमानं
श्यामाप्रय त्वां विधुमेव मन्ये ।
त्वदुक्तरीत्या विधुशब्दवाच्ये
राधाधवं मां न कथं ब्रवीषि ॥ ९ ॥

राधा—हे कृष्ण ! मैं आपको कला के निधि गोकुल अर्थात् किरणों के समूहसे शोभायमान श्यामा (रात्रि) के प्रिय ऐसे चन्द्रमा ही मानती हूँ ! उत्तर कृष्ण का—हे राधे ! अपनी कही हुई रीति से विधु शब्द के वाची राधापति क्यों नहीं कहती हो । कारण कि हम ६४ कला के निधि हैं गोकुल में विराजमान होकर श्यामा जो आप हो तिनके प्रिय हैं ॥ ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भक्तिर्मया सा कतमा विधेया
यथा प्रसादो भवतो मुरारे ।
मम प्रसादाय विधेर्हि राधे
भक्तिं परामात्मनि वेछनाख्याम् ॥१०॥

राधा-हे मुरारे ! मुझे कौनसी भक्ति करनी चाहिये कि जिससे आपको प्रसन्नता होवै । उत्तर कृष्णका हे राधे ! मेरे प्रसन्न करने के लिये अपने तन, मन, धन सबको मेरे अर्पण कर दो, यही बड़ी भक्ति है, इसी को करो ॥ १० ॥

विधिं समुल्लंघ्य परांगनासु
प्रसंगमंगीकुरुषे कथं नु ।
विधेर्विधातुर्विधिलंघने मे का नाम
भीतिर्भणे भामिनीह ॥ ११ ॥

राधा-हे कृष्ण ! आप अपनी मर्यादा का उल्लंघन करके पर स्त्री का संग क्यों करना अंगीकार करते हो ! उत्तर कृष्ण का-हे भामिनि मैं ! विधाता का भी विधाता हूँ तो फिर विधि के उल्लंघन में मुझे क्या भय है ॥ ११ ॥

उदीर्यमाणोऽपि च सान्त्ववादे
मानापनोदो न हिराधिकायाः ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानोऽस्तु ते यद्य पराधकःस्यां
स्वप्नेऽपिनैवाऽस्म्यपराधिकोहम्॥१२॥

राधा—हे कृष्ण ! आपने अत्यन्त मीठी २ बात तो कहीं परन्तु इससे मुझे राधिका का मान दूर नहीं हुआ । उत्तर कृष्ण का—हे राधिके ! जो मैं अपराधी होऊँ तो तुम्हारा मान भले ही होय अर्थात् मैं तो तुम्हारा अपराधी स्वप्न में भी नहीं हूँ ॥१२॥

मुक्तिं समीयुर्भवबन्ध (भीतिं) भावनो
भवत्पदाम्भोजरजो जुषन्तः ।
बद्धस्त्वयाहं भुजबल्लरीभ्यां
राधानिकुंजे मधुमाधवीनाम् ॥ १३ ॥

राधा—हे कृष्ण ! आपके चरण कमल की रेणुका सेवन करने वाले पुरुष संसार बन्धन से छूट जाते हैं । उत्तर कृष्णका—हे राधे ! तो भी तूने अपनी भुजलताओं माधवीलताओं के कुञ्जों में बाँध लिया है ॥ १३ ॥

आभीरनार्याः करमादधानो
न शंकसे माधव किं ब्रवीषि ।
पल्लीपतिर्वल्लवबल्लभायाः
करग्रहे किं विदधीत शंकाम् ॥१४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राधा-हे माधव ! गोपी की स्त्री का हाथ पकड़े हुये आप क्यों नहीं शंका करते हो ? उत्तर कृष्णका-हे राधे ! आभीर जातिका पति गोप की स्त्री के हाथ पकड़ने में क्यों शंका करेगा ? कदापि शंका न करेगा ॥ १४ ॥

इति श्री उन्नावप्रदेशांतर्गत-बरौड़ा ग्रामनिवासी पण्डित महाराज दीन दीक्षित कृत भाषाव्याख्यायां श्रीराधा-कृष्ण सम्वादे नामकं काव्यं संपूर्णतामगात् ।

❀ श्री कृष्णार्पणमस्तु ❀

* इति *

श्री विश्वेश्वर प्रेस, काशी में मुद्रित ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri